DELHI
SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

कक्षा 7

उत्कर्ष

एक कदम सफलता की ओर

सामाजिक विज्ञान

समग्र शिक्षा
सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

DELHI
SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

समग्र शिक्षा
सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

उत्कर्ष

एक कदम सफलता की ओर

कक्षा सात के लिए

सामाजिक विज्ञान गतिविधियों की पुस्तक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
वरुण मार्ग, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024

आई. एस.बी.एन. : 978-93-93667-09-0
© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली
दिसम्बर 2021
37,200 (प्रतियाँ)

प्रकाशित : राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली
मुद्रित : M/s स्टार फॉर्म्स, 8710, राहत गंज , रोशनारा रोड, दिल्ली -110007

MANISH SISODIA
मनीष सिसोदिया

सत्यमेव जयते

DEPUTY CHIEF MINISTER
GOVT. OF NCT OF DELHI
उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
DELHI SECTT, I.P. ESTATE,
दिल्ली सचिवालय, आई.पी.एस्टेट,
NEW DELHI-110002
नई दिल्ली-110002
Email : msisodia.delhi@gov.in

D.O. No. DYCM/2021/291
Date : 21-12-2021

संदेश

दिल्ली सरकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करने के विभिन्न प्रयासों में सदैव तत्पर रही है। हमने समतामूलक और समावेशी शिक्षा को सुनिश्चित करने हेतु अनेक कार्यक्रम क्रियान्वित किए हैं। कोरोना महामारी ने पिछले दो वर्षों से स्कूली शिक्षा को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। विद्यालय बंद होने से विद्यार्थी घरों तक सीमित होकर रह गए हैं। इस दौरान शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाए रखने हेतु ऑनलाइन शिक्षा का प्रयोग किया गया किन्तु ऑनलाइन शिक्षा अपने तमाम गुणों के बावजूद सभी बच्चों तक अपनी पहुँच को लेकर प्रश्नांकित होती रही है। प्रायः शिक्षकों ने विद्यार्थियों से ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से जुड़ने और उनकी प्रगति का आकलन करने का प्रयास किया। वंचित समूहों, प्रवासी मजदूरों के बच्चों, प्रथम पीढ़ी के छात्रों और विविध परिस्थितियों में ऑनलाइन शिक्षण से न जुड़ पाने वाले विद्यार्थियों को विद्यालयी शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने की आवश्यकता एक चुनौती के रूप में मौजूद ही रही। इन्हीं पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, सभी बच्चों को वांछित सीखने के परिणामों की ओर उन्मुख करने और उनकी अधिगम में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु 'उत्कर्ष' पुस्तक श्रृंखला का निर्माण किया गया है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली और समग्र शिक्षा के संयुक्त प्रयास से ऐसी गतिविधियों का निर्माण किया गया है जो शिक्षा के इस अंतराल की पूर्ति करने में सहायक सिद्ध होंगी। प्रायोगिक अधिगम पर आधारित ये गतिविधियाँ जहाँ विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने और संख्याओं के साथ बुनियादी संक्रियाओं को करने में कारगर होंगी, वहीं उनके शारीरिक-भौतिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास हेतु प्रभावी माध्यम के रूप सहायक होंगी।

हिंदी, अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, उर्दू, पंजाबी और गणित में कक्षा 6 से 8 (मिडिल स्तर) पर बनाई गई गतिविधियों की ये पुस्तकें खेल-आधारित, बहुआयामी और खोज आधारित शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप प्रदान करती हैं। बेहतर अधिगम परिणामों हेतु सामाजिक विज्ञान, गणित और विज्ञान की पुस्तकों को हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में बनाया गया है। विद्यार्थी खेलों और गतिविधियों के द्वारा मानवीय संवेदनाओं, समूह में कार्य करना, आपसी सहयोग, शिष्टाचार और श्रेष्ठ नागरिक के गुणों को भी स्वयं में आत्मसात कर पाएँगे। आशा है कि इन पुस्तकों के माध्यम से एक नवीन शैक्षिक क्रांति का सूत्रपात होगा। विद्यार्थियों की अवधारणात्मक समझ के साथ-साथ उनमें रचनात्मकता और तार्किक चिंतन की प्रवृत्तियों का विकास होगा। अनुभव-आधारित शिक्षण पर आधारित ये पुस्तकें स्थानीय संदर्भों की विविधता, बहुभाषिकता और स्थानीय परिवेश के लिए सम्मान को समाहित किए हुए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि समतामूलक और समावेशी शिक्षा हेतु ये पुस्तकें विद्यार्थियों को सुदृढ़ आधार प्रदान करेंगी और शिक्षा जगत में मील का एक पत्थर सिद्ध होंगी।

(मनीष सिसोदिया)

H. RAJESH PRASAD
IAS

सत्यमेव जयते

प्रधान सचिव (शिक्षा/प्रशिक्षण व तकनीकी शिक्षा/ उच्च शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Pr. Secretary (Education/TTE/ HE)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

संदेश

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कोरोना काल के लगभग दो साल के विकट दौर के बाद हम पुनः सामान्य जीवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। कोरोना महामारी पर नियंत्रण पाने में हमने अभूतपूर्व सफलता अर्जित की है। शिक्षा के क्षेत्र में भी पिछले दो वर्षों से ऑनलाइन शिक्षण, कार्यपत्रकों व ऑनलाइन गतिविधियों का सफल प्रयोग किया गया किंतु शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के प्रत्यक्ष न हो पाने से और विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष संपर्क व संवाद के अभाव में, कुछ पारिवारिक एवं आर्थिक कारणों की वजह से, सीखने की इस श्रृंखला में हमारे कई विद्यार्थी हमसे छूट गए हैं और उनके अधिगम के स्तर पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

इस अधिगम अंतराल की चुनौती को हल करने हेतु अधिगम संवर्धन कार्यक्रम के अंतर्गत 'उत्कर्ष' पुस्तक श्रृंखला निर्मित की गई है। इन पुस्तकों में अनेक गतिविधि-पत्रक हैं जो कक्षा विशेष के अनुरूप अधिगम प्रतिफलों के आधार पर विकसित किए गए हैं । विद्यार्थियों की संस्कृति, बहुभाषिकता और उनके परिवेश को ध्यान में रखते हुए सीखने के सामाजिक संदर्भों के इर्द-गिर्द गतिविधियाँ रची गई हैं। विद्यार्थियों के भावनात्मक और बौद्धिक स्तर के अनुसार इन गतिविधियों का निर्माण किया गया है ताकि विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सके।

आशा है कि विद्यार्थी इन गतिविधियों के माध्यम से ज्ञान सृजन की प्रक्रिया में सक्रिय सहभागी बनेंगे और उनका सर्वांगीण विकास होगा ।

इसी शुभकामना के साथ...

(एच. राजेश प्रसाद)

HIMANSHU GUPTA, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail : diredu@nic.in

संदेश

"वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या जिस पथ पर बिखरे शूल न हो
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या यदि धाराएँ प्रतिकूल न हो"

-- जयशंकर प्रसाद

जीवन की विकट परिस्थितियों में ही हमारे व्यक्तित्व और चरित्र का सही आकलन हो पाता है। कोरोना महामारी के संकट ने संपूर्ण विश्व को झकझोर दिया। हमारे देश ने इस संकट से निपटने हेतु अनेक प्रयास किए हैं। इन प्रयासों से अनेक आशातीत सफलताएँ भी अर्जित हुई। किन्तु सामान्य जीवनधारा पर इसका प्रतिकूल प्रभाव अभी भी स्पष्ट देखा जा सकता है। इन प्रतिकूलताओं से उबरने के लिए हम सभी प्रतिबद्ध हैं और निष्ठापूर्वक इस दिशा में प्रयासरत हैं। विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र पर इसका सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। वर्तमान परिदृश्य में यह अत्यंत आवश्यक है कि सीखने के प्रतिफलों की वर्तमान स्थिति और वांछनीय अधिगम प्रतिफलों के बीच की खाई को पाटा जाए। सभी विद्यार्थियों को समान रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के महत्वपूर्ण लक्ष्य को केंद्र में रखकर 'उत्कर्ष' पुस्तक श्रृंखला को तैयार किया गया है। कक्षा 6 से 8 (मिडिल स्तर) के विद्यार्थियों के लिए ऐसी रोचक गतिविधियों का निर्माण किया गया है जो उन्हें जिज्ञासा, खोज, अनुभव और संवाद के विभिन्न अवसर उपलब्ध कराते हुए जीवन के सभी पक्षों हेतु सुदृढ़ आधारभूमि प्रदान करेंगी। बदलती परिस्थितियों में यह अत्यंत आवश्यक है कि विद्यार्थी 21वीं सदी के कौशलों में दक्ष हो, साथ ही उनमें नैतिकता , तार्किकता, तदानुभूति और संवेदनशीलता का भाव विकसित हो जिससे वे भावी समय में उत्कृष्ट जीवन की ओर अग्रसर हों। हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, उर्दू और पंजाबी विषयों/भाषाओं पर लिखी गई पुस्तकें जहाँ विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमताओं का विकास करेंगी, वहीं उनके दैनिक परिवेश से परस्पर सहज जुड़ाव और समन्वय स्थापित करेंगी। ये गतिविधि-पत्रक बहुविषयक और समग्र शिक्षा के लक्ष्य को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं, जिनमें सीखने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किए गए हैं। स्वअनुदेशात्मक आधार पर निर्मित गतिविधियाँ, रंग-बिरंगे चित्र, गीत, कविताएँ, पहेलियाँ, कहानियाँ, कार्टून, पोस्टर, खेल, कठपुतलियाँ आदि बरबस ही विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित कर उन्हें स्वमूल्यांकन हेतु प्रेरित करेंगी और प्रभावशाली अधिगम का मार्ग प्रशस्त करेंगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि विद्यार्थियों की सामान्य तथा विशेष अधिगम कठिनाइयों के निदान तथा वांछित सीखने के प्रतिफलों की संप्राप्ति में ये पुस्तकें प्रभावकारी माध्यम सिद्ध होंगी। साथ ही समावेशी, समतामूलक और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में प्रत्यक्ष रूप से योगदान देंगी।

शुभकामनाओं सहित...

(हिमांशु गुप्ता)

Rajanish Singh
Director

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024
Tel. : +91-11-24331356, Fax: +91-11-24332426
E-mail: dir12scert@gmail.com

Date : 20/12/2021

D.O. No. : 10(4)/Misc/SCERT/DPE/2021-22/212

संदेश

प्यारे बच्चों, कोरोना की वैश्विक महामारी के चलते विगत पौने दो वर्षों का समय अत्यंत चुनौतीपूर्ण रहा। लंबे कोरोना काल ने वैश्विक स्तर पर मानव जीवन के ज्यादातर क्षेत्रों को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। इस सर्वग्रासी विभीषिका ने मनुष्य के स्वास्थ्य, आजीविका, अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन को छिन्न-भिन्न कर दिया। कोरोना से सबसे बुरी तरह से प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में शिक्षा बेहद महत्वपूर्ण है। हमारे देश में कोरोना की पहली लहर के दौरान विद्यालयी शिक्षा लगभग बाधित रही । दूसरी लहर के दौरान भी स्थिति चिंताजनक बनी रही। विद्यालयों को बंद रखने के अतिरिक्त कोई और विकल्प न होने से विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया लंबे समय तक स्थगित रही। दिल्ली सरकार और विभिन्न संस्थाओं ने अपने-अपने स्तर पर ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था कर इस अपूर्णीय क्षति को कुछ कम करने के अनेक प्रयास अवश्य किए। यह भी विदित है कि विद्यालय की कक्षा में चलने वाली एक प्रत्यक्ष शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों को पाठ्यवस्तु के साथ सक्रिय रूप से अंतःक्रिया करने के जितने अवसर उपलब्ध होते हैं, वह ऑनलाइन शिक्षण में संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन शिक्षण की पहुँच समाज के प्रत्येक तबके तक सुनिश्चित कर पाना भी एक बड़ी समस्या रही है।

इन सभी चुनौतियों को मद्देनजर रखते हुए यह महसूस किया गया कि हमारे कुछ विद्यार्थियों में कोरोना काल के दौरान एक विशेष प्रकार का अधिगम अंतराल उत्पन्न हो गया है। प्यारे बच्चों, 'उत्कर्ष' पुस्तक श्रृंखला इस अधिगम अंतराल को कम करने की दिशा में एक पहल है। यह पुस्तक गतिविधि-पत्रकों का एक संकलन है जो आपको स्वयं सीखने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करती है। इन गतिविधि-पत्रकों का उपयोग आप बिना किसी शिक्षक की सहायता के स्वयं भी कर सकते हैं। खेल-खेल में सीखने की प्रक्रिया से गुजरते हुए यह पत्रक आपको निर्धारित कक्षा के अपेक्षित अधिगम प्रतिफलों की संप्राप्ति में सहायता करेंगे। मनुष्य अपने रोजमर्रा के जीवन में अपने परिवार, पास-पड़ोस, समुदाय, प्रकृति व परिवेश से कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। मनुष्य के सीखने की इसी नैसर्गिक विशेषता को ध्यान में रखते हुए इन गतिविधि-पत्रकों को आपके ही कुछ अनुभवी शिक्षकों ने तैयार किया है। मुझे आशा है कि राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली का यह प्रयास मिडिल स्तर के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में सार्थक सिद्ध होगा । इन गतिविधियों में आप अपने सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश की झलक तो पाएँगे ही, अपेक्षा यह भी है कि इसके माध्यम से आप आधुनिक समाज के लिए जरूरी कौशलों को भी सीख पाएँ और एक सुखी व स्वस्थ जीवन की ओर अग्रसर हों ।

शुभकामनाओं सहित...

(रजनीश सिंह)

State Council of Educational Research and Training

(An autonomous organisation of GNCT of Delhi)

Tel. : +91-11-24336818, 24331355, Fax 91-11-24332426

Tel. : +91-11- 24331355, Fax 91-11-24332426

Email : jdscertdelhi@gmail.com

SCERT

Dr. Nahar Singh

Joint Director

Date: 28/12/2021

D. O. No. 11(21)/206/Misc./SCERT/2021-22/213

संदेश

प्रिय विद्यार्थियों,

" पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो कितना ही हो सिर पर भार,

नभ कहता है फैलो इतना ढक लो तुम सारा संसार"

—सोहनलाल द्विवेदी

कोरोना काल हमारे लिए अनेक चुनौतियाँ लेकर आया है, किंतु इन्हीं चुनौतियों ने हमारे जीवन को नवीन दिशा प्रदान की तथा धैर्य, अदम्य साहस और स्वावलंबन को अपनाने की प्रेरणा दी। पिछले कुछ समय से तालाबंदी के दौरान विद्यालयी शिक्षा सुचारु रूप से नहीं हो पाई, जिससे बच्चों के सीखने की प्रक्रिया बाधित हुई। इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि घरों में ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे बच्चे क्या अपनी निर्धारित कक्षा व विकासात्मक स्तर के अनुरूप ज्ञान, कौशल और दक्षता का अर्जन कर पा रहे हैं? विभिन्न अध्ययनों और शिक्षकों से बातचीत के दौरान यह बात उभर कर सामने आई कि ऑनलाइन शिक्षण कुछ मूलभूत शैक्षिक कौशलों के विकास में पूर्णतः सक्षम नहीं है। अतः विद्यार्थियों में वांछित अधिगम की संप्राप्ति में कुछ स्पष्ट अंतराल रह गए। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह अत्यंत प्रासंगिक है कि सीखने के इस अंतराल को कम करने की दिशा में सार्थक प्रयास किए जाएँ। अधिगम के स्तर पर इसी अंतराल को कम करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली और समग्र शिक्षा के संयुक्त प्रयास से आपके लिए विशेष पाठ्य सामग्री का निर्माण किया गया है, जिसे 'उत्कर्ष' नामक पुस्तक में संकलित कर आपके समक्ष प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तक आप में निरीक्षण, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मक चिंतन, प्रश्न पूछना, समस्या समाधान, प्रभावी संप्रेषण, निर्णय लेना, तदानुभूति और तत्कालीन मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता का भाव विकसित करेगी।

आपके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ...

(डॉ. नाहर सिंह)

पुस्तक विकास समिति

संरक्षक

श्री एच राजेश प्रसाद, प्रधान सचिव (शिक्षा), दिल्ली

सलाहकार

श्री रजनीश सिंह, निदेशक, एस सी ई आर टी, दिल्ली

शैक्षणिक सलाहकार

डॉ. नाहर सिंह, सयुंक्त निदेशक, एस सी ई आर टी, दिल्ली

लेखक:

श्री संजय कुमार पाठक (20171795)	प्रवक्ता इतिहास, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय गांधीनगर, दिल्ली
सुश्री मधुमिता (20132675)	टी॰जी॰टी॰ सामाजिक-विज्ञान, राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय शाहबादडेरी, दिल्ली
श्री दीपचंद (20131486)	सर्वोदय विद्यालय (सहशिक्षा) दक्षिणपुरी विस्तार अम्बेडकरनगर-5, दिल्ली
श्री अमरदीप डबास (20171388)	टी॰जी॰टी॰ सामाजिक- विज्ञान, राजकीय सह शिक्षा सर्वोदय विद्यालय सेक्टर्-21 रोहिणी , दिल्ली
श्री जनमेजय शर्मा (20040857)	प्रवक्ता इतिहास, राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, न० 2, B ब्लॉक, यमुना विहार, दिल्ली
सुश्री गुरविंदरकौर (20162887)	टी॰जी॰टी॰ सामाजिक-विज्ञान, राजकीय माध्यमिक कन्या विद्यालय, चौहान बाँगर, जाफ़राबाद,दिल्ली
सुश्री सुनीता	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट मोतीबाग, एससीईआरटी, दिल्ली
डॉ नीलम	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट मोतीबाग ,एससीईआरटी, दिल्ली
श्री संजीत कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट मोतीबाग, एससीईआरटी, दिल्ली
श्री जोगिन्दर कुमार (20101552)	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट मोतीबाग, एससीईआरटी, दिल्ली

विषय विशेषज्ञ एवं जाँच दल

सुश्री वाणी मलिक	उप-प्रधानाचार्या , दयानन्द पब्लिक स्कूल, मॉडलटाउन, दिल्ली
डॉ. धर्मेंदर डागर	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट घुम्मनहेड़ा,दिल्ली
श्री धीरज कुमार रॉय	असिस्टेंट प्रोफेसर, डाइट दरियागंज ,दिल्ली

अन्य सहयोगकर्त्ता

सुश्री मौसम (20091503)	टीजीटी संस्कृत, सर्वोदय कन्या विद्यालय नंबर 1 सागरपुर, दिल्ली
सुश्री रमा चौधरी	प्रवक्ता हिंदी ,सर्वोदय कन्या विद्यालय खेड़ा खुर्द, दिल्ली

परियोजना के नोडल प्रभारी

डॉ. गौरव शर्मा, सहायक प्रोफेसर, एससीईआरटी, दिल्ली

डॉ. सोनू लाल गुप्ता, सहायक प्रोफेसर, एससीईआरटी, दिल्ली

विषय समन्वयक

श्री जोगिन्दर कुमार (20101552) असिस्टेंट प्रोफेसर,एससीईआरटी, दिल्ली

प्रकाशन अधिकारी

डॉ. मुकेश यादव, एससीईआरटी, दिल्ली

प्रकाशन दल

श्री नवीन कुमार, एससीईआरटी, दिल्ली	सुश्री नेहा रिज़वाना, बी आर पी , एससीईआरटी दिल्ली
सुश्री राधा, एससीईआरटी, दिल्ली	सुश्री फौज़िआ, बी आर पी, एससीईआरटी दिल्ली

विद्यार्थियों के लिए सन्देश

प्रिय विद्यार्थियों,

इस पुस्तक को नियमित कक्षा से अनुभव प्राप्त करने के बाद आपके अधिगम को और अधिक समृद्ध करने के लिए विकसित किया गया है । अध्यायों को कक्षा-वार सीखने के परिणामों (एनसीईआरटी, डेल्ही द्वारा विकसित) की सूची के साथ-साथ एससीईआरटी पाठ्यपुस्तक के अध्यायों के साथ संरेखित करने का प्रयास किया गया है । आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप इन गतिविधि पत्रकों में सुझाई गई गतिविधियों को करें और फिर प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करें । इस प्रक्रिया को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि यह आपको सक्रीय रूप से सीखने और उत्तर खोजने के लिए प्रेरित करेंगे । प्रश्नों के साथ दिए गए उदारहण और दृष्टांत आपको अवधारणा को समझने और गंभीर रूप से सोचने में मदद करेंगे|

आपको कुछ गतिविधि करने, समझने, खोजने, जांचने या अनुभव करने में सहायता की आवश्यकता हो सकती है । ऐसी स्थितियों में आपको अपने शिक्षकों, परिवारों के सदस्यों या एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक से मार्गदर्शन लेना चाहिए और उत्तर मांगने के बजाय, उनसे चर्चा करके स्वयं उत्तर ढूंढने का प्रयास करें|

आशा है कि विषयवस्तु आप सभी को स्वयं सीखने की आदत डालने में मदद करेगी।

शिक्षक/शिक्षिकाओं के लिए सन्देश

सम्मानित साथियों, सीखने के अनुभव प्रदान करने के लिए बनाई गई प्रत्येक पुस्तक में कुछ ना कुछ अनूठी विशेषता अवश्य होती है, जो इसके उपयोग को निर्धारित करती है। विद्यार्थी के लिए सीखने के प्रतिफलों (learning outcomes) की उपलब्धि सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, इस विषय वस्तु को शिक्षण संवर्धन सामग्री के रूप में विकसित किया गया है। इसके साथ-साथ यह पुस्तक गतिविधि आधारित है और यह 'आकलन के लिए, सीखने की प्रक्रिया के रूप में है। इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक अध्याय में गतिविधि पत्रक होते हैं जो कुछ गतिविधि से शुरु होते है और फिर प्रश्न आते हैं, जिसके माध्यम से शिक्षार्थी सामाजिक विज्ञान में अपनी शिक्षा को समृध करते हैं। प्रत्येक प्रश्न में चित्र, उदाहरण या संकेत दिए गए हैं ताकि शिक्षार्थी उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से उत्तर खोजने के लिए प्रेरित हों। शिक्षार्थी इस खोज के लिए अपने शिक्षकों, एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक, इंटरनेट या परिवार के सदस्यों की मदद ले सकते हैं। समीक्षात्मक चिंतन के अवसर को अधिकतम करने के लिए पुस्तक में जानबूझकर प्रश्नों के उत्तर प्रदान नहीं किए गए हैं।

इस विषय वस्तु की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है, शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन का सामाजिक विज्ञान के साथ एकीकरण। इस बात का अत्यधिक ध्यान रखा गया है कि पुस्तक का संदर्भ शिक्षार्थियों के वास्तविक जीवन के अनुभवों से संबंधित हो ताकि अवधारणात्मक समझ को लागू करना आसान हो जाए। इस उद्देश्य से, सामाजिक विज्ञान गतिविधियों को करने के लिए सामान्य रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया गया है। साथ ही, जिन दृष्टांतों का उपयोग किया गया है, वे शिक्षार्थियों के परिवेश से जुड़े हुए हैं। कुछ उपकरण जिन्हें आम तौर पर विषय विशिष्ट माना जाता है जैसे प्रयोग, तालिकाएँ, कथन, कहानियां इत्यादि, इनका उपयोग शिक्षा-सामग्री को रोचक और एकीकृत बनाने के लिए किया गया है।

प्रत्येक गतिविधि पत्रक केवल एक से दो सीखने के प्रतिफलों को उपलब्ध कराता है ताकि उनकी पूर्ति को आसानी से जांचा जा सके। मूल्यांकन की प्रक्रिया के सरलीकरण के प्रयास किए गए हैं। यह आशा की जाती है कि पुस्तक की ये अनूठी विशेषताएं सीखने की प्रक्रिया को आनंदमय और रोचक बना देंगी और यह सामाजिक विज्ञान के अनुप्रयोगों के प्रति शिक्षार्थियों में रुचि विकसित करने में भी सहायक होंगी।

विषय वस्तु में जिस भाषा का प्रयोग किया गया है वह सामान्य उपयोग की और प्रासंगिक है। इससे सामग्री को समझने और समझाने में आसानी होती है। सीखने की प्रक्रिया को रोचक बनाने के साथ-साथ यह पुस्तक 'मिशन बुनियाद' में परिकल्पित लक्ष्यों को पूरा करने में भी मदद करेगी।

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
इतिहास	**3-92**
मुगल साम्राज्य (अकबर की "सुलह-ए-कुल" की नीति)	3-4
दिल्ली के सुल्तान (दिल्ली के सुल्तानों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के स्रोत)	5-7
दिल्ली के सुल्तान (दिल्ली सल्तनत काल में गुलामों की दशा)	8-9
शासक और इमारतें (मंदिरों. मस्जिदों और हौजों का निर्माण)	10-12
मुगल साम्राज्य (मुगल और उनके उत्तराधिकार की परंपराएँ)	13-15
मुगल साम्राज्य (अकबर की प्रशासनिक नीतियाँ)	16-18
शासक और इमारतें (चारबाग योजना)	19-21
दिल्ली के सुल्तान (गैरिसन शहर)	22-23
मुगल साम्राज्य (मुगलों के अन्य शासकों के साथ संबंध)	24-25
नगर, व्यापारी और शिल्पीजन (मध्यकालीन भारत के नगर)	26-28
नगर, व्यापारी और शिल्पीजन (मंदिर-नगर और तीर्थस्थल)	29-31
नगर, व्यापारी और शिल्पीजन (छोटे नगर- छोटे और बड़े व्यापारी)	32-35
नगर, व्यापारी और शिल्पीजन (कस्बा-शिल्प)	36-38
नगर, व्यापारी और शिल्पीजन (सूरत)	39-42
नगर, व्यापारी और शिल्पीजन (मसूलीपट्टनम)	43-45
नगर, व्यापारी और शिल्पीजन (नए शहर और व्यापारी)	46-49
जनजातियाँ, खानाबदोश और एक जगह बसे हुए समुदाय (जनजाति)	50-52
जनजातियाँ, खानाबदोश और एक जगह बसे हुए समुदाय (घुमंतू समूह और नई जातियाँ)	53-55
जनजातियाँ, खानाबदोश और एक जगह बसे हुए समुदाय (आदिवासियों के बीच राज्य और सामाजिक परिवर्तन का उद्भव)	56-58
ईश्वर से अनुराग	59-70
क्षेत्रीय संस्कृतियों का निर्माण	71-80
अठाहरवीं शताब्दी में नए राजनीतिक गठन (नई राजनीतिक शक्तियों का उदय)	81-83
अठाहरवीं शताब्दी में नए राजनीतिक गठन	84-86
अठाहरवीं शताब्दी में नए राजनीतिक गठन (राजपूत)	87-89
अठाहरवीं शताब्दी में नए राजनीतिक गठन (सिक्ख, मराठा और जाट))	90-92
सामाजिक और राजनीतिक जीवन	**95-134**
समानता	95-101
सरकार के स्तर	102-103
प्रतिनिधित्व	104-106
राज्य विधान सभा	107-108
लिंग समानता	109-110
महिला सशक्तिकरण	111-118
संचार माध्यमों को समझना	119-121
विज्ञापनों को समझना	122-126
हमारे आस-पास के बाजार	127-131
बाज़ार में एक कमीज़	132-134
भूगोल	**137-208**
पर्यावरण	137-143
हमारी पृथ्वी के अंदर	144-149
हमारी बदलती पृथ्वी	150-156
वायु	157-165
जल	166-174
प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीवन	175-181
मनवीय पर्यावरण: बस्तियां, परिवहन एवं संचार	182-193
मनवीय पर्यावरण: अन्योन्यक्रिया, उष्णकटिबंधीय एवं उपोषण प्रदेश	194-200
रेगिस्तान में जीवन	201-208

इतिहास
सामाजिक विज्ञान

कार्यपत्रक संख्या:-01

विद्यार्थी का नाम _____

मुगल साम्राज्य

अकबर की 'सुलह - ए - कुल' की नीति

शिक्षण अधिगम

1. विद्यार्थी अकबर की धार्मिक नीति को समझ पाएँगे ।
2. विद्यार्थी हमारे देश की धार्मिक विविधता को जान पाएँगे ।

अकबर की 'सुलह - ए - कुल' की नीति

अकबर

इबादत खाना में धार्मिक चर्चा करते हुए अकबर

अकबर मुगल वंश का सबसे प्रतापी और धार्मिक सहिष्णु शासक था ।

अकबर ने अपने साम्राज्य में धार्मिक सहिष्णुता बहाल करने के लिए फतेहपुर सीकरी में इबादत खाने का निर्माण करवाया । अकबर ने उलेमा, ब्राह्मणों जेसुइट पादरियों (जो रोमन कैथोलिक थे) और जरदुस्त धर्म के अनुयायियों के साथ धर्म व रीति - रिवाज के मामलों पर इबादत खाने में चर्चा शुरू की ।

इस विचार विमर्श से अकबर को समझ आई कि जो विद्वान धार्मिक रीति और मतांधता पर बल देते हैं वे अक्सर कट्टर होते हैं । उनकी शिक्षाएं प्रजा के बीच विभाजन और असामंजस्य पैदा करती है ।

'सुलह-ए-कुल' अर्थात "सर्वत्र शांति की नीति विभिन्न धर्मों के अनुयायियों में अंतर नहीं करती थी ।

'सुलह-ए-कुल' की नीति में केवल सच्चाई , न्याय और शांति पर बल था तथा इसे सभी जगह लागू किया जा सकता था । अकबर के सुलह-ए-कुल की नीति/विचारधारा को अपनाने में दरबारी इतिहासकार अबुल फजल ने मदद की ।

प्रमुख शब्दावली

धार्मिक सहिष्णुता	:	विभिन्न धर्म के लोगों के प्रति सद्भाव/सहानुभूति
इबादतखाना	:	उपासना/आराधना स्थल, प्रार्थना भवन
मतांध	:	अनुदार, जो केवल अपने विचार को श्रेष्ठ मानता हो
कट्टर	:	अपने मत पर दृढ़ रहने वाला

प्रमुख प्रश्न

1. अकबर ने किन-किन लोगों के साथ धार्मिक चर्चा शुरू की ?

2. सुलह ए कुल का अर्थ बताइए ?

3. अकबर के दरबारी इतिहासकार कौन थे?

4. क्या आज के समय में हमारे देश में अलग-अलग धर्म के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए?

5. मुगल शासक के जीवन पर आधारित बनी हुई फिल्मो की सूची बनाएँ!

कार्यपत्रक संख्या:-02

विद्यार्थी का नाम _____

दिल्ली के सुल्तान

दिल्ली के सुलतानों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के स्रोत

शिक्षण अधिगम

1. विद्यार्थी दिल्ली के सुल्तानों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के स्रोतों को जान पाएँगे ।
2. विद्यार्थी दिल्ली के सुल्तानों के द्वारा प्रयोग में लाए गए इतिहास लेखन की प्रक्रिया को जान पाएँगे।

दिल्ली के सुल्तानों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के स्रोत

मोहम्मद बिन तुगलक और तत्कालीन सिक्के

दिल्ली के सुल्तानों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए अभिलेख, सिक्के तथा स्थापत्य कला (भवन निर्माण कला) एक प्रमुख स्रोत है ।

इसके अतिरिक्त 'इतिहास' (तारीख़ /तवारीख़) से दिल्ली के सुल्तानों के शासनकाल की प्रशासनिक, राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है ।

'इतिहास' (तारीख़/तवारीख) को दिल्ली के सुल्तानों के शासनकाल की प्रशासनिक भाषा/ राजकीय भाषा फारसी में लिखा गया था ।

'इतिहास'/'तवारीख़' के लेखक सचिव, प्रशासक, कवि तथा दरबारी होते थे। ये सभी व्यक्ति सुशिक्षित होते थे जो घटनाओं का वर्णन करते थे और सुल्तान को प्रशासन चलाने में सलाह देते थे। इतिहास/ तवारीख पांडुलिपि के रूप में तैयार किए जाते थे।

पांडुलिपि तैयार करने के चरण

1. कागज़ तैयार करना

2. लेखन कार्य

3. महत्वपूर्ण शब्दों और अनुच्छेदों की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए सोने को पिघलाकर उसका प्रयोग

4. जिल्द तैयार करना

प्रमुख शब्दावली

तवारीख़	:	तारीख़ का बहुवचन
सुलतान	:	राजा
अभिलेख	:	पत्थर/धातु जैसी कठोर सतहों पर उत्कीर्ण करी गई पाठन सामग्री
स्थापत्य	:	भवन निर्माण कला
पांडुलिपि	:	हाथ से लिखा गया दस्तावेज़
जिल्द	:	पुस्तक का ऊपरी आवरण

प्रमुख प्रश्न

1. दिल्ली के सुल्तानों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के स्रोत लिखें।

2. दिल्ली के सुल्तानों के शासनकाल की प्रशासनिक भाषा क्या थी?

3. इतिहास/तवारीख़ के लेखन में शामिल लोगों की सूची बनाएँ।

4. पांडुलिपि तैयार करने के चरण बताएँ।

5. अगर आप सुल्तान होते तो किस भाषा को प्रशासकीय भाषा बनाते?

कार्यपत्रक संख्या:-03

विद्यार्थी का नाम _____

दिल्ली के सुल्तान

दिल्ली सल्तनत काल में गुलामों की दशा

शिक्षण अधिगम

1. विद्यार्थी दिल्ली सल्तनत काल के प्रशासन में गुलामों की भूमिका को जान पाएँगे।
2. विद्यार्थी दिल्ली सल्तनत काल में गुलामों के द्वारा किए गए कार्य को समझ पाएँगे।

सल्तनत काल में गुलामों की दशा

दिल्ली सल्तनत काल में सुलतानों के द्वारा सैनिक सेवा के लिए व्यक्ति को खरीदा जाता था । इस व्यक्ति को गुलाम कहा जाता था ।

फारसी भाषा में गुलामों को बंदगाँ कहा जाता था ।

दिल्ली सल्तनत के सुल्तान गुलामों (बंदगाँ) को महत्वपूर्ण राजनीतिक पदों पर काम करने के लिए प्रशिक्षण देते थे तथा नियुक्त भी करते थे ।

चित्र :- 1

दिल्ली के सुल्तान गुलामों को बेटे से भी बढ़कर मानते थे तथा उन पर विश्वास भी करते थे । गुलाम भी अपने मालिकों और संरक्षकों के प्रति वफादार रहते थे ।

दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों द्वारा गुलामों को सेनापति और सूबेदार जैसे ऊँचे पद दिए जाने के कारण राजनीतिक अस्थिरता भी पैदा हो जाती थी।

प्रमुख शब्दावली

प्रशिक्षण : नियमित रूप से दी जाने वाली व्यावहारिक शिक्षा
संरक्षक : अभिभावक
सूबेदार : प्रांत/राज्य का प्रधान
अस्थिरता : अव्यवस्था अथवा अराजकता

प्रमुख प्रश्न

1. सैनिक सेवा के लिए सुलतानों द्वारा जिन व्यक्तियों को खरीदा जाता था उन्हें क्या कहा जाता था?

2. फारसी भाषा में गुलामों को क्या कहा जाता था ?

3. दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों द्वारा गुलामों को दिए जाने वाले पदों की सूची बनाएँ ।

4. क्या गुलाम आज भी होते हैं? अपने उत्तर के पक्ष में दो बिंदु लिखिए ।

5. उन राजाओं के नाम की सूची बनाएँ जो दिल्ली सल्तनत काल में गुलाम थे ।

कार्यपत्रक संख्या:-04

विद्यार्थी का नाम _____

शासक और इमारतें

मंदिरों , मस्जिदों और हौजों का निर्माण

शिक्षण अधिगम

1. विद्यार्थी विभिन्न शासकों द्वारा मंदिरों, मस्जिदों और हौजों का निर्माण कराने के कारणों को समझ पाएँगे।
2. विद्यार्थी जल के महत्त्व को जान पाएँगे।

मंदिरों , मस्जिदों और हौजों का निर्माण

मंदिरों और मस्जिदों का निर्माण बहुत ही सुंदर तरीके से किया जाता था । मंदिर मस्जिद केवल उपासना स्थल ही नहीं थे बल्कि जिन राजाओं / शासकों ने मंदिरों और मस्जिदों को संरक्षण प्रदान किया, यह उनकी शक्ति, धन - वैभव तथा भक्ति भाव का भी प्रदर्शन करते थे ।

चित्र :- राजराजेश्वर मंदिर

तंजावुर में स्थित राजराजेश्वर मंदिर का निर्माण राजा राजदेव ने करवाया । हम देखते हैं कि ईश्वर राजराजेश्वरम और राजा राजदेव के नाम काफी मिलते-जुलते हैं । इसका एक कारण यह था कि ईश्वर से मिलता जुलता नाम मंगलकारी माना जाता था और दूसरा जनता के बीच लोकप्रिय होने के लिए राजा स्वयं को ईश्वर के रूप में दिखाना चाहता था ।

चित्र : राजा का तालाब, दिल्ली

मुसलमान शासक भी अपने आप को 'अल्लाह की परछाई' के रूप में दिखाने का प्रयास करते थे । अच्छा शासक/राजा वही माना जाता था जो न्याय प्रिय हो । जिसके राज्य में खुशहाली हो और फसलों की सिंचाई के लिए उत्तम वर्षा अथवा जलाशय का निर्माण करवाया गया हो । इसलिए सुलतान इल्तुतमिश ने देहली - ए - कुहना के निकट एक विशाल तालाब का निर्माण करवाया जिसे हौज - ए - सुल्तानी अथवा 'राजा का तालाब' कहा जाता था ।

प्रमुख शब्दावली

जलाशय	:	जल को संरक्षित / इकट्ठा करने के लिए बनाया गया गड्ढा
मस्जिद	:	मुसलमानों का उपासना स्थल
संरक्षण करना	:	देखरेख करना
परछाई	:	छाया

प्रमुख प्रश्न

1. राजराजेश्वर मंदिर का निर्माण किसने करवाया ?

2. मुसलमान शासक अपने आप को किस रूप में दिखाने का प्रयास करते थे ?

3. सुल्तान इल्तुतमिश द्वारा बनवाए गए तालाब को किस नाम से जाना जाता था ?

4. हमारे लिए जल का क्या महत्त्व है ? दो बिंदु लिखिए ।

5. अगर आप राजा या सुल्तान होते तो जनता के उपयोग के लिए जल प्रबंधन कैसे करते ?

कार्यपत्रक संख्या:-05

विद्यार्थी का नाम _____

मुगल साम्राज्य

मुगल और उनके उत्तराधिकार की परंपराएँ

शिक्षण अधिगम

1. छात्र मुगल वंश के बारे में जान पाएँगे ।
2. विद्यार्थी मुगलों की उत्तराधिकार की परंपरा को जान पाएँगे ।

मुगल और उनके उत्तराधिकार की परंपराएँ

तैमूर उसके उत्तराधिकारी और मुगल शासक

बाबर प्रथम मुगल बादशाह

शिक्षक और छात्र संवाद

शिक्षक : प्रिय छात्र , क्या आपने लाल किला और ताजमहल के बारे में देखा या सुना है ?

छात्र : जी सर।

शिक्षक : लाल किला और ताजमहल कहाँ स्थित हैं ?

छात्र : दिल्ली और आगरा में।

शिक्षक : लाल किला और ताज महल किसने बनवाया ?

छात्र : शाहजहाँ ने।

शिक्षक : शाहजहाँ कौन था ?

छात्र : एक राजा।

आओ अब हम मुगल वंश के बारे में समझते हैं।

मुगल दो महान शासकों के वंशज थे। माता की ओर से वे चीन और मध्य एशिया के मंगोल शासक चंगेज खान के उत्तराधिकारी थे। दूसरी तरफ पिता की ओर से मुग़ल तैमूर के वंशज थे जो ईरान, इराक एवं वर्तमान तुर्की के शासक थे। तैमूर ने 1398 में दिल्ली को जीत लिया था। अतः तैमूर के वंशज होने पर मुगल शासक गर्व का अनुभव करते थे।

मुगल काल में अपने पिता के राज्य का उत्तराधिकारी उसका बड़ा पुत्र नहीं होता था।

मुगल शासकों ने उत्तराधिकार की तैमूर वंश परंपरा को अपनाया जिसे सहादायाद कहा जाता था।

प्रमुख शब्दावली

वंशज : वंश विशेष में उत्पन्न संतान

उत्तराधिकारी : वारिस

प्रमुख प्रश्न

सहादायाद परंपरा के अनुसार, पिता के राज्य का विभाजन उसके समस्त पुत्रों में कर दिया जाता था।

1. अगर आपको पैतृक संपत्ति के रूप में एक राज्य प्राप्त होता है तो आप उत्तराधिकार की कौन सी परंपरा अपनाएँगे और क्यों ?

_____

_____

_____

2. मुगल कौन थे ?

_____

_____

_____

3. उत्तराधिकार की सहादायाद परंपरा से आप क्या समझते हैं ?

_____

_____

_____

4. तैमूर ने शासन किया _____ , _____ और _____ में।

5. तैमूर ने दिल्ली जीती _____ ई० में।

6. मुगल शासकों की एक सूची बनाएँ।

_____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या:-06

विद्यार्थी का नाम _____

मुगल साम्राज्य

अकबर की प्रशासनिक नीतियाँ

शिक्षण अधिगम

1. विद्यार्थी अकबर के सूबों/प्रांतों की राजनैतिक व्यवस्था को जान पाएँगे।
2. विद्यार्थी विविध पदों पर कार्यरत अभिजात वर्ग/मंत्री व नौकरशाह के बारे में जान पाएँगे।

मुग़लप्रांत और प्रशासन

'अकबरनामा' न केवल अकबर बल्कि मुगलों की भी प्रशासनिक, राजनैतिक, सैनिक, आर्थिक, व पारिवारिक जीवन की जानकारी देती है।

'अकबरनामा' की रचना अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फ़ज़ल ने की है । 'आइने-अकबरी' 'अकबरनामा' का ही अंश है जिससे हमें अकबर की राजनैतिक व सैनिक गतिविधियों/कार्यों का पता चलता है ।

मुगल काल में प्रांतों को 'सूबा' कहा जाता था और सूबों के प्रशासक 'सूबेदार' कहलाते थे । इनके कार्यों में सहायता के लिए कुछ अन्य मंत्री थे जो इस प्रकार थे :-

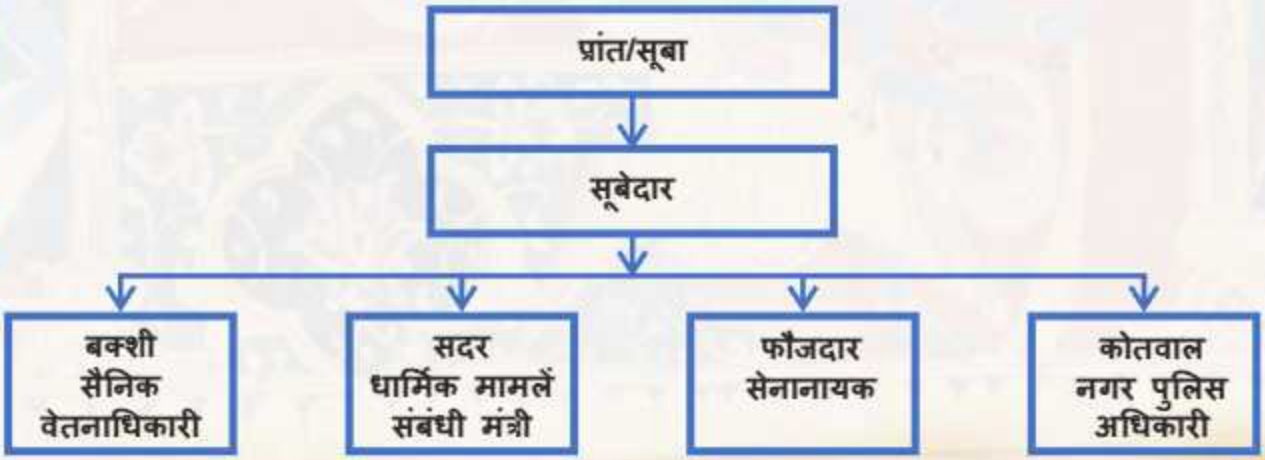

इसके अतिरिक्त प्रत्येक प्रांत में एक वित्तीय अधिकारी भी होते थे जिसे 'दीवान' कहा जाता था। इन सब ने मिलकर अकबर की प्रशासनिक नीतियों को साकार किया और मुगल वंश को मजबूती प्रदान की।

प्रमुख शब्दावली

सूबा	:	प्रांत
अभिजात	:	मंत्री व अधिकारी
इतिहासकार	:	इतिहास लिखने वाला
सूबेदार	:	सूबे का प्रशासक

प्रमुख प्रश्न

1. आप अपने बड़े – बुजुर्ग, माता – पिता,भाई - बहन से बात करके अपने परिवार का इतिहास लिखिए।

2. 'अकबरनामा' की रचना किसने की ?

3. अबुल फ़ज़ल कौन थे ?

4. प्रांतों के वितीय अधिकारी को क्या कहा जाता था ?

5. अगर आप शासक होते तो अपने प्रांत का शासन कैसे संभालते ?

कार्यपत्रक संख्या:-07

विद्यार्थी का नाम _____

शासक और इमारतें

चारबाग योजना

शिक्षण अधिगम

1. विद्यार्थी चारबाग योजना की शैली को पहचान पाएँगे ।
2. विद्यार्थी मुगल कालीन वास्तुकला को जान पाएँगे ।

चारबाग योजना

किसी भी प्रकार की वास्तुकला न केवल हमें अपने निर्माण की कहानी बताती है अपितु यह विविध शासकों की सोच को भी दर्शाती है ।

मुगल वंश के संस्थापक बाबर से लेकर उनके उत्तराधिकारी हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ आदि सभी वास्तुकला में व्यक्तिगत रूचि लेते थे ।

बाबर ने जिन औपचारिक बागों की योजना बनाई थी वे अकसर दीवारों से घिरे होते थे और कृत्रिम नहरों

काबुल में चारबाग का खाका बनाते बाबर की 1590 की एक चित्रकारी

द्वारा चार भागों में विभाजित तथा आयताकार होते थे ।

चार समान हिस्सों में बँटे होने के कारण यह चारबाग कहलाते थे ।

चारबाग बनाने की परंपरा की शुरुआत अकबर के समय से हुई ।

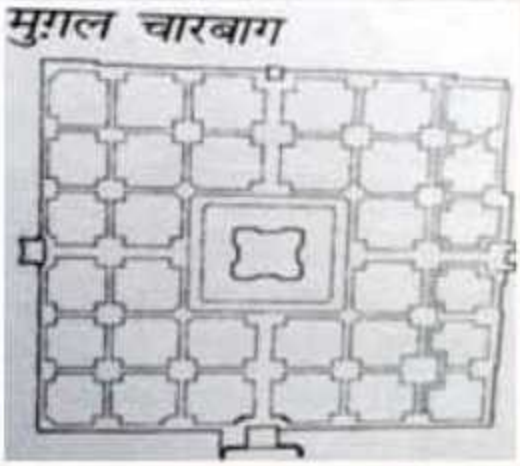

हुमायूँ के मकबरे का चारबाग एवं 1562 से 1571 केबीचनिर्मित हुमायूं का मकबरा

अकबर के समय में निर्मित दिल्ली स्थित हुमायूँ का मकबरा एक विशाल औपचारिक चारबाग के मध्य में स्थित था । जहाँगीर और शाहजहाँ ने भी कश्मीर, आगरा व दिल्ली में चारबागों को बनवाया।

प्रमुख शब्दावली

संस्थापक	:	स्थापना करने वाला
कृत्रिम	:	मानव निर्मित
वास्तुकला	:	इमारत, भवन जैसी ठोस संरचना बनाने की कला

प्रमुख प्रश्न

1. भारत में चारबाग बनाने की परंपरा किसके समय में शुरू हुई ?

2. चारबाग योजना में निर्मित कुछ बाग अथवा मकबरों के चित्र इकट्ठा कीजिए ।

3. अगर आपको किसी पार्क/उद्यान /बगीचे का निर्माण कार्य सौंपा जाए तो आप किस प्रकार उसका निर्माण करेंगे ।

कार्यपत्रक संख्या:-08

विद्यार्थी का नाम _____

दिल्ली के सुल्तान

गैरिसन शहर

शिक्षण अधिगम

1. विद्यार्थी गौरिसन शहर के अर्थ को समझ पाएँगे ।
2. विद्यार्थी गैरिसन शहर की आवश्यकता को जान पाएँगे ।

दिल्ली सल्तनत और गैरिसन शहर

बच्चों आज के समय में भी हम देखते हैं कि दुनिया में जीतने देश हैं वह सभी अपने अपने देश की सुरक्षा के लिए सैनिकों को बहाल करते हैं। यदि हम अपने देश की सीमा से सैनिकों को हटा ले तोकोई भी दूसरा देश हमारे देश की जमीन को अपने कब्जे में ले लेगा। अतः सेना देश की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इसी तरह किसी भी साम्राज्य की सुरक्षा के लिए शक्तिशाली सैनिकों का होना बहुत जरूरी है । सल्तनत काल में अफगानिस्तान के रास्ते आने वाले हमलावरों के हमले बार बार होते रहते थे।

दिल्ली के सुल्तानों ने इन हमलों और आंतरिक विद्रोहों को दबाने के लिए एक विशाल स्थायी सेना का संगठन किया।

दिल्ली के सुल्तानों ने अपने रक्षक सैनिकों की टुकड़ियों के रहने के लिए गैरिसन शहरों का निर्माण करवाया । गैरिसन शहर किलेबंद होते थे ।

अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित गैरिसन शहर :-सिरी फोर्ट

प्रमुख शब्दावली

गैरिसन शहर	:	किले बंद बसाव जहाँ सैनिक रहते हैं
किलेबंद शहर	:	मजबूत दीवार के घेरे के अंदर बना शहर
किला	:	मजबूत दीवार का घेरा
स्थायी	:	हमेशा बना रहने वाला

प्रमुख प्रश्न

1. गैरिसन शहर का क्या अर्थ होता है ?

2. सल्तनत काल में हमलावर किस रास्ते से आते थे ?

3. अपने देश की सुरक्षा के लिए क्या-क्या करना चाहिए ?

4. शहर का क्या अर्थ है ?

कार्यपत्रक संख्या:-09

विद्यार्थी का नाम _____

मुगल साम्राज्य

मुगलों के अन्य शासकों के साथ संबंध

शिक्षण अधिगम

1. विद्यार्थी मुगलों के अन्य शासकों के साथ संबंध को समझ पाएँगे।
2. विद्यार्थी मुगल कूटनीति को समझ सकेंगे ।

मुगलो के अन्य शासकों के साथ संबंध

प्रारंभ में जब मुग़ल शक्तिशाली नहीं थे अन्य शासकों ने उनकी सत्ता को स्वीकार करने से मना किया ।

लेकिन शक्तिशाली होते ही कई शासकों ने मुगलों की सत्ता स्वीकार कर ली ।

कई राजपूत राजाओं ने अपनी पुत्रियों का विवाह करके मुगल दरबार में उच्च पद प्राप्त किए ।

मुगल शासक अकबर और उसकी राजपूत पत्नी

कुछ राजपूत राजा या शासक जैसे सिसोदिया राजपूत मुगलों की सत्ता को स्वीकार करने से इंकार करते रहे। लेकिन जब वह हारे तो मुगलों ने सावधानी से उनकी जागीर वापस कर दी तथा अपमानित भी नहीं किया। परंतु इस संतुलन को हमेशा बरकरार रखना कठिन था।

जब शिवाजी मुगल सत्ता स्वीकार करने आए तो औरंगजेब ने उनका अपमान किया, जिसके कारण शिवाजी मुगलों के विरोधी हो गए।

वीर शिवाजी

प्रमुख प्रश्न

1. मुगलों ने अन्य शासकों के साथ संबंध विकसित करने के लिए क्या तरीका अपनाया ?

2. हारे हुए शासकों के साथ मुगलों ने क्या बर्ताव किया ?

3. औरंगजेब ने किसका अपमान किया ?

4. प्रमुख मुगल शासकों के नाम लिखिए।

कार्यपत्रक संख्या:-10

विद्यार्थी का नाम _____

नगर, व्यापारी और शिल्पीजन

मध्यकालीन भारत के नगर

शिक्षण अधिगम

1. मध्यकाल काल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़ कर देखते हैं।
2. मध्यकाल के दौरान हुए सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनो का विश्लेषण करते है।
3. इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं ।

नए शब्द

1. **सालिया - बुनकर,तंजावुर.**
2. **मंडपा - मंडप.**
3. **बारहमासी नदी-नदी जो पूरे वर्ष बहती है**

मानचित्र को देखें और उन शहरों/कस्बों और उन राज्यों की पहचान करें, जहाँ वे स्थित हैं । वे मध्यकालीन भारत के महत्तपूर्ण नगर थे. हमारे पास थे तंजावुर, काँचीपुरम, मदुरै, तिरुवन्नामलाई, मद्रास (तमिलनाडु), तिरुपति (आंध्र प्रदेश) सोमनाथ (गुजरात), वृंदावन (उत्तर प्रदेश), अजमेर (राजस्थान) हम्पी (कर्नाटक), मसुलीपटनम (आंध्र प्रदेश), कलकत्ता, मुर्शिदाबाद (पश्चिम बंगाल), इसके अलावा हमारे पास उरयेऊर, स्वामीमलाई

आकृति 1 मध्ययुगीन भारतीय, करबें

(तमिलनाडु) जैसे छोटे शहर थे । ये शहर या तो प्रशासनिक केंद्र थे या मंदिर- नगर या तीर्थस्थल थे या वाणिज्यिक और शिल्प केंद्र या बंदरगाह नगर या उपरोक्त सभी का मिश्रण थे ।

प्रशासनिक केंद्र

आइए जानें एक प्रशासनिक केंद्र के बारे में जो मध्यकाल का एक प्रसिद्ध शहर था जिसका नाम'तंजावुर'है।

1. यह चोल राजवंश की राजधानी और प्रशासनिक केंद्र था।
2. यह बारहमासी नदी कावेरी के तट पर था।
3. तंजावुर मंदिरों का शहर भी था। यहाँ का राजराजेश्वर मंदिर राजाराजा चोल द्वारा बनवाया गया था।
4. शहर के वास्तुकार कुंजामलन राजाराजा पेरुंथाचचन थे।
5. यहाँ मंडप या मंडप वाले महल थे। राजाओं ने इन मंडपों में दरबार का आयोजन किया।
6. सेना के लिए बैरक भी थे।
7. शहर में अनाज, मसाले, कपड़ा और आभूषण बेचने का बाजार था।
8. तंजावुर के सालिया बुनकर तथा पास के शहर उरईयूर के बुनकर मंदिरों के लिए झंडे तथा राजा और जनता के लिए कपड़ा तैयार करते थे ।
9. स्वामीमलाई के मूर्तिकार उत्तम कांस्य मूर्तियों और सजावटी घंटी, धातु, लैंप इत्यादि बनाते थे।

राजराजेश्वर मंदिर ,तंजावुर

प्रमुख प्रश्न

1. निम्नलिखित का मिलान करें -

शहर/शहर	राज्य/स्थान
1. तंजावुर	A. उत्तर प्रदेश
2. सोमनाथ	B. तमिलनाडु
3. अजमेर	C तंजावुर
4. वृंदावन	D गुजरात
5. सालिया	E राजस्थान

2. प्रशासनिक शहर आम तौर पर एक नदी के तट पर क्यों स्थित थे? एक नदी के तट पर स्थित आधुनिक भारत के एक प्रशासनिक शहर का नाम लिखिए।

3. तंजावुर किस बारहमासी नदी के किनारे स्थित था?

4. क्या दिल्ली को प्रशासनिक केंद्र कहा जा सकता है? क्यों?

5. मध्यकालीन भारत के पांच महत्तवपूर्ण शहरों के नाम लिखिए।

कार्यपत्रक संख्या:-11

विद्यार्थी का नाम _____

नगर, व्यापारी और शिल्पीजन

मंदिर- नगर और तीर्थस्थल

शिक्षण अधिगम

1. मध्य-काल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्तवपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलाओं के साथ जोड़ कर देखते हैं।
2. मध्य-काल के दौरान हुए सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनो का विश्लेषण करते है।
3. इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं ।

नए शब्द

1. **टेंपल टाउन- एक नगर जिसमें एकल या एकाधिक देवी - देवताओं के कई मंदिर हैं.**
2. **तीर्थस्थल - एक ही देवता से संबंधित स्थान।**
3. **मदुरै- तमिलनाडु का एक महत्तवपूर्ण मंदिर नगर।**
4. **तिरुपति - आंध्र प्रदेश का एक मंदिर नगर।**
5. **अजमेर - राजस्थान में एक तीर्थस्थल।**

मंदिर नगर

- एक मंदिर नगर ऐसी जगह है जहाँ एक या अनेक देवताओं से संबन्धित कई मंदिर हैं।
- ऐसे नगर मंदिरों के आसपास विकसित हुए।
- ये मंदिर नगर शहरीकरण के लिए महत्तवपूर्ण थे और समाज के लिए महत्तवपूर्ण थे।
- तीर्थयात्रियों की सेवा के लिए कई पुजारी, मजदूर, कारीगर, व्यापारी आदि मंदिरों के पास बस गए।

सोमनाथ, गुजरात।
भारत का एक मंदिर नगर

- इन मंदिरों का निर्माण राजाओं या अमीर व्यापारियों ने किया था।
- राजा ने मंदिरों को जमीन और पैसे का अनुदान दिया।
- मंदिर अधिकारियों ने व्यापार और बैंकिंग के वित्त पोषण के लिए अपनी संपत्ति का इस्तेमाल किया ।
- महत्वपूर्ण मंदिर कस्बों का उदाहरण हैं -तंजावुर, भीलावमिन (मध्य प्रदेश में भीलसा या विदिशा), सोमनाथ (गुजरात), कांचीपुरम और मदुरै (तमिलनाडु), तिरुपति (आंध्र प्रदेश)।

तीर्थ स्थल

- तीर्थस्थल एक ऐसा स्थान है जो एक ही देवता से जुड़ा हुआ है और जहां लोग अपने आध्यात्मिक उपचार के लिए जाते हैं।
- उदाहरण- वृंदावन (उत्तर प्रदेश) और तिरुवन्नामलाई (तमिलनाडु), अजमेर (राजस्थान)
- अजमेर बारहवीं शताब्दी में चौहान राजाओं के अधीन एक प्रशासनिक केंद्र भी था और बाद में मुगलों के अधीन सूबा मुख्यालय बन गया।

अजमेर का दरगाह, एक तीर्थ स्थल

- यहाँ ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है और यह धार्मिक सह-अस्तित्व का एक उत्कृष्ट उदाहरण था।
- पुष्कर (अजमेर के पास) एक झील है, जिसने प्राचीन काल से तीर्थयात्रियों को आकर्षित किया है)

प्रमुख प्रश्न

1. भारत के कुछ मंदिर नगरों का नाम लिखिए ?

_____

_____

_____

2. एक मंदिर नगर की यात्रा की एक योजना बनाइए |

3. एक मंदिर नगर और एक तीर्थस्थल में क्या अंतर है ?

4. भारत के कुछ तीर्थ स्थलों का नाम लिखिए ।

कार्यपत्रक संख्या:-12

विद्यार्थी का नाम _____

नगर, व्यापारी और शिल्पीजन

छोटे नगर, छोटे और बड़े व्यापारी

शिक्षण अधिगम

1. मध्य-काल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्तवपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़ कर देखते हैं।
2. मध्य-काल के दौरान हुए सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनो का विश्लेषण करते है।
3. इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं ।

नए शब्द

1. **ताड़ी निर्माता- वह व्यक्ति जो मादक पेय पदार्थ तैयार करता है।**
2. **सामंत- जमींदार।**
3. **बंजारा- घुमंतू व्यापारी।**
4. **चेतियार- एक व्यापारिक समुदाय।**
5. **मुस्लिम बोहरा -गुजरात के प्रसिद्ध व्यापारिक समुदाय।**

छोटे नगर

बड़े शहर रातोंरात नहीं बनते। बड़े शहर छोटे शहर हुआ करते थे, छोटे शहर बड़े गाँव होते थे और बड़े गाँव छोटे गाँव हुआ करते थे । छोटे गाँवों में आपने हाट बाजार का दौरा किया होगा, जो चित्र में दिखाए गए विभिन्न वस्तुओं की बिक्री कर रहा है।

जब ये हाट विभिन्न प्रकार की चीजों की उपलब्धता के मामले में बड़े होते हैं तो वे छोटे शहरों के निर्माण के लिए नींव बनाते हैं ।

1. छोटे शहरों में अनिवार्य रूप से बाजार होते थे ।
2. मध्यकालीन भारत मे इन बाजारों को मंडियाँ या मंडपिका और हाट या हट्टा कहा जाता था।
3. विभिन्न प्रकार के कारीगरों के लिए सड़कें थीं जैसे कि बाजार में केवल कुम्हार के लिए एक सड़क होगी, केवल तेल प्रेसरों के लिए एक सड़क आदि।
4. छोटे शहरों का गठन उन केंद्रों पर किया गया था जहाँ कारीगर और अन्य लोग आकर अपने उत्पाद बेचेंगे।
5. कुम्हारों, तेलियों, शक्कर बनाने वाले, ताड़ी निर्माताओं, सुनार, लुहार, पत्थर तोड़ने वाले जैसे कुछ कारीगर हैं ।
6. सामंत व्यापारियों ने इन कस्बों में या उसके पास एक मजबूत महल का निर्माण किया और उन्होंने कारीगरों और व्यापारियों पर कर लगाए और स्थानीय मंदिरों को इन करों को इकट्ठा करने के लिए अधिकार प्रदान किया।
7. ये "अधिकार" शिलालेखों में दर्ज किए गए थे जो आज तक बच गए हैं।
8. आस-पास और दूरदराज़ के व्यापारी स्थानीय उपज खरीदने और दूर स्थानों के उत्पादों जैसे घोड़े, नमक, कपूर, केसर, सुपारी और काली मिर्च जैसे मसाले बेचने आते थे ।

व्यापारी बड़े और छोटे

व्यापारियों में बंजारे व कई अन्य लोग शामिल थे।

- बंजारे खानाबदोश या यात्रा करने वाले व्यापारी थे, जो सुरक्षा के लिए बड़े समूहों में अपने परिवार के साथ यात्रा करते थे ।
- मणिग्रामम और नंदेसी कुछ प्रसिद्ध बंजारा व्यापारिक समुदाय थे।
- वे न केवल दक्षिण भारत में बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया और चीन में भी कारोबार करते थे।

बंजारे

- घोड़ा व्यापारी भी एक स्थान से दूसरे स्थान जा कर योद्धाओं को घोड़े बेचते थे।
- कुछ प्रसिद्ध गैर-बंजारा व्यापारिक समुदाय चेट्टेसर,मारवाड़ी ओसवाल थे।
- गुजरात के हिंदु बनिया और मुस्लिम बोहरा भी मशहूर थे ।
- ये व्यापारिक समूह सोने और हाथीदाँत के बदले बंदरगाहों से विदेशों में कपड़ा और मसाले बेचते थे।
- वे अपनी वस्तुएँ लाल सागर के देशों, फारस की खाड़ी देशों, पूर्वी अफ्रीका के देशों, दक्षिण पूर्व एशिया और चीन को भेजते हैं ।
- अफ्रीका से वे सोने और हाथीदाँत लाते थे ।
- चीन और दक्षिण पूर्व एशिया से ये व्यापारी भारत में मसाले, टिन, चाइनीज ब्लू पॉटरी और चाँदी लेकर आते थे।

इन देशों के व्यापारी भी भारत आते थे।

भारत में व्यापारी व्यापार मे अधिक फायदे पर थे क्योंकि भारत एक उष्णकटिबंधीय देश है और यहाँ उत्पादित मसाले (काली मिर्च, दालचीनी, जायफल, सूखे अदरक आदि) यूरोपीय खाना पकाने का एक महत्तवपूर्ण हिस्सा बन गए थे और यहाँ का कपास भी बहुत प्रसिद्ध था।

प्रमुख प्रश्न

1. मध्यकालीन भारत के बंजारे कौन थे? क्या आपको आज भी बंजारा समुदाय मिलते हैं?

2. मध्य-काल में भारत ने अन्य देशों के साथ क्या व्यापार किया?

3. वर्क शीट में चर्चा किए गए कुछ प्रसिद्ध गैर-बंजारा व्यापारी समुदायों का नाम लिखिए।

4. लाल सागर के कुछ देशों का नाम दें जहाँ भारतीय व्यापारी अपनी वस्तुएँ बेचते थे।

5. आपने किसी 'हाट' का दौरा किया है? वहाँ कौन सी वस्तुएँ उपलब्ध हैं?

कार्यपत्रक संख्या:-13

विद्यार्थी का नाम _____

नगर, व्यापारी और शिल्पीजन

कस्बा- शिल्प

शिक्षण अधिगम

1. मध्य-काल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्तवपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़ कर देखते हैं।
2. मध्य-काल के दौरान हुए सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनो का विश्लेषण करते है।
3. इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं ।

नए शब्द

1. बीदरी- बिदार का धातु-शिल्प
2. पंचाल या विश्वकर्मा - शिल्पकारों का समुदाय
3. कैक्कोलर - बुनकर समुदाय
4. देवदासी- मंदिर नर्तिका
5. हम्पी- विजयनगर का प्रशासनिक शहर।

बिदार

- बिदार अपनी बीदरी शिल्प के लिए प्रसिद्ध था।
- बीदरी भारत का एक सजावटी धातु-कार्य है, जिसमें गन मेटल के बर्तन पर चाँदी का काम होता है ।
- गन मेटल जिंक और कॉपर का एलॉय होता है और इसका रंग काला होता है।

बिदरी क्राफ्ट

- पंचाल या विश्वकर्मा समुदाय के लोग सुनार, कसेरे , लोहार, राजमिस्त्री और बढ़ई का काम करते थे ।
- उन्होंने मंदिरों, महलों, बड़ी इमारतों, टैंकों और जलाशयों के निर्माण में काम किया।
- कैक्कोलर समुदाय के लोग बुनकर का काम करते थे ।

हम्पी

- हम्पी विजयनगर साम्राज्य का एक प्रशासनिक शहर था।
- यह एक वाणिज्यिक शहर के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधि का केंद्र भी था।
- यहाँ प्रसिद्ध विरूपक्ष मंदिर स्थित था।
- यहाँ देवदासियाँ नृत्य कर देवों की उपासना करती थीं ।
- इस मंदिर में कई स्तम्भ थे ।
- हम्पी को, राजा द्वारा मनाए जाने वाले, अपने महानवमी (नवरात्र) उत्सव के लिए भी जाना जाता था।
- महानवमी महोत्सव के दौरान राजा अतिथियों की अगवानी करते थे और दान स्वीकार करते थे, राजा इस दौरान महानवमी- मंच से नृत्य-संगीत प्रदर्शन और कुश्ती के मुकाबले देखते थे।
- कृष्ण-तुंगभद्रा बेसिन में स्थित इस शहर का नगर- वास्तुकला प्रभावशाली थी।
- इस शहर को अन्तः -गुंथित (interlocked) पत्थरों की विशाल दीवारों से चारो तरफ से किलाबंद किया गया था।
- इन दीवारों में और किसी भी सीमेंटिंग सामग्री का उपयोग नहीं किया गया था।
- शाही परिसर में इमारतों में शानदार मेहराब, गुंबद और खंभे वाले हॉल थे।
- पुर्तगाल व्यापारी हम्पी के बाजारों में आए।
- पुर्तगाल यूरोप का देश है।
- बेरार और बीदार, अहमदनगर, बीजापुर में विजयनगर की हार के बाद गोलकोंडा 1565 के शासकों नें हम्पी को बर्बाद कर दिया था।

प्रमुख प्रश्न

1. बिदरी क्या है ?

2. कैक्कोलर कौन थे ?

3. हम्पी शहर किस तरह का था? क्या यह एक किलाबंद शहर था?

4. हम्पी की बर्बादी क्यों हुई?

5. बिदरी क्राफ्ट के बारे में कुछ तस्वीरें लीजिए और इसकी महत्तवपूर्ण विशेषताओं को समझने की कोशिश कीजिये ।

कार्यपत्रक संख्या:-14

विद्यार्थी का नाम _____

नगर, व्यापारी और शिल्पीजन

सूरत

शिक्षण अधिगम

1. मध्य-काल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्तवपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़ कर देखते हैं।
2. मध्य-काल के दौरान हुए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनो का विश्लेषण करते है।
3. इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं ।

नए शब्द

1. **जरी-जरी, सोने का पानी चढ़ा हुआ चाँदी का तार है, इस तार से बने वस्त्र जरी कहलाते हैं**
2. **काठियावाड़ सेठ या महाजन -पैसा बदलने वाले और कर्ज़ देने वाले धनवान समुदाय के लोग**
3. **हुंडी - चेक् की तरह का कागज**
4. **मक्का का गेट - मध्यकालीन भारत में सूरत का एक नाम ।**
5. **पश्चिम एशिया - बहरीन, इराक, जॉर्डन, कुवैत, लेबनान, ओमान आदि।**

सूरत भारत मे स्थित गुजरात का प्रसिद्ध शहर है।

यह अब हीरा काटने और चमकाने के लिए प्रसिद्ध है

सूरत मुगल काल में पश्चिमी व्यापार के प्रaमुख बंदरगाहों और एम्पोरियम में से एक था।

एम्पोरियम वह जगह थी जहाँ विभिन्न उत्पादन केन्द्रों से सामान खरीदा और बेचा जाता था।

कैम्बे (जिसे अब कमभात के नाम से जाना जाता है) और अहमदाबाद में एम्पोरियम भी उपलब्ध थे।

सूरत पश्चिम एशिया के साथ व्यापार ओरमुज की खाड़ी के रास्ते करता था

सूरत को मक्का का गेट कहा जाता है क्योंकि व्यापार के साथ कई तीर्थ यात्री सूरत से मक्का के लिए रवाना होते थे।

सूरत में कई जाति और धर्म के लोग रहते थे।

पुर्तगाली, डच और अँग्रेज़ो ने 17 वीं शताब्दी में सूरत में अपने कारखानों और गोदामों की स्थापना की।

ओविंगटन, एक अँग्रेजी इतिहासकार ने 1689 में सूरत बंदरगाह का एक लेख लिखा था।

इस बंदरगाह पर विभिन्न देशों के औसतन सौ जहाज लंगर डालते हैं।

इस कस्बे में सूती वस्त्र बेचने वाली कई खुदरा और थोक दुकानें थीं।

सूरत सोने का फीता या जरी बॉर्डर के लिए भी मशहूर था। इसे पश्चिम एशिया, अफ्रीका और यूरोप में बेचा जाता था।

राज्य ने दुनिया भर से इस शहर में आने वाले लोगों की देखभाल के लिए रेस्ट हाउस बनाए थे।

सूरत में बड़ी-बड़ी इमारतें और आनंद पार्क भी बनाए गए।

सूरत में काठियावाड़ सेठों के पास विशाल बैंकिंग घराने थे।

जो कोई इन सेठों के पास पैसे जमा करता था उन्हे ये सेठ हुंडी नामक जमा पर्ची देते थे।

मिस्र के काहिरा,इराक में बसरा और बेल्जियम में ऐंटवर्प के बाजारों में इन सूरत हुंडियों को भुगतान के तरीके के रूप में स्वीकार किया गया था ।

17 वीं शताब्दी के अंत तक सूरत के बाजारों और उत्पादकता में गिरावट शुरू हो गई।

अब पुर्तगालियों ने सूरत के समुद्री मार्ग पर नियंत्रण कर लिया था।

सूरत को बंबई से भी कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा जो ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्यालय था ।

प्रमुख प्रश्न

1. सूरत शहर कहाँ है?

2. हुंडी क्या है?

3. सूरत के महाजन् या काठियावाड़ सेठ कौन थे?

4. 'जरी' क्या है?

5. सूरत के कारोबार का अवलोकन करने के लिए अपने परिवार के साथ सूरत शहर की यात्रा की योजना बनाएँ।

कार्यपत्रक संख्या:-15

विद्यार्थी का नाम _____

नगर, व्यापारी और शिल्पीजन

मसूलीपट्टनम

शिक्षण अधिगम

1. मध्य-काल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्तवपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़ कर देखते हैं।
2. मध्य-काल के दौरान हुए सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनो का विश्लेषण करते है।
3. इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं ।

नए शब्द

1. तेलुगु कोमती चेट्टी - मछलीपट्नम का व्यापारी समुदाय
2. कुतुब शाही - गोलकोंडा के शासक
3. गोलकोंडा - हैदराबाद के पास एक जगह
4. शाही - एकाधिकार- ऐसे व्यापार जो केवल राजा ही कर सकता है
5. औरंगजेब - मुगल बादशाह, गोलकोंडा पर कब्जा किया

- मसूलीपट्टनम या मछलीपट्टनम कृष्णा नदी के डेल्टा पर स्थित था ।
- मसूलीपट्टनम नाम मतलब मछली- नगर ।
- सत्रहवीं शताब्दी में यह एक वाणिज्य नगर था।
- यह एक वाणिज्यिक नगर के साथ-साथ एक बंदरगाह नगर भी था।
- यह आंध्र प्रदेश का सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह बनकर उभरा।

- यही वजह है कि डच और इंग्लिश ईस्ट इंडिया दोनों कंपनियों ने इसे नियंत्रित करने का प्रयास किया।
- यहाँ डच द्वारा बनाया गया एक किला था।
- नगर में व्यापार से धन कमाने के बहुत अवसर थे ।
- मसूलीपट्टनम गोलकोंडा के कुतुब शाही शासकों के अधीन था। .
- गोलकोंडा हैदराबाद के पास है और अब तेलंगाना का एक हिस्सा है ।

कुतुब शाही

- विदेशियों के हाथों में व्यापार के लाभों को जाने से रोकने के लिए यहाँ के शासकों ने वस्त्र, मसाले इत्यादि की बिक्री पर शाही - एकाधिकार लगाया ।
- शाही एकाधिकार का अर्थ है कि केवल राजा ही व्यवसाय कर सकता है।
- विभिन्न व्यापारिक समूहों - गोलकोंडा रईसों, फारसी व्यापारियों, तेलुगु कोमती चेटिस और यूरोपीय व्यापारियों के बीच उच्च प्रतिस्पर्धा ने नगर की आबादी को और समृद्ध बनाया।
- बहुत लाभदायक होने के कारण व्यापार में घनी प्रतिस्पर्धा थी।
- 1686-1687 में मुगल सम्राट औरंगजेब ने गोलकोंडा पर कब्जा कर लिया।

कुतुबशाही

- जैसे ही कंपनी के व्यापारी बंबई, कलकत्ता (वर्तमान कोलकाता) और मद्रास (वर्तमान चेन्नई) चले गए, मसूलीपट्टनम ने अपने व्यापारियों और समृद्धि दोनों को खो दिया और अठारहवीं शताब्दी के दौरान इसमें गिरावट आई।
- इस वजह से यूरोपीय कंपनियों को विकल्प की तलाश करनी पड़ी क्योंकि औरंगजेब ने अब व्यापार को नियंत्रित कर लिया था।

प्रमुख प्रश्न

1. मसूलीपट्टनम का अर्थ क्या है?

2. मसूलीपट्टनम किस तरह का नगर था?

3. मसूलीपट्टनम में व्यापार इतना प्रतिस्पर्धी क्यों था?

4. किन कारणो नें यूरोपीय व्यापारियों को मसलीपट्टनम का विकल्प तलाशने को मजबूर किया ?

5. मसूलीपट्टनम के इतिहास से संबंधित कुछ तस्वीरें लीजिए? ऑनलाइन स्रोतों का उपयोग करें।

कार्यपत्रक संख्या:-16

विद्यार्थी का नाम _____

नगर, व्यापारी और शिल्पीजन

नए शहर और व्यापारी

शिक्षण अधिगम

1. मध्य-काल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्तवपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़ कर देखते हैं।
2. मध्य-काल के दौरान हुए सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनो का विश्लेषण करते है।
3. इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं ।

१६ और १७ वीं शताब्दी के दौरान यूरोप में मसालों की भारी माँग थी।

यूरोप और पश्चिम एशिया में भारतीय मसाले और वस्त्र बहुत लोकप्रिय थे।

इसलिए, ईस्ट इंडिया कंपनी का गठन अँग्रेजी, डच और फ्रेंच द्वारा पूर्व में अपने व्यापार का विस्तार करने के लिए किया गया था।

मुल्ला अब्दुल गफूर और वीरजी वोरा जैसे भारतीय व्यापारियों ने ईस्ट इंडिया कंपनी को कड़ा मुकाबला दिया क्योंकि उनके पास बड़े जहाज थे ।

समुद्री मार्ग पर नियंत्रण हासिल करने के लिए यूरोपीय कंपनियों ने अपनी नौसैनिक शक्ति का इस्तेमाल किया ।

एक बार जब उन्होंने नियंत्रण प्राप्त किया, तो उन्होंने भारतीय व्यापारियों को अपने एजेंट के रूप में काम पर रख लिया।

भारतीय उपमहाद्वीप में अँग्रेज सबसे सफल वाणिज्यिक और राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरे।

यूरोप में भारतीय वस्त्रों की माँग बढ़ी।

इस प्रकार इसने भारत में कताई, बुनाई, ब्लीचिंग, रंगाई आदि का विस्तार किया।

लेकिन माँग में इस वृद्धि के कारण कारीगरों की स्वतंत्रता में गिरावट आई। वे यूरोपीय एजेंटों को किए गए वादे के अनुसार कपड़े बुनते थे क्योंकि उन्हे एजेंटों द्वारा अग्रिम भुगतान किया जाता था ।

बुनकरों को अपने ही पैटर्न को बुनने और खुद के कपड़े बेचने की इजाजत नहीं थी ।

व्यापार में वृद्धि के साथ नए कस्बों और व्यापारियों का विकास हुआ ।

बंबई, कलकत्ता और मद्रास जैसे शहर 18 वीं शताब्दी में प्रमुख व्यापार केंद्र के रूप में उभरे।

कारीगरों और व्यापारियों को यूरोपीय कंपनियों द्वारा स्थापित काले नगरों में ले जाया गया।

इन काले शहरों में भारत के काले या मूल निवासी व्यापारी और शिल्पकार रहते थे।

दूसरी ओर गोरे शासक मद्रास में सेंट जॉर्ज किलेऔर कलकत्ता में सेंट विलियम किले के बेहतर निवास में रहते थे।

प्रमुख प्रश्न

1. यूरोपीय कंपनियाँ भारतीय व्यापार की ओर क्यों आकर्षित हुईं?

2. भारत के दो मशहूर व्यापारियों का नाम बताएँ?

3. 'भारतीय व्यापारी यूरोपीय व्यापारियों से व्यापार में पिछड़ गए', क्यों ?

4. यूरोपीय कंपनियों ने काले नगरों की स्थापना क्यों की?

5. दिल्ली में स्थित भारतीय राष्ट्रीय संग्रहालय जाएँ और मध्यकालीन भारत के व्यापार के बारे में कुछ जानकारी एकत्रित करें।

कार्यपत्रक संख्या:-17

विद्यार्थी का नाम _____

जनजातियाँ खानाबदोश और एक जगह बसे हुए समुदाय

जनजाति

शिक्षण अधिगम

1. लोगों की आजीविका के पैटर्न और निवास क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के बीच संबंध का वर्णन करते हैं। उदाहरण की लिए जनजातियों, खानाबदोशो और बंजारो की ।
2. मध्यकाल के दौरान हुए सामाजिक- राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करते हैं।

नए शब्द

1. **नातेदारी-एक ही परिवार के सदस्यों के बीच संबंध**
2. **खानाबदोश-भ्रमणकारी जन-जाति जो एक स्थान पर नहीं रहती**

भारतीय उपमहाद्वीप में कुछ समुदायों ने ब्राह्मणों द्वारा सुझाए सामाजिक नियमों का पालन नहीं किया। ऐसे समुदाय ही असमान वर्गों में बँटे हुए थे। अक्सर इन समुदायों को जनजातियाँ कहा जाता था। आइए आज जनजातियों की विशेषताओ को जाने :-

1) वे असमान वर्गों में विभाजित नहीं थे।
2) सदस्य नातेदारी के बंधन से एकजुटथे ।
3) वे खानाबदोश थे और भूमि और चरागाह को संयुक्त रूप से नियंत्रित करते थे।
4) वे जंगल, पहाड़ियों, रेगिस्तान और कई ऐसे स्थानो पर रहते थे जहाँ पहुँचना सबके लिए संभव नहीं था। जनजातियों ने अपनी स्वतंत्रता को बनाए रखा और अपनी संस्कृति को संरक्षित रखा ।
5) वे लिखित रिकॉर्ड नहीं रखते थे और मौखिक रूप से अपने समृद्ध रीति-रिवाजों और परंपराओं को जीवित रखते थे ।
6) शक्तिशाली जनजातियों ने बड़े क्षेत्रों को नियंत्रित किया। उदाहरण के लिए, पंजाब में (13वीं और 14वीं शताब्दी) खोखर जनजातियाँ और बाद में गक्खर जनजातियाँ (उनके प्रमुख कमाल खान गक्खर को सम्राट अकबर द्वारा मनसबदार की उपाधि दी ।)

चित्र भारत के 1 महत्वपूर्ण जनजातीय क्षेत्र

यहाँ विभिन्न जनजातियों व उनके क्षेत्रों की एक सूची है:

जनजाति का नाम	क्षेत्र
लंगाह, अरघुन, बलोच	

प्रमुख प्रश्न

1. बताइये कि निम्नलिखित वाक्य सत्य हैं या असत्य ।

   क) जनजातियों ने ब्राह्मणों द्वारा निर्धारित वर्ण प्रणाली का पालन किया ।

   ख) जनजातियों ने लिखित रिकॉर्ड नहीं रखा ।

   ग) जनजातियों ने व्यक्तिगत रूप से भूमि और चरागाहों को नियंत्रित किया।

2. गोंड्स _____, मध्य प्रदेश, _____ ,आंध्र प्रदेश में रहते थे ।

3. 'खोखर जनजाति के लोग किस राज्य में रहते थे?

   _____

   _____

   _____

4. जनजातियाँ कौन सा व्यवसाय करती थी, नाम बताइये।

   _____

   _____

   _____

5. मध्यकालीन युग के आदिवासी समाजों के बारे में हम इतना कम क्यों जानते हैं?

   _____

   _____

   _____

कार्यपत्रक संख्या:-18

विद्यार्थी का नाम _____

जनजातियाँ खानाबदोश और एक जगह बसे हुए समुदाय

घुमंतू समूह और नई जातियाँ

शिक्षण अधिगम

1. लोगों की आजीविका के पैटर्न और निवास क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के बीच संबंध का वर्णन करते हैं। उदाहरण की लिए जनजतियों, खानाबदोशो और बंजारो की ।
2. मध्यकाल के दौरान हुए सामाजिक- राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करते हैं।

नए शब्द

1. पशुपालक - भेड़/पशु - पालक
2. घुमंतू - एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करने वाले
3. वंशावली - परिवारों की श्रृंखला
4. मेडिकैंट - बेघर।

आप लोगों ने ऐसे समुदायों को देखा होगा जो पारंपरिक पोशाकों में गायों के समूहो के साथ घूमते हैं। वर्ष की एक विशेष समय अवधि के दौरान लोहे के बर्तन बेचने के लोगों के समूह को अपने झुंड के साथ यात्रा करते देखा होगा। क्या आपने कभी सोचा है कि उन्हें पूरे वर्ष एक ही स्थान पर क्यों नहीं देखा जाता है? वे पारंपरिक पोशाक क्यों पहनते हैं और वे कहाँ आते और जाते हैं। आज हम जो विषय-वस्तु

पढ़ने जा रहे हैं वह हमारे मध्यकालीन अतीत से है लेकिन हमारे वर्तमान प्रश्न से भी काफी संबंधित है जिसे हमने पिछली पंक्तियों में उठाया है ।

घुमंतू चरवाहे

ज्यादातर जनजातियाँ खानाबदोश थी। वे जानवरों के साथ लंबी दूरी तय करते थे। वे खेतिहर गृहस्थों से अनाज, कपड़े, बर्तनों लिए, दूध, शहद, ऊन , घी आदि का आदान-प्रदान करते थे ।

बंजारा

व्यापारी खानाबदोशों के कारवाँ को टांडा के नाम से जाना जाता था , वे जहाँ अनाज सस्ता होता था वहाँ से खरीदते थे और जहाँ महँगा होता था वहाँ बेचते थे। अलाउद्दीन खिलजी ने बंजारों का इस्तेमाल शहर के बाजारों में अनाज पहुँचाने के लिए किया और सैन्य अभियानों के दौरान सेना को अनाज पहुँचाया ।

घुमंतू समूह

शिल्पकार, फेरीवाले और तमाशबीन अपना व्यवसाय चलाने के लिए जगह-जगह यात्रा करते थे। खानाबदोशों और घुमंतू हर साल एक ही जगह का दौरा किया करते थे। घुमंतू सौदागरों को काम करते थे। अब तक आपको हमारे प्रश्न का उत्तर मिल गया होगा की आज भी इन बंजारो और घुमंतू चरवाहों ने अपनी परंपरा और संस्कृति को किस प्रकार कायम रखा हैं।

नई जातियां

- वर्णो के भीतर छोटी जातियाँ उभरने लगी ।
- ब्राह्मणों के बीच नई जातियाँ सामने आई ।
- सुनार, लोहार, बढ़ई, राजमिस्त्री को भी ब्राह्माणों द्वारा अलग-अलग जातियों के रूप में मान्यता दी गयी।
- क्षत्रियों में राजपूत उभरे। वे हुण, चंदेलों, चालुक्यों जैसे विभिन्न वंशों के थे। इसने आदिवासी आबादी को क्षत्रिय माने जाने का अवसर दिया ।
- आदिवासी लोगों में पाए जाने वाले सामाजिक बदलावों के महत्तवपूर्ण उदाहरण गोंड़ और अहोम हैं।

प्रमुख प्रश्न

1. घुमंतू चरवाहों का मुख्य व्यवसाय क्या है?

2. उस राजा का नाम बताओ जिसने बंजारो का इस्तेमाल बाजारों और सेना में अनाज पहुँचाने के लिए किया ?

3. आज के समय में भी हम कुछ घुमंतू सौदागर देख सकते हैं । क्या आप वर्तमान उनके द्वारा बेचे जाने वाले किसी भी उत्पाद की पहचान कर सकतेहैं?

4. समय के साथ आदिवासी समाज का स्वरूप कैसे बदल गया?

5. वर्तमान में भारतीय सेना में राजपूतों के नाम पर एक रेजिमेंट है। क्या आप इसका नाम ले सकते हैं?

कार्यपत्रक संख्या:-19

विद्यार्थी का नाम _____

जनजातियाँ खानाबदोश और एक जगह बसे हुए समुदाय

आदिवासियों के बीच राज्य और सामाजिक परिवर्तन का उद्भव

शिक्षण अधिगम

1. लोगों की आजीविका के पैटर्न और निवास क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के बीच संबंध का वर्णन करते हैं। उदाहरण की लिए जनजतियों, खानाबदोशो और बंजारो की ।
2. मध्यकाल के दौरान हुए सामाजिक- राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करते हैं।

नए शब्द

1. पशुपालक - भेड़/पशु पालक
2. घुमंतू - एक जगह से दूसरी जगह यात्रा करने वाले
3. वंशावली - परिवारों की श्रृंखला
4. मेडिकैंट - बेघर।

गोंड

1. मध्य भारत में सबसे शक्तिशाली आदिवासी समुदाय।
2. 'गोंड' नाम शायद तेलुगू शब्द 'कोंडा' से आता है, जिसका अर्थ है एक पहाड़ी।
3. शुरुआती समय से ही वे ऊपरी नर्मदा घाटी और पड़ोसी वन क्षेत्रों में रह रहे थे, जिनमें कई पहाड़ियाँ थीं। इस क्षेत्र को गोंडवाना भी कहा जाताहै।
4. अकबरनामा के अनुसार, गढ़ कटंगा अपने समय के सबसे शक्तिशाली राज्यों में से एक था। इसमें 70000 गाँव थे।
5. रानी दुर्गावती गोंड साम्राज्य की सबसे शक्तिशाली शासक थीं। उन्होने अकबर के आधिपत्य को मानने से इनकार कर दिया। इसलिए 1565 में मुगलों ने गढ़

कटंगा पर हमला कर दिया। रानी दुर्गावती ने कड़ा प्रतिरोध किया और अपने राज्य के लिए लड़ते हुए शहीद हो गई ।

6. गढ़ कटंगा एक अमीर राज्य था जिसने जंगली हाथियों को निर्यात करके धन अर्जित किया।
7. इन राज्यों के प्रशासनिक व्यवस्था केन्द्रित थी और राज्य गढों में विभाजित। गढ़ को 84 गांवों में बाँटा गया था जिसे चौरासी के नाम से जाना जाता था। चौरासी को आगे 12 गाँवों के समूह में के रूप में बाँटा गया था जिसे बढ़ोत कहते थे ।
8. ब्राह्मणों को गोंड राजाओं से भूमि अनुदान में मिलती थी और प्रभावशाली गोंड सरदारों को राजपूतों के रूप में पहचान प्राप्त करने की इच्छा हुई ।

अहोम

1. आदिवासी समुदाय जिसने वर्तमान असम के क्षेत्र में एक राज्य की स्थापना की।
2. असम नाम शायद अहोम शब्द से निकला है।
3. अहोम 13वीं शताब्दी में बर्मा (म्यांमार) से असम आए थे, जिसे पहले कामरूपके नाम से जाना जाता था। उन्होंने 16वीं शताब्दी में चुटियो, कोच-हाजो के राज्यों पर कब्जा कर लिया।

4. अहोम इतने शक्तिशाली थे कि उन्होंने स्थानीय शासकों को हराकर अपने क्षेत्र का विस्तार किया। उन्होंने मुगलों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। औरंगजेब अहोम राजधानी गढ़गांव को जीतने में कामयाब रहा, लेकिन लंबे समय तक अपने नियंत्रण में नहीं रख पाया।
5. रुद्र सिंह सबसेशक्तिशाली अहोम शासक थे। उन्होंने 1696 से 1714 तक शासन किया। उन्होंने और बाद के शासकों ने 'बुरंजी' नामक ऐतिहासिक कृति को पहले अहोम भाषा तथा बाद में असमिया भाषा में संकलित करवाया ।
6. अहोम राज्य जबरन मजदूरी पर निर्भर था और काम करने के लिए मजबूर लोगों को 'पाइक्' कहा जाता था। हर गांव को बारी बारी से 'पाइक्' भेजने होते थे।
7. प्रशासन केंद्रीकृत था। सभी वयस्क पुरुष युद्ध के दौरान सेना में और दूसरे समय में बांध सिचाई व अन्य सार्वजनिक कार्यों में जुटे रहते थे। समाज कुलों या 'खेत्र' में बंटा हुआ था। खेत्र कई गांवों को नियंत्रित करते थे ।
8. अहोम ने शुरू में आदिवासी देवताओं की पूजा की लेकिन बाद में ब्राह्माणों का प्रभाव बढ़ गया और सिब सिंह के साम्राज्य में हिंदू धर्म का प्रचलन हो गया। संस्कृत के महत्तवपूर्ण कृतियों का स्थानीय भाषा में अनुवाद किया गया।

निष्कर्ष

धीरे-धीरे वर्ण आधारित समाज और जनजातीय लोग एक दूसरे के संपर्क में आए। बहुतों ने समय के साथ जाति आधारित समाज में विलय कर लिया। बाकियों ने जाति व्यवस्था और हिंदू धर्म को नकार दिया। कुछ राजनैतिक रूप से शक्तिशाली हो गए। मध्य एशिया के घास के मैदानो (स्टेपी) और थोड़ा उत्तर के वन क्षेत्रों में प्रसिद्ध पशुचारी और शिकारी संग्राहक बसे हुए थे। उनको मंगोल के नाम से जाना जाता था। १२०६ तक चंगेज खान ने मंगोल और तुर्की जन-जातियों को एक शक्तिशाली सैन्य बल में एकजुट किया था। 1227 में उनकी मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारियों ने रूस, पूर्वी यूरोप, चीन और पश्चिम एशिया तक शासन किया।

प्रमुख प्रश्न

1. 'चौरासी' का एक समूह था

   क) 84 गाँव ख) 24 गाँव ग) 85 गाँव घ) 804 गाँव

2. अहोम की राजधानी थी

   क) भोपाल ख) राँची ग) गढ़गाँव घ) शिलाँग।

3. अहोम कौन थे?वे कहाँ के मूलनिवासी थे ?

4. रानी दुर्गावती और झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई में आपको क्या समानताएँ मिलती हैं?

5. जिन देशों में मंगोलों ने शासन किया, उनका नाम बताएँ।

कार्यपत्रक संख्या:-20

विद्यार्थी का नाम _____

ईश्वर से अनुराग

शिक्षण अधिगम

1. उन कारकों का विश्लेषण करते है जिनके कारण नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों (भक्ति और सूफी) का उद्भव हुआ।
2. भक्ति और सूफी संतों के काव्यों मे कही बातों से मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को समझने का प्रयास करते है।
3. भक्ति या सूफी संतों से जुड़े पास की दरगाह/गुरुद्वारे/मंदिर में संतों/भजनों, कीर्तनों या कव्वालियों/यात्राओं की कविताओं के उपयोग के माध्यम से नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों के उद्भव में योगदान देने वाले कारकों के साथ जुड़ें और विभिन्न धर्मों के बुनियादी सिद्धांतों पर चर्चा करें

नए शब्द

1. **अद्वैत: व्यक्तिगत आत्मा और परमात्मा की एकता।**
2. **विशिष्टाद्वैत : परमात्मा के साथ एकजुट होने पर भी आत्मा की अपनी पहचान ।**
3. **संगम साहित्य: सामान्य सन की पूर्व शताब्दियों में रचित तमिल साहित्य की सबसे पुरानी कृति।**

मानचित्र में वर्णित आंदोलनों और दार्शनिकों का परिणाम था कि 7 से 9 वीं शताब्दी में दक्षिण भारत में एक नई तरह की भक्ति की शुरुआत हुई

नयनार	**आलवार**
वे शिव को समर्पित संत थे	वे विष्णु को समर्पित संत थे

ये संत सभी जातियों से आए थे, जिनमें पुलेया और पनार जैसे 'अछूत' माने जाते थे। उन्होंने बौद्धों और जैनों की कड़ी आलोचना की. उन्होंने शिव या विष्णु के प्रति प्रबल प्रेम को संगम साहित्य में मुक्ति का मार्ग बताया. उन्होंने भक्ति को महत्त्व दिया और गाँवों में स्थानीय देवी-देवताओं की प्रशंसा में उत्तम कविताओं को संगीतबद्ध करते थे। ये घुमक्कड़ साधु संत थे ।

- वीरशैव आंदोलन की शुरुआत बसवन्ना और उनके साथियों जैसे अल्लम्माप्रभु और अक्कमहादेवीने की थी.
- यह आंदोलन 12वीं शताब्दी के मध्य में कर्नाटक में शुरू हुआ था।
- वे कर्मकांडों और मूर्ति पूजा के सभी रूपों के खिलाफ थे।

- 11वीं शताब्दी में तमिलनाडु में जन्मे रामानुजअलवारों से काफी प्रभावित थे।
- उनके अनुसार मोक्ष प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन विष्णु की तीव्र भक्ति के माध्यम से था।
- उन्होंने विशिष्टाद्वैत के सिद्धांत को प्रतिपादित किया जिसके अनुसार परमात्मा आत्मा के साथ एकजुट होते हुए भी अलग सत्ता बनाए रखती है।

दार्शनिक शंकर का जन्म 8वीं शताब्दी में केरल में हुआ था। वह अद्वैतवाद के समर्थक थे जिसके अनुसार जीवात्मा और परमात्मा दोनों एक ही है। वह संसार को भ्रम या माया मानते थे और उपदेश देते थे कि मोक्ष प्राप्ति के लिए ज्ञान का मार्ग अपनाना चाहिए।

प्रमुख प्रश्न

1. निम्नलिखित का मिलान करे

क. वीरशैव आंदोलन	1. तमिलनाडु
ख. शंकर	2. कर्नाटक
ग. रामानुज	3. केरल

2. नयनार _____ को समर्पित थे।
3. आलवार _____ के प्रति समर्पित थे।
4. अपने माता पिता की मौजूदगी मे अपने घर के पास किसी संत से बात करे और उनके रहने के तरीके के बारे में लिखें ।

   क. वे किस भगवान की पूजा करते हैं? ख. वे क्या खाते हैं?

   ग. वे कैसे प्रार्थना करते हैं? घ. वे कब उठते व सोते हैं?

कार्यपत्रक संख्या:-21

विद्यार्थी का नाम _____

ईश्वर से अनुराग

शिक्षण अधिगम

1. उन कारकों का विश्लेषण करते है जिनके कारण नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों (भक्ति और सूफी) का उद्भव हुआ।
2. भक्ति और सूफी संतों के काव्यों मे कही बातों से मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को समझने का प्रयास करते है।
3. भक्ति या सूफी संतों से जुड़े पास की दरगाह/गुरुद्वारे/मंदिर में संतों/भजनों, कीर्तनों या कव्वालियों/यात्राओं की कविताओं के उपयोग के माध्यम से नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों के उद्भव में योगदान देने वाले कारकों के साथ जुड़ें और विभिन्न धर्मों के बुनियादी सिद्धांतों पर चर्चा करें

प्रिय छात्रो आपने गाँधी जी का प्रिय गीत सुना होगा। इस गीत को नरसी मेहता ने लिखा है। गीत इस तरह से है:

वैष्णव जन तो तेने कहिये,जे पीड परायी जाणे रे ।
पर दुःखे उपकार करे तो, ये मन अभिमान न आणे रे ॥
॥ वैष्णव जन तो तेने कहिये..॥
सकल लोकमां सहुने वंदे,निंदा न करे केनी रे ।
वाच काछ मन निश्चल राखे,धन धन जननी तेनी रे ॥
॥ वैष्णव जन तो तेने कहिये..॥
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी,परस्त्री जेने मात रे ।

जिह्वा थकी असत्य न बोले,परधन नव झाले हाथ रे ॥
॥ वैष्णव जन तो तेने कहिये..॥
मोह माया व्यापे नहि जेने,दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे ।
रामनाम शुं ताली रे लागी,सकल तीरथ तेना तनमां रे ॥
॥ वैष्णव जन तो तेने कहिये..॥
वणलोभी ने कपटरहित छे,काम क्रोध निवार्या रे ।
भणे नरसैयो तेनुं दरसन करतां,कुल एकोतेर तार्या रे ॥
॥ वैष्णव जन तो तेने कहिये..॥
वैष्णव जन तो तेने कहिये,जे पीड परायी जाणे रे ।
पर दुःखे उपकार करे तो ये,मन अभिमान न आणे रे ॥
लेखक: नरसी मेहता (यूट्यूब के माध्यम से पूरे गीत को जानने की कोशिश)

यह गीत गुजराती भाषा में है जो मानवतावादी विचारों पर जोर देता है। इस मानवतावादी विचार की उत्पत्ति महाराष्ट्र के संतों से हुई है।

13वी से17वीं शताब्दी मे महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ और तुकाराम जैसे बड़ी संख्या में संत कवियों को देखा गया। सखुबाई जैसी महिलाएं भी शामिल थे ।

वे भक्ति की क्षेत्रीय परंपरा में विश्वास करते थे, जो पंढरपुर में विट्ठल (विष्णु का एक रूप) मंदिर के साथ-साथ सभी लोगों के दिलों में रहने वाले व्यक्तिगत भगवान की धारणा पर केंद्रित था। उन्होंने सभी प्रकार के अनुष्ठानों,पवित्रता के ढोंग प्रदर्शन और जन्म के आधार पर सामाजिक मतभेदों को अस्वीकार कर दिया । यहाँ तक कि उन्होंने सन्यास के विचार को अस्वीकार कर दिया और जरूरतमंद साथी मनुष्यों की विनम्रतापूर्वक सेवा करते हुए अपने परिवारों के साथ रहना पसंद किया। नाथपंथी,सिद्ध और योगी उन्होंने संसार के त्याग का समर्थन किया। उनके लिए निराकार परमसत्य का चिंतन मनन ही मोक्ष का एकमात्र मार्ग है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए उन्होने योगासन, श्वास अभ्यास और ध्यान जैसी क्रियाओं के माध्यम से मन और शरीर के प्रशिक्षण पर बल दिया।

प्रमुख प्रश्न

1. संतों के बारे में लिखिये।

2. आपके अनुसार भगवान का स्थान लोगों के हृदय में या किसी मंदिर में होना चाहिए ?

3. क्या दूसरों की मदद करना या अनुष्ठानों में लिप्त होना ज्यादा जरूरी है ?

4. क्या महाराष्ट्र के भक्ति संतों ने लोगों के बीच जन्म आधारित विभाजन का समर्थन किया?

कार्यपत्रक संख्या:-22

विद्यार्थी का नाम _____

ईश्वर से अनुराग

शिक्षण अधिगम

1. उन कारकों का विश्लेषण करते है जिनके कारण नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों (भक्ति और सूफी) का उद्भव हुआ।
2. भक्ति और सूफी संतों के काव्यों मे कही बातों से मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को समझने का प्रयास करते है।
3. भक्ति या सूफी संतों से जुड़े पास की दरगाह/गुरुद्वारे/मंदिर में संतों/भजनों, कीर्तनों या कव्वालियों/यात्राओं की कविताओं के उपयोग के माध्यम से नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों के उद्भव में योगदान देने वाले कारकों के साथ जुड़ें और विभिन्न धर्मों के बुनियादी सिद्धांतों पर चर्चा करें

नए शब्द

1. **दंडमोचन - भगवान से क्षमा प्राप्त करने के लिए चर्च को दिया गया दान।**
2. **एकेश्वरवाद - एक भगवान में विश्वास।**
3. **रहस्यवादी - कुछ रहस्य वाले**

सलीम, शिवम, सुखविंदर कौर और सोफी चार अच्छे दोस्त हैं। आज वे सोफी के घर पर क्रिसमस पार्टी में शामिल होने गए हैं। सांता क्लॉज ने उन्हें कई उपहार दिए। सभी बच्चे आनंद ले रहे हैं और मस्ती कर रहे हैं। देखते हैं कि वे क्या बात कर रहे हैं।

सोफी-मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि हम सब हमेशा दोस्त बने रहें। मेरी माँ कहती हैं कि बच्चे मासूम होते हैं और भगवान को बहुत प्रिय होते हैं। भगवान हमेशा बच्चों को क्षमा करते हैं। लेकिन आप जानते है पहले के दिनों मे ,भगवान परमेश्वर से क्षमा प्राप्त करने के लिए चर्च को दान देना पड़ता था । लेकिन मार्टिन लूथर (1483-1546) ने इस दंडमोचन प्रथा का विरोध किया था। उन्होंने ईसाइयों की पवित्र पुस्तक 'बाइबिल' के प्रचार के लिए स्थानीय भाषा का उपयोग करने के लिए भी प्रोत्साहित किया।

सलीम-ओह! सच में? मैं मुस्लिम धर्म से ताल्लुक रखता हूँ और हम भी एकेश्वरवाद में विश्वास करते हैं। 8वी और 9 वीं शताब्दी में धार्मिक विद्वानों ने पवित्र कानून (शरीयत) विकसित किया। हमारी पवित्र पुस्तक 'कुरान' है। धीरे - धीरे इस्लाम और जटिल हो गया। सूफियों ने एक अतिरिक्त आयाम प्रदान

किया जो भगवान के प्रति अधिक व्यक्तिगत भक्ति का पक्षधर था।

सिमरनकौर- बहुत दिलचस्प! हमें सूफीवादके बारे में कुछ और बताएँ।

सलीम- हाँ ज़रूर, सूफी मुस्लिम रहस्यवादी थे। उन्होंने परमेश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति, सभी साथी प्राणियोके प्रति करुणा पर बल दिया. मध्य एशिया के महान सूफियों में गज़्ज़।ली, रूमी और सादी थे। उन्होंने ज़िक्र (नाम का जप),चिंतन, समा (गायन), रक्स (नृत्य),नीति चर्चा, साँस नियंत्रण आदि का उपयोग करके प्रशिक्षण के विस्तृत तरीके विकसित किए।

शिवम-मुझे याद है एक बार मेरे माता-पिता आशीर्वाद लेने अजमेर शरीफ गए थे क्योंकि मैं अक्सर बचपन में बीमार पड़ जाता था। लोगों को लगता है कि सूफियों के पास बीमारियों और लोगों की परेशानियों को ठीक करने की जादुई शक्ति है। यही कारण है कि सूफी संतों की दरगाह पर सभी धर्मों के लोगों की भीड़ उमड़ती है।

सलीम-चिश्ती सिलसिला सबसे प्रभावशाली सिलसिलों में से एक था। उदाहरण के लिए अजमेर के ख्वाजा मुइनुद्दीनचिश्ती, दिल्ली के कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी और गुलबर्गा के बंद।नवाज गिसुदराज।

सोफी-यह इतना अच्छा है कि आज हमे इतनी सारी नई बातें पता चली है। चलो ! क्रिसमस के रात्रिभोज के लिए चलते हैं, माँ हम सभी का इंतज़ार कर रही है।

प्रमुख प्रश्न

1. मुस्लिम विद्वानों ने _____ नामक एक पवित्र कानून विकसित किया।

2. सूफीवाद में प्रशिक्षण के मुख्य तरीके क्या थे?

_____

_____

_____

3. ईसाई धर्म में महत्तवपूर्ण बदलाव लाने वाले नेता का नाम बताए।

_____

_____

_____

4. क्या आपने फिल्म 'जोधा अकबर' का एक सूफी गाना 'ख्वाजा मेरे ख्वाजा' गाना सुना है? यू ट्यूब से पूरा गाना सुनने की कोशिश करें और बताएँ कि आपको कैसा लगा?'

_____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या:-23

विद्यार्थी का नाम _____

ईश्वर से अनुराग

शिक्षण अधिगम

1. उन कारकों का विश्लेषण करते है जिनके कारण नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों (भक्ति और सूफी) का उद्भव हुआ।
2. भक्ति और सूफी संतों के काव्यों मे कही बातों से मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को समझने का प्रयास करते है।
3. भक्ति या सूफी संतों से जुड़े पास की दरगाह/गुरुद्वारे/मंदिर में संतों/भजनों, कीर्तनों या कव्वालियों/यात्राओं की कविताओं के उपयोग के माध्यम से नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों के उद्भव में योगदान देने वाले कारकों के साथ जुड़ें और विभिन्न धर्मों के बुनियादी सिद्धांतों पर चर्चा करें

निम्नलिखित श्लोक को संस्कृत में पढ़ने का प्रयास करें -

"उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः!
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः !"

हिन्दी में अर्थ

कोई भी काम सिर्फ सोचने से नहीं होता ,बल्कि परिश्रम से होता है । जैसे सोते हुए शेर के मुँह में हिरण स्वयं प्रवेश नहीं करता है।

प्र॰ किस भाषा (संस्कृत/हिन्दी) में आपने उपरोक्त श्लोक को आसानी से समझ लिया?

उत्तर _____

_____

_____

धर्म को सभी तक पहुचाने के लिए तुलसीदास, शंकरदेव, दादूदयाल, रविदास और मीराबाई ने भगवान के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त करने के लिए स्थानीय भाषाओं का उपयोग किया।

मीराबाई

कृष्ण भक्त। उनका जन्म राजस्थान के राजपूत शाही परिवार में हुआ था। उन्होने अपनी तीव्र भक्ति व्यक्त करते हुए असंख्य भजनों की रचना की । उनके गीतों ने उच्च जाति के मानदंडों को खुले तौर पर चुनौती दी.

दादू दयाल

वे मीराबाई की तरह राजस्थान से थे। वे स्थानीय भाषा में गीतों और भजनों के माध्यम से भक्ति दिखाने की परंपरा से ताल्लुक रखते थे ।

कबीर

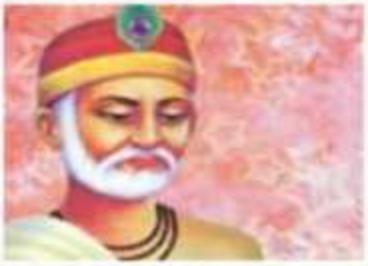

वह शायद 15वीं -16वीं सदी में थे । उन्हें बनारस शहर के पास बसे मुस्लिम बुनकरों के परिवार ने पाला पोसा था। 'साखी' और पदों से उनके श्लोकों को गुरु ग्रंथ साहिब, पंचवाणी और बीजक में संरक्षित किया गया है। वह निराकार परमेश्वर में विश्वास करते थे । हिंदु और मुसलमान दोनों ही उनके अनुयायी थे।

सूरदास

सूरदास कृष्ण के प्रबल भक्त थे। उनकी रचनाएँ सूरसागर, सुरसारावली, साहित्य लहरी थीं।

तुलसीदास

इन्होने अवधी में लिखी गई 'रामचरितमानस' की रचना की। इन्होंने राम के रूप में भगवान की कल्पना की।

शंकरदेव

शंकरदेव ने विष्णु के प्रति भक्ति पर जोर दिया, नामघरों की स्थापना की या (कविता पाठ और प्रार्थनागृह) की स्थापना की। उन्होंने असम के सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास को बनाने में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रमुख प्रश्न

1. अपने घर में आप अपनी मातृभाषा या कौन सी अन्य भाषा में बोलने मे आनंद लेते है?

2. अपनी मातृभाषा में किसी भी प्रार्थना की कुछ पंक्तियाँ लिखने का प्रयास करिए।

3. सूरदास द्वारा रचित पुस्तकों का नाम लिखें ।

4. मीराबाई कबीर की शिष्या बनीं । इसके माध्यम से समाज को क्या सकारात्मक संदेश मिलता है ?

कार्यपत्रक संख्या:-24

विद्यार्थी का नाम _____

ईश्वर से अनुराग

शिक्षण अधिगम

1. उन कारकों का विश्लेषण करते है जिनके कारण नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों (भक्ति और सूफी) का उद्भव हुआ।
2. भक्ति और सूफी संतों के काव्यों मे कही बातों से मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को समझने का प्रयास करते है।
3. भक्ति या सूफी संतों से जुड़े पास की दरगाह/गुरुद्वारे/मंदिर में संतों/भजनों, कीर्तनों या कव्वालियों/यात्राओं की कविताओं के उपयोग के माध्यम से नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों के उद्भव में योगदान देने वाले कारकों के साथ जुड़ें और विभिन्न धर्मों के बुनियादी सिद्धांतों पर चर्चा करें

आज सुखविंदर कौर अपने परिवार के साथ सामान की पैकिंग करने में व्यस्त हैं क्योंकि वे अमृतसर(पंजाब) में स्वर्ण मंदिर(हरमंदर साहिब)का दौरा करने जा रही हैं। अमृतसर को पहले रामदासपुर शहर के नाम से जाना जाता था। दिल्ली से अमृतसर के लिए वे ट्रेन से जा रहे हैं । दिल्ली से अमृतसर 451.9 किमी दूर है। सुखविंदर वहाँ पहली बार जा रही हैं। वह वहाँ जाने के लिए बहुत उत्साहित है । वह अपने धर्म के संदर्भ में इसके महत्त्व के बारे में अधिक जानना चाहती है । उसके माता-पिता ने सिख धर्म और गुरुनानक देव के बारे में कई जानकारियाँ दी। यहां कुछ महत्तवपूर्ण बातें हैं जो उनके पिता ने बताई ।

बाबा गुरु नानक का जन्म पाकिस्तान के तलवंडी (ननकाना साहिब) में हुआ था।

- उन्होंने करतारपुर (रावी नदी पर डेरा बाबा नानक) में एक केंद्र की स्थापना की ।
- जाति, पंथ या लिंग के विभिन्नताओ के बावजूद उनके अनुयायियों ने आम रसोई घर(लगर) में एक साथ खाया। बाबा गुरु नानक ने पूजा और धार्मिक कार्यों के लिए धर्मस्थल बनाया। इसे गुरुद्वारे के नाम से जाना जाता है।
- 1539 में उनकी मृत्यु से पहले बाबा गुरु नानक ने 'लहंदा' को उत्तराधिकारी चुना जो कि गुरु अंगद के नाम से जाने जाते थे ।
- गुरु अंगद ने बाबा गुरु नानक की रचना संकलित की, जिसमें उन्होंने अपनी कृतियाँ भी जोड़ दी। यह संग्रह गुरुमुखी के नाम से जानी जाने वाली एक नई लिपि में लिखा गया ।

- गुरु अंगद के तीन उत्तराधिकारियों नेभी"नानक" के नाम से अपनी रचनाए लिखीं और उनकी सारी रचनाये गुरु अर्जन देव ने 1604 में संग्रहित की।
- इस संकलन मे शेख फरीद, संत कबीर, भगत नामदेव और गुरु तेग बहादुर जैसे अन्य सूफियों, संतो और गुरूओं की रचनाओं को भी जोड़ा गया।
- 1706 में इस संकलन को गुरु तेग बहादुरके पुत्र और उत्तराधिकारी गुरु गोबिंद सिंह द्वारा प्रमाणित किया गया था।
- इसे सिखों के पवित्र ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में जाना जाता है।
- स्वर्ण मंदिर' वह जगह है जहा इस पवित्र ग्रंथ को रखा जाता है और पूजा की जाती है इसीलिए यह सिखों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है।
- गुरु नानक देव ने अपनी शिक्षाओं मे नाम, दान और इनसान शब्द का इस्तेमाल किया जिसका वास्तव में अर्थ है सही पूजा, दूसरों का कल्याण और आचार विचार की शुद्धता ।

प्रमुख प्रश्न

1. स्वर्ण मंदिर किस राज्य में है?

2. सिक्खों के पूजा स्थल को ----------. के नाम से जाना जाता है

3. आपको किसी भी लंगर में खाने में किन चीजों का आनंद मिलताहै?

4. क्या आपने कभी कोई दान किया है ? अपने अनुभव साझा करें।

कार्यपत्रक संख्या:-25

विद्यार्थी का नाम _____

क्षेत्रीय संस्कृतियों का निर्माण

शिक्षण अधिगम

मध्ययुगीन काल के दौरान समाज में होने वाले बदलावों पर चिंतन करना और आज के समय से इसकी तुलना करना

आज स्कूल परिसर में बहुत हलचल है। सभी विद्यार्थी और शिक्षक एक भव्य शो के लिए स्कूल और स्टेज को सजाने में व्यस्त हैं। कुछ प्रख्यात शास्त्रीय नर्तक विभिन्न शास्त्रीय नृत्य रूपों को दिखाने के लिए आ रहे हैं। वे अलग अलग तरह की पोशाक ,आभूषण और मेकअप पहने हुए हैं । छात्र उनकी वेशभूषा और प्रदर्शन की भव्यता को देखकर मंत्रमुग्ध हो रहे हैं। कत्थकली नृत्य कलाकारों के जीवंत रंगों को देखने पर विद्यार्थीयों ने याद किया कि उन्होंने अपने सामाजिक विज्ञान कक्षा में इसके बारे में क्या सीखा है।

1) 'कत्थकली' नृत्य केरल का है।
2) 9 वीं शताब्दी में महोदयपुरम में यहाँ 'चेरा' राज्य का गठन किया गया था।
3) यहां 'मलयालम' भाषा बोली जाती है।
4) राजाओं ने अपने लेखन में मलयालम भाषा का इस्तेमाल किया.
5) करीब 12वीं शताब्दी में मलयालम की पहली साहित्यिक कृति संस्कृत भाषा की ऋणी हैं।
6) केरल का मंदिर रंगमंच संस्कृत के महाकाव्यों पर आधारित है.
7) 14वीं शताब्दी का पाठ, व्याकरण और काव्यों को दर्शाने वाला "लीलातिलकम", "मणिप्रवालम" शैली में लिखा गया है -जिसका अर्थ है "हीरा और मूंगा " जो दो भाषाओं, संस्कृत और क्षेत्रीय

भाषाओं का उल्लेख करते हैं ।

आकर्षिका इस स्कूल में छात्रा हैं और ओडिशी डांस की विद्यार्थी हैं । उसने अपने दोस्तों से कहा कि -

1) ओड़िशी नृत्य ओडिशा (पहले उड़ीसा के नाम से जाना जाता है) से है ।
2) यह ओडिशा के पुरी में भगवान जगन्नाथ (जिसका अर्थ है दुनिया का भगवान, विष्णु का नाम) की स्तुति में किया जाता है।
3) स्थानीय आदिवासी लोग देवता की लकड़ी की छवि बनाते हैं जो यह बताता है कि देवता मूल रूप से एक स्थानीय भगवान थे, जिन्हे बाद में विष्णु के रूप में पहचाना गया।
4) 12वीं शताब्दी में, गंग राजवंश के सबसे महत्वपूर्ण शासकों में से एक, अनंत वर्मन ने पुरी में पुरुषोत्तम जगन्नाथ के लिए एक मंदिर बनवाने का फैसला किया।

रमन "कत्थक" और "कत्थकली" नाम के बीच उलझन में थी। फिर कत्थक नृत्यांगना ने सभी को बताया कि -

1) कत्थक 'कथा' शब्द से लिया गया है,जो संस्कृत और अन्य भाषाओं में कहानी के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द है।
2) कत्थक मूल रूप से उत्तर भारत के मंदिरों में कथाकारों की जाति थी।
3) कत्थक भक्ति आंदोलन के प्रसार के साथ 15 वीं और 16वीं शताब्दी में नृत्य की एक अलग विधा के रूप में विकसित होने लगा।
4) राधा-कृष्ण की पौराणिक कहानियों को लोक नाटकों में प्रस्तुत किया गया जिसे ' रास लीला ' कहा जाता था । इसमें कत्थक कथाकारों के मूल हाव भाव के साथ लोक नृत्य को संयुक्त किया गया ।
5) मुगल बादशाहों के काल में कत्थक नृत्य राज दरबार में प्रस्तुत किया जाता था ।
6) बाद में, यह दो परंपराओं या घरानों में विकसित हुआ: राजस्थान के राजदरबरों में (जयपुर) और लखनऊ में।
7) अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण में यह एक प्रमुख कला के रूप में उभरा ।
8) 1850-1875 में यह नृत्य रूप पंजाब, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, बिहार और मध्य प्रदेश में फैल गया ।

प्रमुख प्रश्न

1. निम्नलिखित का मिलान करें :

क. कत्थकली	1. उत्तर प्रदेश
ख. ओडिसी	2. केरल
ग. कत्थक	3. ओडिशा

2. 'मणिप्रवालम्' का क्या अर्थ है?

_____

_____

_____

3. क्या आपको लगता है कि एक शास्त्रीय नृत्य शारीरिक रूप से स्वस्थ रहने में मददकर सकता हैं? क्यों?

_____

_____

_____

4. अपने क्षेत्र में किसी भी पेशेवर नर्तक /नर्तकी का साक्षात्कार करें और निम्नलिखित प्रश्न पूछें

क. नाम: _____

ख. नृत्य रूप: _____

5. आप कितनी देर तक अभ्यास करते हैं?

6. आपने इस नृत्य रूप को क्यों चुना?

7. आप अपनी शारीरिक सहनशक्ति का निर्माण करने के लिए क्या खाते हैं ?

8. क्या आप कभी प्रदर्शन करते समय नृत्य - कदम भूल जाते है?ऐसा होने पर आप कैसा अनुभव करते है?

9. आप के लिए पैसा या सफलता में से कौन सी चीज़ अधिक महत्तवपूर्णहै?

कार्यपत्रक संख्या:-26

विद्यार्थी का नाम _____

क्षेत्रीय संस्कृतियों का निर्माण

शिक्षण अधिगम

मध्ययुगीन काल के दौरान समाज में होने वाले बदलावों पर चिंतन करना और आज के समय से इसकी तुलना करना

नए शब्द

1. **चारण भाट- मध्ययुगीन काल में गायक**
2. **कांगड़ा पेंटिंग-कांगड़ा की सचित्र कला का नाम हिमाचल प्रदेश के स्थान कांगड़ा नाम पर रखा गया है।**

गतिविधि

नीचे दिए गए बॉक्स में अपने और अपने परिवार की दिनचर्या का चित्र बनाएँ । इसे अपनी पसंद के रंगों से रंगें ।

क्या आपने जो बनाया है और नीचे दिखाई गई लघु चित्र के बीच कोई समानता दिखती है?

लघुचित्र (जैसा कि उनके नाम से पता चलता है)छोटे आकार के चित्र हैं, जो आम तौर पर कपड़े या कागज पर जल रंगो से बनाए जाते हैं। सबसे शुरुआती लघुचित्र ताल पत्रों या लकड़ी की तख्तियों पर किए गए थे।

पश्चिमी भारत में पाए जाने वाले इनमें से कुछ सबसे सुंदर चित्र, जैन ग्रंथों को चित्रित करने के

लिए उपयोग किए गए थे। मुगल बादशाह अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ ने अत्यधिक कुशल चित्रकारों को संरक्षण दिया जिन्होंने ऐतिहासिक दस्तावेजों और कविताओं वाली पांडुलिपियों को चित्रित किया। इन पांडुलिपियों में दरबार के दृश्य,लड़ाई या शिकार के दृश्य, और सामाजिक जीवन के अन्य पहलुओं को चित्रित किया गया था। मेवाड़,जोधपुर, बूँदी, कोटा और किशनगढ़ जैसे केंद्र में पौराणिक कथाओं और कविताओं के विषयों को दर्शाया गया ।

17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक इस क्षेत्र ने "बसोहली" नामक लघु चित्रकला की एक साहसिक और तीव्र शैली विकसित की थी।

यहाँ चित्रित होने वाला सबसे लोकप्रिय पाठ भानुदत्त की "रसमंजरी" थी। 1739 में नादिर शाह के आक्रमण और दिल्ली विजय के बाद मैदानी इलाकों की अनिश्चितताओं से बचने के लिए मुगल कलाकारों का पहाड़ियों पर पलायन हुआ। इसी के चलते कांगड़ा शैली की स्थापना हुई।

जैसे पेंटिंग अभिव्यक्ति का एक खूबसूरत तरीका रहा है उसी तरह संगीत भी हैं।19वीं शताब्दी में, वर्तमान राजस्थान के अधिकांश क्षेत्र का गठन करने वाले क्षेत्र को अँग्रेजों द्वारा राजपूताना कहा जाता था। राजपूत नायकों के बारे में कहानियाँ कविताओं और गीतों में दर्ज की गई, जिनका गायन विशेष रूप से प्रशिक्षित चारण भाटों ने किया। इन कहानियों में अक्सर नाटकीय स्थितियों और मजबूत भावनाओं की एकश्रृंखला-वफादारी, दोस्ती, प्यार, शौर्य, क्रोध आदि को दर्शाया गया ।

प्रमुख प्रश्न

1. "बसोहली" क्या है?

_____

_____

_____

2. रसमंजरी" _____ द्वारा लिखा गया है

3. भारत के किसी भी स्वतंत्रता सेनानी के जीवन को दर्शाते हुए कपड़े के एक टुकड़े पर एक लघु चित्रकला बनाने की कोशिश करें। इसे एक्रेलिक रंगों से रंग दें। सोशल मीडिया के माध्यम से अपने दोस्तों के साथ अपनी तस्वीर साझा करें।

4. भारतीय सशस्त्र बलों के सैनिकों के वीरतापूर्ण कार्यों की प्रशंसा करते हुए देशभक्ति गीत सीखें। गाते समय अपना वीडियो रिकॉर्ड करें और लिखित में अपना अनुभव साझा करें।

कार्यपत्रक संख्या:-27

विद्यार्थी का नाम _____

क्षेत्रीय संस्कृतियों का निर्माण

शिक्षण अधिगम

1. मध्ययुगीन काल के दौरान समाज में होने वाले बदलावों पर चिंतन करना और आज के समय से इसकी तुलना करना
2. स्टाइल और उदाहरण के साथ मंदिरों, कब्रों और मस्जिदों के निर्माण के लिए इस्तेमाल प्रौद्योगिकी में विशिष्ट विकास का वर्णन.

नए शब्द

1. **मंगल - काव्य -स्थानीय देवी-देवताओं के बारे में बताने वाली कविताएँ**
2. **साहसी उपनिवेशी - देवत्व प्राप्त सैनिक।**
3. **जीवात्मा - शरीर से अलग आत्मा का अस्तित्व**

निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़ने का प्रयास करें

नोमोशकार! आमार नाम सुष्मिता

(नमस्कार मेरा नाम सुष्मिता है)

आमार बाड़िकोल्कताय आशे।

(मेरा घर कोलकाता में है)

क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि मैंने कौन सी भाषा लिखी है

उत्तर ----------

मुझे आशा है कि आपने इसका सही अनुमान लगाया । यह बांग्ला है । किसी भाषा की एक खास लिपि होती है। नीचे आप बंगाली रामायण की पहली पांडुलिपि देख सकते हैं।

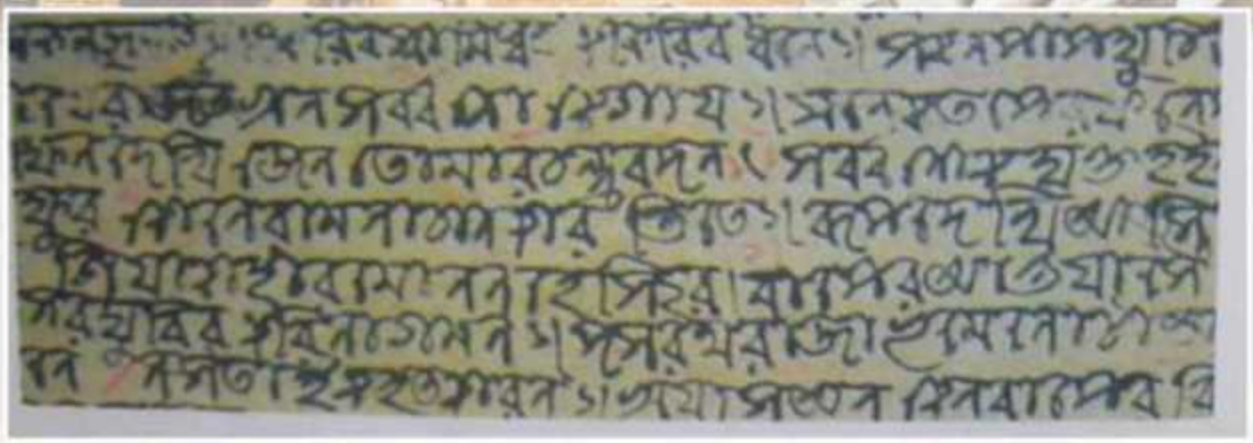

बंगाली को संस्कृत से प्राप्त भाषा के रूप में पहचाना जाता है । प्रारंभिक बंगाली साहित्य को दो श्रेणियों में बाँटा गया है 1) संस्कृत का ऋणी 2) संस्कृत से स्वतंत्र

सबसे पहले संस्कृत महाकाव्यों का अनुवाद, 'मंगलकाव्य'और भक्ति साहित्य जैसे वैष्णव भक्ति आंदोलन के नेता चैतन्यदेव की जीवनी शामिल हैं।

दूसरे श्रेणी में नाथ साहित्य शामिल है जैसे मैनामती और गोपीचंद्र के गीत, धर्म ठाकुर की पूजा से संबंधित कहानियां और परियों की कहानियाँ, लोक कथाएँ और गाथा गीत शामिल हैं ।

पीर और मंदिर

पीर एक फारसी शब्द है जिसका अर्थ है आध्यात्मिक मार्गदर्शक। इस शब्द में संत या सूफियों और अन्य धार्मिक व्यक्तित्व, साहसी उपनिवेशवादियों और देवत्व प्राप्त सैनिक, विभिन्न हिंदु और बौद्ध देवताओं और यहाँ तक कि जीवात्माओं को भी शामिल किया गया था। पीरों का पंथ बहुत लोकप्रिय हो गया और उनके धार्मिक स्थल बंगाल में हर जगह पाए जा सकते हैं।

बंगाल में मंदिरों का निर्माण

बंगाल ने 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से एक मंदिर निर्माण की होड़ देखी, जिसका समापन 19वीं शताब्दी के अंत में हुआ। बंगाल में कई मामूली ईंट और मिट्टी गारे से बने मंदिरों का निर्माण कोलू(तेली) और कंसारी (घंटा धातु के कारीगर) जैसे कई "काम" सामाजिक समूहों के समर्थन से किया गया था।

इन मंदिरों की आकृति बंगाल के छप्परदार झोपड़ियों की तरह दोचाला (दोहरी छत) या "चौचाला "(चार छतवाली) संरचना की तरह थी।

मंदिरों को आमतौर पर एक वर्ग चबूतरे में बनाया गया था। भीतरी भाग अपेक्षाकृत सादा था, लेकिन कई मंदिरों की बाहरी दीवार को चित्रों, सजावटी टाइल्स या मिट्टी की पट्टियों से सजाया गया था। पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले के विष्णुपुर के मंदिरों की सजावट उच्च स्तर की थी ।

प्रमुख प्रश्न

1. निम्नलिखित का मिलान करें :

क. चैतन्यदेव	1. दो छत
ख. पीर	2. वैष्णव भक्ति आंदोलन
ग. दोचाला	3. चार छ
घ. चौचला	४. एक फारसी शब्द

2. पीर एक व्यापक शब्द है, इस शब्द में क्या- क्या शामिल हैं?

_____

_____

_____

3. उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और मध्य भारत के किसी भी एक राज्य का चयन करें। इन 5 राज्यों में बोली जाने वाली मुख्य भाषा की सूची बनाएं।

_____

_____

_____

4. अपने घर के पास एक मंदिर पर जाएँ और इसके बारे में लिखें इसकी संरचना, सजावट, देवताओं की पूजा विधि की और किसी भी अन्य विशिष्टता का वर्णन करें।

_____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या:-28

विद्यार्थी का नाम _____

अठारहवीं शताब्दी मे नए राजनीतिक गठन

नई राजनीतिक शक्तियों का उदय

शिक्षण अधिगम

1. विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करते है। बाद के मुगल औरंगजेब के बाद
2. मध्य-काल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्तवपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़कर देखते है।

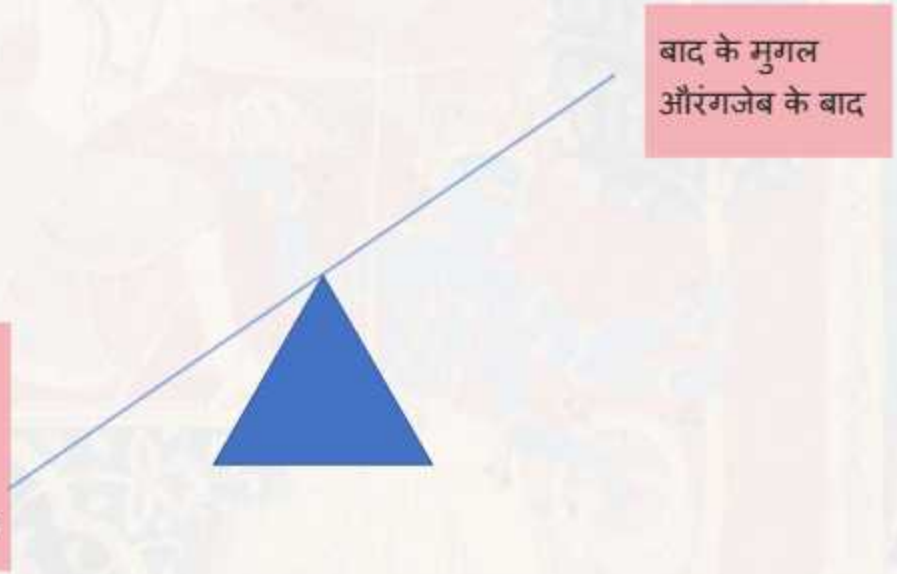

आप सभी ने एक झूले में खेला होगा । जब दो लोग इसके दोनों ओर बैठे होते हैं तो आपने देखा होगा कि भारी बच्चा नीचे जाता है और ज़मीन को छू पाता है। हल्का बच्चा ऊपर जाता है और जमीन को पकड़ नहीं पाता है। इसी तरह 1707 में औरंगजेब के निधन के बाद मुगल साम्राज्य अपनी शक्तियों में हल्के

हो गए। औरंगज़ेब अंतिम सबसे अधिक शक्तिशाली मुगल शासक था। उसके बाद के मुगल शासकों को विभिन्न प्रांतों पर अपनी पकड़ खोनी पड़ी। अन्य राजनीतिक संगठन सत्ता में भारी पड़ गए और मुगल साम्राज्य को हड़प लिया।

ऐसे कई कारण हैं जिससे मुगल साम्राज्य ने सत्ता खो दी, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं -

1) सम्राट औरंगजेब ने दक्कन में एक लंबा युद्ध लड़कर अपने साम्राज्य के सैन्य और वितीय संसाधनों को समाप्त कर दिया था।

2) सूबेदार के रूप में नियुक्त अभिजात जो अक्सर राजस्व और सैन्य प्रशासन (दिवानीऔर फौजदारी) पर नियंत्रण रखते थे भ्रष्ट हो गए थे ।

3) इस आर्थिक और राजनीतिक संकट के बीच ईरान के शासक नादिर शाह ने1739 में दिल्ली पर आक्रमण किया और अपार मात्रा में धन लूट लिया। इसके बाद 1748 से 1761 के बीच पांच बार उत्तर भारत पर आक्रमण करने वाले अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली द्वारा कई बार लूटपाट की गई।

4) मुगल साम्राज्य के पतन का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण कारण फर्रुख सियार (1713-1719) और आलमगीर(1754-1759)की हत्याथी। दो अन्य बादशाहों अहमद शाह(1748-1754)और शाह आलम द्वितीय (1759-1816) को उनके अभिजातों ने अंधा कर दिया ।

प्रमुख प्रश्न

1. मुगल साम्राज्य का अंतिम सबसे शक्तिशाली शासक _____ था।

2. क्या किसी भी देश के लिए किसी भी तरह के युद्ध में शामिल होना अच्छा है? अपने जवाब के समर्थन में कारण दें।

3. निम्नलिखित का मिलान करे:

क. राजस्व प्रशासन	1. फौजदारी
ख. सैन्य प्रशासन	2. दिवानी

4. किसी भी देश के लिए मजबूत सेना की आवश्यकता क्यों है?

5. यदि आप प्रधानमंत्री होते तो आप अपने देश को मजबूत बनाने के लिए क्या कदम उठाते?

कार्यपत्रक संख्या:-29

विद्यार्थी का नाम _____

अठारहवीं शताब्दी मे नए राजनीतिक गठन

शिक्षण अधिगम

1. विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करते है। (बाद के मुगल औरंगजेब के बाद)
2. मध्यकाल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़कर देखते है।

नए शब्द

1. **वतनजागीर - राजपूत राज्य जो मुगलों द्वारा जीते जा चुके थे लेकिन कर वसूली का अधिकार स्थानीय राजाओ को देना जो कि फिर मुग़लो को चुकाया जाता था।**
2. **मनसबदार - व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सैन्य इकाई**
3. **जागीर - कुछ मनसबदारों को भूमि के माध्यम से भुगतान करना**
4. **नायब - सूबेदार के प्रतिनियुक्त**

हम सभी जानते हैं कि बंगाल 'रोशोगुल्ला, के लिए प्रसिद्ध है, हैदराबाद मोती के लिए प्रसिद्ध है,अवध को हिंदू धर्मग्रंथों में भगवान राम की जन्मस्थली के रूप में याद किया जाता है। लेकिन इन स्थानों पर कई राजनीतिक हलचल भी देखी गई है, जो मध्यकाल के अंत से हुई। मुगल साम्राज्य की जगह नए राजनीतिक गठन हुए। अठारहवीं शताब्दी में, मुगल साम्राज्य धीरे-धीरे कई स्वतंत्र राज्यों में खंडित हो गया।

1) वे राज्य जो अवध, बंगालऔर हैदराबाद जैसे पुराने मुगल प्रांत थे।

2) जिन राज्यों ने मुगलों के अधीन काफी स्वतंत्रता प्राप्त की थी, 'वतनजागीर' के रूप में। इनमें कई राजपूत राज्य शामिल थे।
3) अंतिम समूह में मराठों, सिक्खों और जाटों के नियंत्रण वाले राज्य शामिल थे ।

हैदराबाद

हैदराबाद राज्य (1724-1748) के संस्थापक निजाम-उल-मुल्क आसफ जाह, मुगल सम्राट फर्रुख-सियार के दरबार में सबसे शक्तिशाली सदस्यों में से एक थे। उन्हें पहले अवध की सूबेदारी सौंपी गई थी और बाद में दक्कन का कार्यभार दे दिया गया था। 1720-22 के दौरान आसफ जहां ने दक्कन में होने वाले उपद्रव और प्रतिस्पर्धा का लाभ उठाया । उन्होंने अपने हाथों में सत्ता ले ली और इस क्षेत्र के वास्तविक शासक बन गए। उन्होंने 'मनसबदारों' को नियुक्त किया और उन्हें 'जागीर' प्रदान की।

निजाम-उल-मुल्क

सआदत खान

अवध

बुरहान-उल-मुल्क सआदत खान को 1722 में अवध का सूबेदार नियुक्त किया गया था। अवध एक समृद्ध क्षेत्र था, जो समृद्ध जलोढ़ गंगा मैदान मे फैला हुआ था तथा उत्तर भारत और बंगाल के बीच मुख्य व्यापार मार्ग को नियंत्रित करता था।

उन्होंने मुगलों द्वारा नियुक्त अधिकारियों (जागीरदारों) की संख्या को कम करके अवध क्षेत्र में मुगल प्रभाव को कम करने की कोशिश की। उन्होंने रूहेलखंड में कई राजपूत जमींदारों और अफगानियों की कृषि उपजाऊ जमीनों को जब्त कर लिया।

बंगाल

मुर्शिद कुली खान ने मुगल साम्राज्य से बंगाल का नियंत्रण छीन लिया, उन्हें प्रांत के नायब के रूप में नियुक्त किया गया था। बंगाल में मुगल प्रभाव को कम करने के प्रयास में उन्होंने बंगाल के राजस्व का एक बड़ा पुनर्निर्धारण करने का आदेश दिया। सभी जमींदारों से बड़ी सख्ती के साथ राजस्व की वसूली की गई। इसके चलते कई जमींदारों को महाजनों

मुर्शिद कुली खान

और साहूकारों से पैसे उधार लेने पड़े। भुगतान करने में असमर्थ लोगों को बड़े जमींदारों को अपनी जमीन बेचनेके लिए मजबूर किया गया ।

तीनों प्रांतों हैदराबाद, अवध और बंगाल में राज्य के अधिकारियों पर भरोसा करने के बजाय उन्होंने राजस्व की वसूली के लिए इजारेदारों के साथ ठेके कर लिए । इजारेदारी की इस प्रथा को मुगलों ने पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया था।लेकिन अठारवी शताब्दी मे यह पूरे भारत मे फैल गई थी।

प्रमुख प्रश्न

1. निम्नलिखित का मिलान करें :

क. सदाअत खान	1. हैदराबाद
ख. मुर्शिद कुली खान	2. अवध
ग. आसफजाह	3. बंगाल

2. अवध, बंगाल और हैदराबाद ज्यादातर कर संग्रह के लिए _____ पर भरोसा करते थे

3. जब हमे पैसों की कमी होती है तब हम उधार लेने के लिए किसके पास जाते है?

_____

_____

_____

4. तीनों प्रांतों अवध ,बंगाल और हैदरबाद में कृषि भूमि बहुत अधिक महत्तवपूर्ण थी। क्या आपको लगता है कि आज के समय में भी कृषि भूमि महत्तवपूर्ण है?

_____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या:-30

विद्यार्थी का नाम _____

अठारहवीं शताब्दी मे नए राजनीतिक गठन

राजपूत

शिक्षण अधिगम

1. विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करते है। (बाद के मुगल औरंगजेब के बाद)
2. मध्यकाल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्तवपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़कर देखते है।

आइए नीचे चित्र रूप मे दिए गए राजपूत प्रांत के बारे में जानने की कोशिश करते हैं । आशा है कि आप इसे पढ़ कर आनंद लेंगे।

बाए से दाएँ पढ़े:

राजपूत

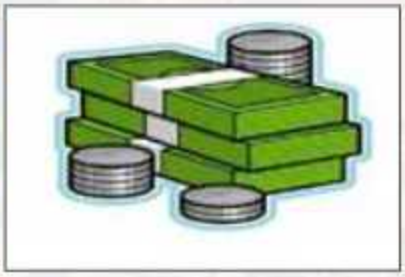

राजपूतों में से वतन जागीर नियुक्त किए जाते थे जो प्रत्येक गांव से कर वसूलते थे, जिसे बाद में वे मनसबदारों को देते थे।

विशेष रूप से अंबर और जोधपुर से, कई राजपूत राजाओं ने वतन जगीर के रूप में कार्य किया।

मनसबदार इन वसूले गए करों का भुगतान उच्चाधिकारियों को करते थे।

इन वतन जगीरों ने 18वीं सदी में आसपास के इलाकों पर अपना नियंत्रण बढ़ाने की कोशिश की थी।

मुगल दरबार में कई राजपूत राजाओं ने अपना प्रभाव बढ़ाया।

जोधपुर के शासक अजीत सिंह भी इस राजनीति में शामिल थे।

गुजरात और मालवा के अमीर प्रांतों में इन राजपूत परिवारों ने सूबेदारी के लिए दावा किया था।

गुजरात मे राजा अजीत सिंह और मालवा मे अंबर के राजा सवाई राजा जय सिंह ने राज्यपाल का पद संभाला।

नागौर में जोधपुर घराने ने और अंबर घराने ने बूंदी के एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया।

जयपुर में सवाई राजा जय सिंह ने एक नई राजधानी की स्थापना की थी।

बाद में आगरा की सूबेदारी 1722 में सवाई राजा जय सिंह को दी गई।

मराठों ने 1740 के दशक से राजस्थान मे सैनिक अभियान चलाया और राजपूतों को आगे विस्तार करने से रोक दिया ।

प्रमुख प्रश्न

1. निम्नलिखित का मिलान करें :

क. अजीत सिंह	1. अंबर
ख. सवाई राजा जय सिंह	2. जोधपुर

2. सवाई राजा जय सिंह को _____ में अपनी नई राजधानी मिली जो अब _____ राज्य की राजधानी है।

3. राजस्थान भारत की किस दिशामें स्थित है? भारत की सुरक्षा की दृष्टि से इसे आज भी महत्तवपूर्ण स्थान क्यों माना जाता है?

_____

_____

_____

4. वर्तमान में राजस्थान एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। क्या आप राजस्थान की कुछ प्रसिद्ध चीज़े बता सकते हैं जिसके लिए यह आज भी प्रसिद्ध है?

_____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या:-31

विद्यार्थी का नाम _____

अठारहवीं शताब्दी मे नए राजनीतिक गठन

सिक्ख, मराठा और जाट

शिक्षण अधिगम

1. विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करते है। (बाद के मुगल औरंगजेब के बाद)
2. मध्यकाल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़कर देखते है।

सिक्ख

सत्रहवीं शताब्दी में सिक्ख राजनीतिक समुदाय के रूप में उभरे। गुरु गोबिंद सिंह ने 1699 में खालसा की संस्था से पहले और बाद में राजपूत और मुगल शासकों के खिलाफ कई लड़ाइयां लड़ी । 1708 में उनकी मृत्यु के बाद खालसा मुगल साम्राज्य के खिलाफ उठ खड़े हुये। बंदा बहादुर के नेतृत्व में उन्होंने गुरुनानक और गुरु गोविंद सिंह के नाम पर सिक्खों को गढ़ कर अपने शासन की घोषणा की। बंदा बहादुर को 1715 में पकड़ लिया गया और 1716 में फाँसी दे दी गई।

18वीं शताब्दी में सिक्खों ने अपने आप को जत्थों मे संगठित किया और बाद में 'मिस्लों'में । उनकी संयुक्त सेनाएँ दल खालसा के नाम से जानी जाने लगीं।

'दल खालसा' बैसाखी और दिवाली के समय अमृतसर में मिलते थे ताकि सामूहिक निर्णय लिए जा सके जिसे गुरुमत्ता (गुरु के प्रस्ताव) नाम से जाना जाता है। उपज के 20 प्रतिशत कर के भुगतान पर कृषकों को सुरक्षा प्रदान करने वाली 'राखी' नामक प्रणाली शुरू की गई थी ।

खालसा ने मुगल सूबेदारों और फिर अहमद शाह अब्दाली के खिलाफ सफल प्रतिरोध किया जिन्होंने

पंजाब के अमीर प्रांत और सरहिंद की सरकार को मुगलों से जब्त कर लिया था । खालसा ने 1765 में फिर से अपना सिक्का गढ़कर अपने शासन की घोषणा की।

महाराजा रणजीत सिंह ने विभिन्न सिक्ख समूहों को फिर से एकजुट किया और 1799 में लाहौर में अपनी राजधानी की स्थापना की ।

मराठा

शिवाजी (1627-1680)ने शक्तिशाली योद्धा परिवारों (देशमुख) के समर्थन से एक स्थिर राज्य बनाया। अत्यधिक गतिशील किसान-पशुपालकों (कुनबी) के समूहों ने मराठा सेना को मुख्य आधार प्रदान किया ।

शिवाजी की मृत्यु के बाद चितपावन ब्राह्मणों ने शिवाजी के उत्तराधिकारियों को पेशवा (या प्रधान मंत्री) के रूप में सेवा दी। पूना पेशवा राज्य की राजधानी बन गई।

पेशवाओं के तहत मराठों ने एक बहुत ही सफल सैन्य संगठन विकसित किया।

मराठों द्वारा नियंत्रित क्षेत्रों के भीतर नए व्यापार मार्ग उभरे । चंदेरी क्षेत्र में उत्पादित रेशम को अब पूना में एक नया बाज़ार मिला । बुरहानपुर जिसने पहले आगरा और सूरत के बीच व्यापार में भाग लिया था, अब दक्षिण में पूना और नागपुर और पूर्व में लखनऊ, इलाहाबाद को शामिल कर लिया था ।

जाट

चुड़ामन के नेतृत्व में जाटों ने दिल्ली शहर के पश्चिम में स्थित क्षेत्रों पर नियंत्रण हासिल कर लिया । 1680 के दशक तक वे दिल्ली और आगरा के बीच के क्षेत्र में हावी होने लगे थे । जाटों में समृद्ध कृषक थे और पानीपत और बल्लभगढ़ जैसे शहर महत्तवपूर्ण व्यापारिक केंद्र बन गए थे।

सूरजमल

सूरजमल के राज्य मे भरतपुर एक मजबूत राज्य के रूप में उभरा।

जब नादिर शाह ने 1739 में दिल्ली पर हमला किया तो शहर के कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भरतपुर में शरण ली।

प्रमुख प्रश्न

1. दो प्रसिद्ध जाट शासकों के नाम बताए।

2. सिक्ख राज्य में 'राखी' प्रणाली का क्या अर्थ है?

3. चंदेरी एक प्रकार का रेशम है, क्या आप भारत में प्रसिद्ध रेशम की कुछ अन्य किस्मों का नाम बता सकते हैं।

4. पिछले अध्याय 8 में हमने पहले सिख गुरु गुरु नानक देव के बारे में पढ़ा जिन्होंने भगवान को याद करते हुए शांतिपूर्ण अस्तित्व की शिक्षा दी । लेकिन इस अध्याय में हमने कई सिक्ख गुरुओं के बारे में पढ़ा जो राजनीतिक सत्ता में पहुँचे । क्या आप सिक्खों की विचारधारा में आए इस आमूल परिवर्तन के कारण का अनुमान लगा सकते हैं?

सामाजिक और राजनीतिक जीवन

सामाजिक विज्ञान

CONSTITUTION OF INDIA

कार्यपत्रक संख्या:-01

विद्यार्थी का नाम - _____

समानता

अधिगम संप्राप्ति

लोकतंत्र में समानता का महत्त्व।

एक व्यक्ति, एक वोट, एक मूल्य क्या है?

किसी भी व्यक्ति के वोट की शक्ति क्या है?

सार्वभौम वयस्क मताधिकार समानता के विचार पर आधारित है जो किसी देश में प्रत्येक वयस्क स्त्री या पुरुष चाहे उसका आर्थिक स्तर या जाति कुछ भी क्यों न हो, उसे वोट देने का अधिकार देता है।

क्या 70 वर्ष की वृद्ध महिला को वोट देने की अनुमति दी जा सकती है?

मानवीय गरिमा का मूल्य क्या है ? कुछ लोगों के साथ असमान व्यवहार क्यों किया जाता है?

हम जिस जाति में पैदा हुए हैं, जिस धर्म का हम पालन करते हैं, जिस वर्ग की पृष्ठभूमि से हम आते हैं, चाहे हम पुरुष हों या महिला - ये अक्सर ऐसी चीजें हैं जो कई बार हमारे साथ होने वाले व्यवहार को निर्धारित करती हैं।

जब व्यक्तियों के साथ असमान व्यवहार किया जाता है, तो उनकी गरिमा को ठेस पहुँचती है।

आप मानवीय मूल्य को ठेस पहुँचाने वाले अनुभव साझा करें?

भारतीय संविधान में समानता की गारंटी -

भारतीय संविधान सभी जातियों, धर्मों, जनजातियों, शैक्षिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के पुरुष और महिला सहित प्रत्येक व्यक्ति को समान के रूप में मान्यता देता है।

क) भारतीय संविधान में समानता को बढ़ावा देने के प्रावधान।

- कानून के सामने हर व्यक्ति समान है।
- किसी भी व्यक्ति के साथ उसके धर्म, नस्ल, जाति, जन्म स्थान के आधार पर महिला या पुरुष के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता है।

- हर व्यक्ति की सभी सार्वजनिक स्थानों तक समान पहुँच है।
- अस्पृश्यता समाप्त कर दी गई है।

ख) भारत सरकार द्वारा समानता को लागू करने के तरीके।

- प्रत्येक व्यक्ति के साथ समान व्यवहार करने के अधिकार की रक्षा के लिए उपयुक्त कानून बनाना।
- वंचित समुदायों की मदद के लिए सरकारी कार्यक्रमों या योजनाओं की स्थापना करना उनके जीवन को बेहतर बनाना और वंचितों के लिए अधिक से अधिक अवसर सुनिश्चित करना।

आपको क्या लगता है कि संविधान को वर्तमान समय में और क्या आवश्यकता पूरी करनी चाहिए?

ग) सबसे बड़ी चुनौती, यह मानने के लिए रवैया बदलना है कि कोई भी हीन नहीं है और हर व्यक्ति सम्मान के साथ जीवन जीने का हकदार है। समानता का मुद्दा हमारे दैनिक जीवन के साथ-साथ पूरे समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है।

अभ्यास

प्रश्न-1 अपने समाज में आपके द्वारा देखी गई असमानताओं के विभिन्न तरीकों का असमानता के प्रकार के साथ मिलान करें।

अवसर	प्रकार
सरकारी अस्पताल में लगी लंबी कतारें	पुरुष/महिला बच्चे को वरीयता
अस्वच्छ परिस्थितियों में रहना	आय के स्रोत के रूप में बच्चे
कारखानों में काम करने वाले बच्चे	गरीब इतना महँगा इलाज नहीं करवा सकता
कक्षा में छात्राएँ कम।	स्वच्छता शिक्षा का अभाव
भीख माँगना	रोजगार के अवसरों की कमी

प्रश्न-2 असमानता की किसी भी घटना के बारे में आपका क्या अनुभव है?

_____

_____

_____

प्रश्न-3 विद्यालय में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम ने विद्यालय में विद्यार्थियों की किस प्रकार सहायता की है?

_____

_____

_____

प्रश्न-4 दिव्यांग मित्रों के लिए आवश्यक कुछ व्यवस्थाओं का सुझाव दें?

_____

_____

_____

प्रश्न-5 जब व्यक्तियों के साथ _____ का व्यवहार किया जाता है, तो उनकी गरिमा का हनन होता है।

कार्यपत्रक संख्या:-02

विद्यार्थी का नाम - _____

समानता

अधिगम संप्राप्ति

आर्थिक और सामाजिक समानता के बीच भेद।

समानता का अर्थ है सभी तरीकों और आधारों में समान।

विभिन्न प्रकार की समानता :-

राजनीतिक समानता (चयनात्मक प्रतिनिधित्व के आधार पर)

- कानून के समक्ष समानता।
- समान नागरिकता।
- मत देने का अधिकार।
- अभिव्यक्ति, आंदोलन और संघ की स्वतंत्रता। -आस्था की स्वतंत्रता।
- राज्य के मामलों में समान भागीदारी।

आर्थिक समानता (आय स्तरों के आधार पर)

- व्यक्तियों या वर्गों के बीच धन, संपत्ति और आय में अंतर।
- सबसे अमीर और सबसे गरीब के बीच अंतर।
- राजनीतिक और सामाजिक भेदभाव ही कारण है।
- गरीबी रेखा से नीचे के लोग।
- संपत्ति और शक्ति का संबंध संसाधन से है।
- व्यक्तिगत विकास से सामाजिक से अधिक प्राथमिकता दी जाती है।

सामाजिक समानता- (समाज स्तरीकरण पर आधारित)

- अवसरों की समानता
- सामाजिक वस्तुओं तक सबकी पहुँच
- निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा का समान अवसर।

- समाज के सभी वर्गों के लिए जीवन की न्यूनतम शर्तों की गारंटी।
- समुचित स्वास्थ्य देखभाल
- समान और पर्याप्त शिक्षा, पोषण और न्यूनतम मजदूरी।

अभ्यास

क्रिया के सामने समानता का प्रकार लिखें।

क्रिया	समानता प्रकार : आर्थिक, सामाजिक या राजनीतिक
प्रतिनिधि चुनने का अधिकार।	
व्यापार और उपयोग की समानता।	
व्यक्ति की प्रतिष्ठा और अवसर की समानता	
सरकार का धर्मनिरपेक्ष और निष्पक्ष रूप	
सार्वजनिक स्थानों का समान उपयोग।	
सार्वजनिक पदों पर समान अवसर।	
अस्पृश्यता एक दंडनीय अपराध है।	
सरकारी संस्थानों में समान प्रवेश	
समानता का मौलिक अधिकार सर्वोच्च है।	
आरक्षण का प्रावधान	

कार्यपत्रक संख्या:-03

विद्यार्थी का नाम - _____

समानता

अधिगम संप्राप्ति

समानता का अधिकार अपने क्षेत्र में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों की समानता की व्याख्या करता है

एक व्यक्ति के दैनिक जीवन में ऐसे कई अवसर आते हैं जब व्यावहारिक जीवन में समानता के अधिकार को चुनौती दी जाती है। निम्नलिखित कुछ उदाहरण हैं जो समाज के सभी स्तरों पर समानता के अधिकार की वास्तविक प्राप्ति में सुधार की गुंजाइश निर्धारित करते हैं।

पिछले कार्यपत्रकों से सीखे गए उपयुक्त उदाहरण के साथ समस्या के प्रकार का मिलान करें।

मुद्दा	उदाहरण
गरीबी रेखा	रिक्शा चलाने वाला हमेशा सबसे दुबला होता है।
शिशु मृत्यु दर	स्वच्छ जल आपूर्ति स्थानीय स्तर पर तय की जाती है।
शिक्षा प्राप्ति	जो लोग शहरों का कचरा साफ करते हैं वे अस्वच्छ झुग्गियों में रहते हैं।
क्षेत्रों और सामाजिक समूहों के बीच संसाधनों तक पहुँच।	गरीबी रेखा के नीचे राशन कार्ड।
सामाजिक समावेशन	लड़कियों को उच्च ग्रेड पढ़ने और पाली में काम करने की अनुमति नहीं है।

जाति और जनजाति	अमीर लोगों के पास सब कुछ बहुतायत में होता है।
आय असमानता	थाने में शिकायत करना आम आदमी के लिए मुश्किल काम है।
सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल चुनौती	सरकारी अस्पतालों में भीड़भाड़ है।
पुलिस स्टेशन, डाकघर और बैंकों जैसे सार्वजनिक स्थानों तक पहुँच।	निजी कंपनी के कर्मचारियों को एक प्रदर्शन बोनस का भुगतान किया जाता है, जबकि आकस्मिक मजदूरों को नहीं।
आय अर्जित करने वाली संपत्ति जैसे भूमि और रोजगार	हर राज्य के पास समर्थन करने के लिए अपनी जातियों और जनजातियों की एक सूची है।
महिलाओं को भेदभाव का सामना करना पड़ता है	छत्तीसगढ़ के आदिवासियों को मुख्यधारा में भागीदारी की आवश्यकता है।
खाद्य सुरक्षा	दिल्ली और अरुणाचल प्रदेश में विभिन्न प्रकार के संसाधन उपलब्ध हैं।
स्वच्छता	आदिवासी लोगों को बुनियादी शिक्षा भी नहीं मिल पाती है।
स्वच्छ पेयजल	गरीब परिवारों के कई बच्चे जन्म के तुरंत बाद मर जाते हैं।
खराब पोषण/कुपोषण	कुछ लोगों के पास खाना, कपड़ा और मकान तक नहीं है

कार्यपत्रक संख्या:-04

विद्यार्थी का नाम - _____

सरकार के स्तर

अधिगम संप्राप्ति

स्थानीय और राज्य सरकार के बीच अंतर।

राज्य सरकार विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों से निर्वाचित विधान सभा द्वारा पूरे राज्य पर शासन करती है। लोग अपने विधान सभाओं के सदस्यों का चुनाव करते हैं जिन्हें विधायक कहा जाता है। दिल्ली में 70 विधायक हैं.

स्थानीय सरकारें छोटी शासकीय निकाय होती हैं जो अपने अधिकारों को नियंत्रित करती हैं और छोटे क्षेत्रों पर शक्तियों का प्रयोग करती हैं। ये पंचायतें, परिषदें या नगरपालिकाएँ हो सकती हैं। ब्लॉक का मुखिया ब्लॉक प्रमुख होता है।

भारतीय लोकतंत्र में शासन संरचना।

जिलेवार-

शहरी

जिला परिषद या नगर निगम।

नगर पालिकाओं।

नगर परिषदें।

ग्रामीण-

ब्लॉक पंचायत समितियों के नेतृत्व में ।

ग्राम पंचायत गाँव के नेतृत्व में।

गाँव की सभा को ग्राम सभा कहा जाता है।

अभ्यास

प्रश्न-1. हमें अलग-अलग स्तरों पर अलग-अलग सरकारों की आवश्यकता क्यों है?

प्रश्न-2. दिल्ली में कितने विधायक हैं?

प्रश्न-3. आपके विधानसभा क्षेत्र का नाम क्या है?

प्रश्न-4. ब्लॉक का प्रमुख कौन होता है?

प्रश्न-5. ग्राम पंचायत गांवों या ब्लॉकों में से किसको नियंत्रित करती है?

कार्यपत्रक संख्या:-05

विद्यार्थी का नाम - _____

प्रतिनिधित्व

अधिगम संप्राप्ति

विधान सभा के चुनाव की प्रक्रिया का वर्णन करें।

आइए सातवीं कक्षा के देवांश नाम के एक लड़के और दसवीं कक्षा की उसकी बहन उज्ज्वल की बातचीत पढ़ते हैं।

देवांश : दीदी, आजकल हमारी सड़कों पर क्या शोर और नारेबाजी चल रही है?

उज्ज्वल : क्या आप नहीं जानते, हमारे राज्य में अगले महीने विधानसभा चुनाव है.

देवांश : चुनाव क्यों होते हैं दीदी और कैसे होते हैं?

उज्ज्वल : क्या आपने अपने सामाजिक और राजनीतिक जीवन के अध्याय 3 को नहीं पढ़ा है कि राज्य सरकार कैसे काम करती है?

देवांश : अभी नहीं। लेकिन हमने राज्य और स्थानीय सरकार के बारे में अध्याय 2 में पढ़ा है।

उज्ज्वल : अच्छा, तो आप जानते हैं कि राज्य सरकार हमारे चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा हमारे राज्य को चलाने के लिए बनाई जाती है।

देवांश : लेकिन यह चुनाव कैसे होता है दीदी?

उज्ज्वल : ठीक है। यह एक सरल प्रक्रिया है जिसमें दिल्ली जैसे पूरे राज्य या केंद्र शासित प्रदेश को 70 विधानसभा क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है। और उस क्षेत्र के मतदाताओं द्वारा एक प्रतिनिधि का चुनाव करना होता है जिसे विधान सभा सदस्य (एमएलए) कहा जाता है। जिस राजनीतिक दल को विधान सभा के लिए चुने गए अपने विधायकों का बहुमत मिलता है, वही सरकार बनाता है।

देवांश : लेकिन इतना शोर, सड़कों पर नारेबाजी क्यों?

उज्ज्वल : हाँ, देवांश यह चुनाव अभियान है जिसके द्वारा उम्मीदवार मतदाताओं को अपने पक्ष में वोट करने और चुनाव जीतने के लिए आकर्षित करते हैं। कभी-कभी बड़ी जनसभाओं में बड़े-बड़े वादे करके।

देवांश : दीदी! विधायक ही सरकार बनाते हैं?

उज्ज्वल : एक राजनीतिक दल जिसके विधायकों ने एक राज्य में कुल निर्वाचन क्षेत्रों की संख्या से आधे से अधिक क्षेत्रों में जीत हासिल की है, उसे बहुमत कहा जा सकता है और इसे सत्तारूढ़ दल कहा जा सकता है जो सरकार बना सकता है। अन्य सभी सदस्यों को विपक्ष कहा जाता है।

देवांश : बताएँ कि सरकार की अलग-अलग जिम्मेदारियाँ विधायक किस तरह बाँटते हैं.

उज्ज्वल : चुनाव के बाद सत्ताधारी दल के विधायक अपना नेता चुनेंगे जो राज्य का मुख्यमंत्री बनेगा. इसके बाद मुख्यमंत्री अन्य विधायकों में से अलग-अलग मंत्रियों का चयन करेंगे। यह राज्य का राज्यपाल होता है जो मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रियों की नियुक्ति करता है।

देवांश : दीदी कृपया बताएँ कि एक राज्य में विधायक और मंत्रियों की क्या जिम्मेदारियाँ हैं?

उज्ज्वल : विभिन्न सरकारी विभागों और मंत्रालयों को उनके अलग-अलग कार्यालयों को चलाने की जिम्मेदारी मुख्यमंत्री और अन्य मंत्रियों पर होती है. विधान सभा एक ऐसा स्थान है जहाँ सत्तारूढ़ दल या विपक्ष के सभी विधायक विचारों पर चर्चा करने के लिए मिलते हैं और मुद्दे से संबंधित प्रश्न पूछते हैं या सुझाव देते हैं कि सरकार को क्या करना चाहिए। जो लोग जवाब देना चाहते हैं वे जवाब दे सकते हैं और फिर संबंधित मंत्री सवालों का जवाब देते हैं और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि लोगों के लाभ के लिए पर्याप्त कदम उठाए जा रहे हैं। कुछ विधायकों पर किसी विशेष क्षेत्र के प्रतिनिधि होने के साथ-साथ किसी भी आरोप के लिए जिम्मेदार मंत्री होने की दोहरी जिम्मेदारी होती है।

अभ्यास

प्रिय छात्रों! उपरोक्त बातचीत के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास करें।

1. चुनाव या चयन द्वारा राज्य सरकार कैसे बनती है?

_____

_____

_____

2. आपके विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र का नाम क्या है?

_____

_____

_____

3. आपके क्षेत्र के विधायक कौन हैं?

_____

_____

_____

4. आपके विचार में चुनाव प्रचार के दौरान क्या बदला जा सकता है?

_____

_____

_____

5. आप क्या उम्मीद करते हैं कि विधायक को आपके क्षेत्र के लिए क्या करना चाहिए?

_____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या:-06

विद्यार्थी का नाम - _____

राज्य विधान सभा

अधिगम संप्राप्ति

राज्य / केंद्र शासित प्रदेशों के विधानसभा क्षेत्र के नक्शे पर अपने स्वयं के निर्वाचन क्षेत्र का पता लगाएँ और स्थानीय विधायक का नाम बताएँ/लिखें।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली (एनसीटीडी) की विधान सभा, जिसे दिल्ली विधानसभा के रूप में भी जाना जाता है, एनसीटीडी का एक कानून बनाने वाला निकाय है, जो भारत के 8 केंद्र शासित प्रदेशों में से एक है। यह विधान सभा (एमएलए) के 70 सदस्यों के साथ दिल्ली, एनसीटी में स्थित है।

दिल्ली विधानसभा के 70 सदस्यों का चुनाव करने के लिए 8 फरवरी 2020 को दिल्ली में विधान सभा चुनाव हुए। अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी ने चुनाव में पूर्ण बहुमत का दावा करने के लिए 62 सीटें जीतीं।

सीईओ दिल्ली की वेबसाइट से उनके नाम के साथ दिल्ली के विधानसभा क्षेत्र के नक्शे की तस्वीरें निम्नलिखित हैं। छात्र इस मानचित्र पर अपने निर्वाचन क्षेत्र का पता लगाने की कोशिश करें और अपने विधायक का नाम पता करें।

अभ्यास

1. दिल्ली में कुल कितने जिले हैं?

_____

_____

2. दिल्ली में अपने जिले का नाम लिखें।

_____

_____

3. अपने विधानसभा क्षेत्र की संख्या लिखिए।

_____

_____

4. अपने विधानसभा क्षेत्र का नाम लिखें।

_____

_____

5. अपने विधायक का नाम लिखें।

_____

_____

6. अपने विधायक की पार्टी का नाम लिखें।

_____

_____

7. अपने विधायक का पता जानकर/खोजकर लिखें।

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या:-07

विद्यार्थी का नाम - _____

लिंग समानता

अधिगम संप्राप्ति

समाज के विभिन्न वर्गों की महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली परेशानियों के कारणों और परिणामों का विश्लेषण करते हैं।

लड़का होना या लड़की होना किसी की पहचान का अहम हिस्सा होता है। हम जिस समाज में पले-बढ़े हैं, वह हमें सिखाता है कि लड़कियों और लड़कों के लिए किस तरह का व्यवहार स्वीकार्य है। लड़के और लड़कियाँ क्या कर सकते हैं या नहीं कर सकते हैं। हम अक्सर यह सोचकर बड़े होते हैं कि ये चीजें बिल्कुल एक जैसी हैं।

इसलिए विद्यार्थियों, हम लड़कों और लड़कियों को अलग-अलग भूमिकाओं में देखने की कोशिश करेंगे।

अधिकांश समाज पुरुषों और महिलाओं को अलग-अलग क्यों महत्व देते हैं?

महिलाएँ जो भूमिकाएँ निभाती हैं और जो काम करती हैं उन्हें आमतौर पर पुरुषों की तुलना में कम महत्व दिया जाता है?

आइए सबसे पहले उन गतिविधियों/भावनाओं को वर्गीकृत करना शुरू करें जो ज्यादातर हमारे आसपास के लड़कों या लड़कियों से संबंधित हैं।

अभ्यास

गतिविधियां/भावनाएं	लड़के	लड़कियाँ
बाहर खेल		
कुश्ती		
दयालुता		
मजबूत		
बाइकिंग		
सफाई		
मदद		
तैराकी		
खाना बनाना		
भावुक		

तो उपरोक्त तालिका से क्या हम सोच सकते हैं कि लड़के और लड़कियों से अलग-अलग ऐसी अलग-अलग भावनाओं के कारण क्या हो सकते हैं?

1. अपना अनुभव लिखें जब आप अपने भाई या बहन से अलग महसूस करने लगे?
2. आपके इस तरह के भेदभाव में सबसे बड़ी भूमिका किसने निभाई: परिवार, रिश्तेदार, समाज, स्कूल या कुछ भी / कारण ?
3. एक व्यक्ति के रूप में आप में क्या बदलाव आया होता यदि आप पर लड़का या लड़की होने का प्रभाव नहीं पड़ता ??
4. क्या आपको लगता है कि पिछले 5 वर्षों में धारणा कुछ बदली है?

कार्यपत्रक संख्या:-08

विद्यार्थी का नाम - _____

महिला सशक्तीकरण

अधिगम संप्राप्ति

भारत के विभिन्न क्षेत्रों से महिलाओं की पहचान करता है और विभिन्न क्षेत्रों में उनके योगदान को दर्शाता है।

हम अपने समाज में देख सकते हैं कि कैसे घर का काम करना और परिवार के सदस्यों की देखभाल करना एक पूर्णकालिक काम है। कोई विशिष्ट घंटे नहीं हैं जिस पर यह शुरू होता है और समाप्त होता है। हम यह भी देखते हैं कि कैसे घर में महिलाओं के काम को काम के रूप में मान्यता नहीं दी जाती है। महिलाएँ आज पहले से कहीं ज्यादा पुरुष प्रधान समाजों और संस्कृतियों के खिलाफ चली गई हैं।

"जो महिला भीड़ का अनुसरण करती है, वह आमतौर पर भीड़ से आगे नहीं जाती। जो महिला अकेले चलती है, वह खुद को उन जगहों पर पा सकती है, जो पहले कभी सोचा भी नहीं था।" - अल्बर्ट आइंस्टीन।

निम्नलिखित उदाहरणों से हम यह समझने की कोशिश करेंगे कि हाल के वर्षों में भेदभाव को चुनौती देने के लिए महिला आंदोलन द्वारा किए गए विभिन्न प्रकार के प्रयासों ने किस तरह महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा किए हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता हासिल करने वाली निम्नलिखित महिलाओं को पहचानें।

1. सावित्रीबाई फुले: महाराष्ट्र की रहने वाली सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षिका माना जाता है। उन्होंने और उनके पति ने 1848 की शुरुआत में पुणे में पहले भारतीय लड़कियों के स्कूलों में से एक की स्थापना की! वह विभिन्न जातियों और लिंग के लोगों के बीच समानता की प्रबल समर्थक थीं। रूढ़िवादी सदस्यों के विरोध के बावजूद, उन्होंने लैंगिक मानदंडों को चुनौती देना जारी रखा।

2. शकुंतला देवी: जिसने भी कहा कि महिलाएँ गणित और विज्ञान में खराब हैं, उन्होंने गणित की विलक्षण प्रतिभा शकुंतला देवी के बारे में नहीं सुना है! वह एक भारतीय गणितज्ञ थीं, जिन्हें मानसिक रूप से कठिन समीकरणों की गणना करने की असाधारण क्षमता के कारण 'मानव-कंप्यूटर' के रूप में जाना जाता था। यहां तक कि उन्हें उनकी अद्वितीय क्षमताओं के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में भी शामिल किया गया था। उनकी उत्कृष्ट बुद्धिमत्ता ने उन्हें भारतीय महिलाओं के लिए एक आदर्श बना दिया।जुलाई 2020 में रिलीज़ हुई हिंदी फिल्म में उनकी भूमिका अभिनेत्री विद्या बालन ने निभाई थी।

3. द फिस्कल स्कॉलर - गीता गोपीनाथ- वह एक हार्वर्ड अर्थशास्त्री हैं, जो आईएमएफ - अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में मुख्य अर्थशास्त्री का पद संभालने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। वह मूल रूप से केरल की रहने वाली हैं और एक किसान-उद्यमी की बेटी हैं।

4. ढिंग एक्सप्रेस - हिमा दास-वह फिनलैंड के टाम्परे में आयोजित 2018 में IAAF वर्ल्ड अंडर -20 एथलेटिक्स चैंपियनशिप में स्वर्ण जीतने वाली पहली भारतीय एथलीट (स्प्रिंट रनर) हैं। बाद में, उसने जकार्ता में आयोजित एशियाई खेलों में स्वर्ण और रजत पदक जीते। असम के ढिंग शहर के पास एक विनम्र चावल किसान की बेटी, हिमा दास 18 साल की छोटी उम्र में एक राष्ट्रीय पहचान बन गई।

5. कल्पना चावला: एक राष्ट्रीय नायिका, कल्पना चावला अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की पहली महिला थीं। उन्होंने 19 नवंबर 1997 को छह चालक दल के सदस्यों के साथ अंतरिक्ष में अपना पहला अंतरिक्ष मिशन शुरू किया। सभी अंतरिक्ष यात्रियों की मृत्यु दुर्घटना में हो गई जब यान (कल्पना चावला सहित) अंतरिक्ष से पृथ्वी पर आ रहा था । उन्हें मरणोपरांत कांग्रेस ने अंतरिक्ष पदक से सम्मानित किया गया। वह अंतरिक्ष की खोज में रुचि रखने वाली युवा लड़कियों और महिलाओं के लिए एक बड़ी प्रेरणा बनी हुई हैं।

6. चुंगनीजैंग मैरी कॉम - हमंगटे मणिपुर की एक भारतीय ओलंपिक मुक्केबाज हैं। वह छह बार के रिकॉर्ड के लिए विश्व एमेच्योर मुक्केबाजी चैंपियन बनने के बाद अंतर्राष्ट्रीय मुक्केबाजी संघ (एआईबीए) में प्रतिष्ठित नंबर 1 स्थान हासिल करने वाली एकमात्र महिला हैं। कॉम एकमात्र महिला मुक्केबाज भी हैं जिन्होंने सभी सात विश्व चैंपियनशिप में पदक जीता है, जिससे यह विश्व रिकॉर्ड बन गया है। 'मैग्नीफिसेंट मैरी' के नाम से जानी जाने वाली, मैरी कॉम अंतर्राष्ट्रीय प्लेटफार्मों पर चमकते हुए भारत की पसंदीदा खिलाड़ी बन गई हैं।

7. बायोटेक पायनियर - किरण मजूमदार-शॉ- उन्होंने 1978 में अपना खुद का उद्यम- बायोकॉन शुरू किया। आज वह फोर्ब्स की दुनिया की सबसे शक्तिशाली महिलाओं की सूची में 60 वें स्थान पर हैं और भारत की सबसे अमीर स्व-निर्मित महिला अरबपति हैं। वह वर्तमान में बायोकॉन लिमिटेड (भारत में सबसे बड़ी जैव प्रौद्योगिकी / बायोफार्मास्युटिकल कंपनियों में से एक) की अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक और भारतीय प्रबंधन संस्थान, बैंगलोर की अध्यक्ष हैं।

8. किरण बेदी: वह भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) में शामिल होने वाली पहली महिला बनीं। अपने करियर के दौरान, उन्होंने महिलाओं के खिलाफ अपराधों से लड़ाई लड़ी और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान हासिल की। बाद में, वह एक लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता बन गईं।

9. अरुणिमा सिन्हा: वह माउंट एवरेस्ट और माउंट किलिमंजारो की अन्य चोटियों को फतह करने वाली दुनिया की पहली विकलांग महिला हैं। चलती ट्रेन में लुटेरों के साथ हुए विवाद के कारण सिन्हा के बाएँ पैर के घुटने को नीचे से काटना पड़ा। अपनी चोट के बावजूद, वह दुनिया की सबसे ऊँची चोटियों को फतह करने में सफल रही और इसके लिए उन्हें भारत का चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म श्री पुरस्कार मिला।

10. अवनी चतुर्वेदी - फ्लाइट लेफ्टिनेंट अवनी चतुर्वेदी 2018 में मिग-21 में अकेले उड़ान भरने वाली पहली भारतीय महिला फाइटर पायलट बनीं। मिग-21 विमान को दुनिया में सबसे अधिक टेक ऑफ और लैंडिंग गति 340 किमी प्रति घंटे के लिए जाना जाता है, अपनी उपलब्धि को और भी प्रेरक बना रही हैं। अपने साथियों, भावना कंठ और मोहना सिंह जीतरवाल के साथ, तीनों भारतीय वायु सेना की पहली महिला लड़ाकू पायलट बनीं। उन्हें जून 2016 में IAF फाइटर स्क्वाड्रन में शामिल किया गया था।

11. अरुणा रेड्डी- वह जिम्नास्टिक विश्व कप में पदक जीतने वाली पहली भारतीय जिमनास्ट बनीं। उन्होंने मेलबर्न में आयोजित विश्व कप में महिलाओं की श्रेणी में कांस्य पदक जीता।

12. दिव्या सूर्यदेवरा: वह जनरल मोटर्स की पहली महिला सीएफओ बनीं, जब उन्हें 2018 में इस पद पर नियुक्त किया गया था। चेन्नई में जन्मी और पली-बढ़ी, वह एक चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं और उनके पास एथिराज कॉलेज ऑफ विमेन और मद्रास विश्वविद्यालय से डिग्री है। उन्होंने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से एमबीए भी किया है। वह 2004 में जीएम में शामिल हुईं और तब से, संगठन के शीर्ष रैंकों पर चढ़ गई हैं।

13. पीटी उषा : वह भारत में एक घरेलू नाम है और उसे एक आइकन कहना एक अल्पमत होगा। उषा ने 1980 में मास्को ओलंपिक खेलों में अपनी शुरुआत की, जहाँ वह सिर्फ 16 साल की उम्र में सबसे कम उम्र की भारतीय धावक थीं। वह वहाँ हीट के दौरान बाहर हो गई थी, लेकिन जल्द ही, स्प्रिंटर पाकिस्तान ओपन नेशनल मीट (4 स्वर्ण), विश्व जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप (सियोल) आदि में पदक जीतकर देश को गौरवान्वित करने वाली धावक थी। उसकी असाधारण उपलब्धियों ने उषा को अर्जित किया 1983 में अर्जुन पुरस्कार और 1985 में पद्मश्री पुरस्कार।

14. आनंदीबाई गोपालराव जोशी: वह वर्ष 1887 में पहली भारतीय महिला चिकित्सक बनीं। वह पहली भारतीय महिला भी थीं, जिन्हें पश्चिमी चिकित्सा में प्रशिक्षित किया गया था और संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा करने वाली पहली महिला थीं।

15. मिताली राज - वह टेस्ट क्रिकेट में दोहरा शतक बनाने वाली पहली महिला थीं (वेलिंगटन, 2004 में न्यूजीलैंड के खिलाफ 214*)। वह दुनिया में यह मुकाम हासिल करने वाली पहली महिला थीं।

16. मदर टेरेसा - वह 1979 में नोबेल शांति पुरस्कार जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। मदर टेरेसा ने कई मिशनरीज ऑफ चैरिटी, एक रोमन कैथोलिक धार्मिक कलीसिया की स्थापना की, जिसने सामाजिक कार्यों को अपना जीवन दिया।

17. इंदिरा गाँधी - वह भारत की पहली महिला प्रधान मंत्री बनीं और 1966 से 1977 तक सेवा की। इंदिरा गाँधी को 1999 में बीबीसी द्वारा आयोजित एक सर्वेक्षण में "मिलेनियम की महिला" के रूप में नामित किया गया था। 1971 में, वह बनीं। भारत रत्न पुरस्कार पाने वाली पहली महिला।

अब चित्र पर विशेष ध्यान देते हुए उनसे संबंधित फोटो पर उपलब्धि प्राप्त करने वाली महिलाओं का क्रमांक लिखें।

DAS

SHAKUNTALA DEVI
1
2
3

INDIA

कार्यपत्रक संख्या:-09

विद्यार्थी का नाम - _____

महिला सशक्तीकरण

अधिगम संप्राप्ति

उपयुक्त उदाहरणों के साथ विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को दर्शाता है।

अपने-अपने क्षेत्रों में विभिन्न उपलब्धि हासिल करने वाली महिलाओं के नाम उनके योगदान सहित लिखिए।

क्र.सं.	क्षेत्र	नाम	योगदान
1.	खेल		
2.	राजनीति		
3.	व्यापार		
4.	सामाजिक सेवा		
5.	शिक्षा		
6.	विज्ञान प्रौद्योगिकी		
7.	वर्दी सेवाएँ		
8.	साहसिक कार्य		

कार्यपत्रक संख्या:-10

विद्यार्थी का नाम - _____

संचार माध्यमों को समझना

अधिगम संप्राप्ति

विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के संचार के साधनों की कार्यप्रणाली की व्याख्या कर सकेंगे ।

बच्चों, हम अक्सर अपने रिश्तेदारों,दोस्तों आदि से फोन पर बातें करते हैं। इन बातों के माध्यम से हम बहुत सारी सूचनाओं या जानकारियों को एक- दूसरे तक पहुँचाते हैं। इसी प्रकार हम अपने समाज,देश और विदेश में घट रही घटनाओं की जानकारियों को भी आसानी से प्राप्त करते रहते है।आज के समय में ऐसे बहुत सारे माध्यम हैं जिनके द्वारा हम सूचनाओं को एक जगह से दूसरी जगह तक पहुँचाते हैं। इन्हें हम संचार के माध्यमों के नाम से जानते है।

क्या आप जानते हो ये माध्यम कौन-कौन से होते हैं ?

क्रियाकलाप 1- आओ पता लगाएँ:-

संचार माध्यम, जिन्हें आप जानते हैं, उनके नाम लिखिए।

1. _____ 2. _____

3. _____ 4. _____

5. _____

क्रियाकलाप 2- उदाहरण के रूप में नीचे कुछ खबर/सूचनाएँ दी गई है।आप उनके सामने दिए गए स्थान पर सही(√) का लगाएँ कि ये खबरें/सूचनाएँ हमें किन- किन माध्यमों से मिलती

क्र.सं.	खबर और सूचनाएँ।	रेडियो	टी.वी	अखबार	इंटरनेट	अन्य
1.	मुंबई में लगातार 24 घंटे से बारिश हो रही है।					
2.	उत्तराखंड में पहाड़ खिसकने से रास्ता जाम					
3.	बिहार के किसी जिले में बाढ़ आने से लोग फँसे।					
4.	शिमला का मौसम गर्मियों में भी ठंडा होता है।					
5.	भारत को राष्ट्रमंडल खेलों मे गोल्ड मेडल मिला।					
6.	पीने का पानी न मिलने से लोगों ने रोड जाम किया।					
7.	बंगाल में चुनाव की तारीख तय की गई।					
8.	पेट्रोल के दामों में बढ़ोतरी से लोग परेशान।					

संचार के लिए प्रयोग होने वाले नए शब्दः-

प्रिंट मीडिया	-	छापे के रूप में सूचनाएँ
मास मीडिया	-	अधिक संख्या में लोगों तक सूचनाएँ
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया	-	इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से सूचनाएँ
सोशल मीडिया	-	इंटरनेट पर आधारित सूचनाएँ

अभ्यास

1. सूचनाओं के आदान-प्रदान में कौन-कौन से साधन प्रयोग किए जाते हैं?नाम लिखिए?

_____

_____

_____

2. संचार के माध्यमों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?

_____

_____

_____

3. अखबार कैसे एक संचार का माध्यम है? बताइए।

_____

_____

_____

4. आपके अनुसार जनसंचार के माध्यम देश के विकास में कैसे सहयोग करते हैं?

_____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या:-11

विद्यार्थी का नाम - _____

संचार माध्यमों को समझना

अधिगम संप्राप्ति

विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के संचार के साधनों की कार्यप्रणाली की व्याख्या कर सकेंगे।

संचार के माध्यम और धन

जनसंचार में प्रयोग की जाने वाली तकनीक और माध्यमों का उपयोग बहुत खर्चीला होता है। जैसे- कोई वस्तु निर्माता अपने सामान या ब्रांड को टी.वी के माध्यम से जनता को दिखाकर आकर्षित करना चाहता है। तो उसे इसके लिए धन राशि देनी पड़ती है।

जरा सोचो- टी.वी चैनल वालो के क्या खर्चे होते हैं ?

सेटेलाइट	कैमरों का खर्च	आवाज रिकॉर्डिंग का खर्चा	लाइट का खर्च	कर्मचारियों की सैलरी आदि

आप जानते हो टी.वी चैनल वाले अपने खर्चे की पूर्ति कैसे करते हैं ?

क्रियाकलाप 1:-आओ पता लगाएँ -

वस्तु निर्माता कंपनी टी.वी चैनल वालो कोअपने सामान का विज्ञापन टी. वी पर दिखाने के बदले धन राशि देती है।आपने टी. वी पर बीच- बीच में चॉकलेट, कोल्डड्रिंक, कार,मोबाइल,साबुन, शैम्पू आदि के विज्ञापनों

को देखा भी होगा। ये विज्ञापन सिर्फ टी. वी पर ही नहीं बल्कि कई और माध्यमों से भी हम तक पहुँचते है। क्या आप बता सकते हो अपने इनमें कौन- कौन से विज्ञापनो को देखा या सुना है? उनके नाम लिखिए:-

1. टी.वी पर _____

2. अखबार में _____

3. फोन पर _____

4. रेडियो पर _____

5. _____

6. _____

लोकतंत्र में संचार के माध्यम

लोकतांत्रिक देशों में एक तरफ सरकार संचार के माध्यमों के द्वारा जनता को सरकारी योजनाओं आदि की जानकारी देती है। वहीं दूसरी तरफ जनता सरकार के कामों की जानकारी हासिल करती है और यदि सरकार के कार्यों से संतुष्ट नहीं होती तो संचार के माध्यमों द्वारा अपनी बात या अपना सार्वजनिक विरोध प्रदर्शित भी कर सकती है।इस प्रकार संचार के माध्यम सरकार और जनता के बीच बातचीत के साधन होते है। यह कौन तय करता है कि कौन सी खबर टी.वी में दिखाने योग्य है या नहीं ?

क्रियाकलाप 2:- आओ पता लगाएँ-

यदि सरकार चाहे तो किसी खबर या घटना को अखबार में छपने से, टीवी पर दिखाने से रोक सकती है। इसे हम सेंसरशिप कहते हैं। कोई ऐसी खबर हो जो देश, समाज,नागरिक के लिए नुकसानदायक हो सकती है उन पर रोक लगाना जरूरी है। क्या आप कुछ ऐसी खबरों, सूचनाओं, चीजों के बारे में बता सकते हो जो टी. वी, इंटरनेट पर दिखाई जाती है परंतु उन पर रोक लगनी चाहिए-

1. _____

2. _____

3. _____

4. _____

अभ्यास

1. टीवी चैनल वाले किस प्रकार धन की व्यवस्था करते हैं?

2. विज्ञापन निर्माता कंपनी अपने सामान का प्रचार किस प्रकार करती है?

3. लोकतांत्रिक देश में संचार के माध्यमों की क्या उपयोगिता है?

4. सेंसरशिप किसे कहते हैं?

कार्यपत्रक संख्या:-12

विद्यार्थी का नाम - _____

विज्ञापनों को समझना

अधिगम संप्राप्ति

1. विद्यार्थियों में विज्ञापन की समझ बन पाएगी।
2. विद्यार्थी स्वयं भी विज्ञापन बना सकेंगे।

बच्चों, आपने टीवी या इंटरनेट पर दूध, कपड़े, घड़ी,जूते तेल, शैंपू, क्रीम, दाल, सब्जी मसाले, कोल्डड्रिंक आदि बेचने वाली कंपनियों के विज्ञापन देखे होंगे। कंपनी अपने उत्पाद (ब्रांड)का प्रचार करने के लिए विज्ञापनों (एडवर्टाइजमेंट) का प्रयोग करती है ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग उनका सामान खरीद सकें।

क्रियाकलाप 1:- आओ कुछ विज्ञापनों के चित्र देखें-

क्या आपने कोई और भी विज्ञापन देखे हैं ? उनके नाम लिखिए:-

_____

_____

क्रियाकलाप 2:- जरा सोचिए-हम रोज बहुत सारी ऐसी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं जो हमारे लिए जरूरी है। नीचे कुछ वस्तुओं के नाम दिए गए है। उनके सामने इन वस्तुओं को बनानी कंपनी का नाम लिखिए जो आप जानते हो-

	वस्तुएँ	वस्तु ,जो आप प्रयोग करते हैं यो निर्माता कंपनी के नाम जो आप जानते हो-
1.	दूध	अमूल दूध, मदर डेरी दूध, _____
2.	कोल्डड्रिंक	
3.	तेल	

	वस्तुएँ	वस्तु ,जो आप प्रयोग करते हैं या निर्माता कंपनी का नाम जो आप जानते हो-
4.	शैम्पू	
5.	साबुन नहाने का	
6.	साबुन कपड़े धोने का	
7.	गर्म मसाला	
8.	क्रीम	
9.	आटा	
10.	.फोन	

क्या आप जानते हो वस्तु निर्माता उपभोक्ता की पसंद और मांग को ध्यान में रखकर ही वस्तुओं का उत्पादन करते है ? वस्तुओं की मांग बढ़ाने में विज्ञापनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

विज्ञापनों का योगदान-

1. विज्ञापन किसी वस्तु को अच्छा दिखाते है।
2. विज्ञापन वस्तु की जरूरत को दिखाते है।
3. विज्ञापनों में सुंदर चित्रों और वीडियो का प्रयोग होता है।

जरा सोचिए- क्या किसी विज्ञापन को देखकर आप उस वस्तु को खरीदना चाहोगे?

आपक जवाब हाँ है तो क्यों या नहीं है तो क्यों? बताइए।

_____

_____

अभ्यास

1. विज्ञापनों के द्वारा वस्तु निर्माता अपने सामान की एक खास पहचान लोगों में कैसे बना पाते हैं?

2. वर्तमान समय में विज्ञापनों के लिए कौन -कौन से माध्यम अपनाए जाते हैं?

3. विज्ञापन हमें कैसे प्रभावित करते हैं?

4. यदि आप वस्तु निर्माता होते तो आप कैसा विज्ञापन बनाना पसंद करते ?

कार्यपत्रक संख्या:-13

विद्यार्थी का नाम - _____

विज्ञापनों को समझना

अधिगम संप्राप्ति

1. विद्यार्थियों में विज्ञापन की समझ बन पाएगी।
2. विद्यार्थी स्वयं भी विज्ञापन बना सकेंगे।

लोकतंत्र में विज्ञापन

सामान्यतःलोकतंत्र में जहाँ एक तरफ अमीर वस्तु निर्माता अपने ब्रांड को विज्ञापनों के माध्यम से लाखों लोगों तक पहुँचाने में सफल हो जाता है। वही दूसरी ओर एक छोटा व्यापारी,वस्तु निर्माता विज्ञापन में अधिक खर्चे होने की वजह से बिना विज्ञापनों के सहारे ही अपना सामान बेचता दिखाई देता है। चलो एक प्रयोग करके देखते हैं:-

क्रियाकलाप 1 - बड़े व्यापारी के लिए विज्ञापन-

1. एक साबुन का नाम बताइए _____
2. एक पेन का नाम बताइए _____
3. एक चॉकलेट का नाम बताइए _____
4. एक फोन का नाम बताइए _____

जरा सोचो :-इन वस्तुओं के नाम हमें कैसे पता चले या हमें कैसे याद है?

क्रियाकलाप 2 - छोटे व्यापारी बिना विज्ञापन-

1. आप जो पेन खरीदते हैं उस पेन पर दुकानदार का नाम होता है या किसी कंपनी का

   _____

2. आप जो चॉकलेट खरीदते हैं उस चॉकलेट पर दुकानदार का नाम होता है या किसी कंपनी का

   _____

3. आप जो साबुन खरीदते हैं उस साबुन पर दुकानदार का नाम होता है या किसी कंपनी का

_____

4. आप या आपके घर जो फोन खरीदा जाता हैं उस फोन पर दुकानदार का नाम होता है या किसी कंपनी का

_____

क्रियाकलाप 3:-

मान लीजिए कि आप एक वस्तु निर्माता है और आपको अपनी कंपनी की वस्तु को बेचने के लिए विज्ञापन बनाना है। आप उन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए एक विज्ञापन बनाइए जो लोगों को आपकी वस्तु की ओर आकर्षित करे ।

कार्यपत्रक संख्या:-14

विद्यार्थी का नाम - _____

हमारे आस-पास के बाजार

अधिगम संप्राप्ति

1. छात्र विभिन्न प्रकार के बाज़ारों के बीच अंतर करने में सक्षम होंगे
2. छात्र विभिन्न बाज़ार/स्थानों पर सामान कैसे जाता है? यह पता लगाने में सक्षम होंगे।

दैनिक जीवन में हम अपने घरों में बहुत सारी चीजों का प्रयोग करते हैं। जैसे- दूध, आटा, साबुन, चावल, दाल, कपड़े, सब्जियाँ, गहने, किताबें, बर्तन आदि। इन सामानों की खरीदारी के लिए कभी हम अपने मोहल्ले की दुकानों में जाते हैं तो कभी आस- पास की साप्ताहिक मार्केट में या कई बार शॉपिंग मॉल में जाते और थोक बाज़ारों में भी जाते रहते हैं।

बाजार

शॉपिंग मॉल

क्या आप सभी तरह के बाजारों को जानते हो?

क्रियाकलाप - आओ पता लगाएँ-

राजू और रमेश दोनों दोस्त हैं और एक ही कक्षा में पढ़ते हैं। एक दिन राजू अपने दोस्त रमेश के घर गया। वहाँ रमेश के मम्मी- पापा और बहन से मिला। रमेश के मम्मी-पापा उसकी बहन (लीना)की शादी की तैयारी के लिए बातचीत कर रहे थे और राजू उनकी बात सुन रहा था। इस तरह राजू को कई बाज़ारों के बारे में पता चला।

कैसे ?

रमेश के पापा बोले - रमेश! लीना की अगले महीने शादी है।बहुत सारा राशन और सामान खरीदना है।

रमेश बोला - हाँ, पापा जी हम सारा सामान अपने मोहल्ले की दुकान से ले लेंगे।

रमेश के पापा - रमेश बेटा, मोहल्ले की दुकान में शादी का सारा सामान नहीं मिलता।

रमेश - क्यों?पापा जी, मैं तो कुछ भी सामान मोहल्ले की दुकान से ही लाता हूँ।

पापा जी - हमें रोजमर्रा की छोटी-मोटी चीजों की जरूरत पड़ती है तो हम मोहल्ले की दुकान से खरीदते हैं। जब हमें ज्यादा शॉपिंग करनी हो तो हम कहीं बाहर बड़ी दुकान से खरीदने की सोचते हैं।

रमेश की मम्मी - चलो फिर तो साप्ताहिक मार्केट से ही हम सामान ले लेंगे।

राजू - साप्ताहिक मार्केट क्या होती है?

रमेश की मम्मी - साप्ताहिक बाजार वह होता है जो एक सप्ताह में एक बार किसी निश्चित दिन के लिए लगाया जाता है। यह बाजार दिन में लगता है और रात होने तक बाज़ार बंद हो जाता है। ये दुकाने पक्की नहीं होती।

लीना - मैं तो अपने लिए सारे कपड़े शॉपिंग मॉल से खरीदकर लाऊंगी।

राजू - दीदी शॉपिंग मॉल क्या होते हैं?

लीना - अरे राजू, शॉपिंग मॉल कई कई मंज़िलों के होते हैं। एक बिल्डिंग में बहुत सारी दुकानें होती है। वहाँ पूरी बिल्डिंग में A.C. (एयरकंडीशन) चलता रहता है। यहाँ बड़े-बड़े ब्रांड के कपड़े,जूते और फैशन की चीजें मिलती है। मुझे तो मॉल बहुत पसंद है।

रमेश के पापा - ठीक है लीना के लिए कपड़े मॉल से और छोटे-मोटे सामान मोहल्ले और साप्ताहिक बाजार से ले लेंगे। अभी बहुत सारा राशन, और कुछ दूसरे सामान लेने के लिए हमें थोकबाजार जाना होगा।

राजू - अंकल जी ये थोक बाज़ार कौन से होते हैं ?

रमेश के पापा - राजू बेटा, थोक बाज़ार वह होते हैं जहाँ छोटे - छोटे दुकानदार अपनी दुकान के लिए सामान खरीदते हैं। या किसी ग्राहक को बहुत अधिक मात्रा में सामान खरीदना हो तो थोक व्यापारी से लाते हैं। क्योंकि वहाँ सस्ते दाम पर अधिक सामान मिल जाता है। थोक बाजार दिल्ली में बहुत जगह है। जैसे- आजाद पुर मंडी, सदर बाज़ार,चावड़ी बाज़ार, चांदनी चौक आदि। जब हम जाएँगे तो तुम्हें भी साथ लेकर चलेंगे और वहाँ छोले-भटूरे भी बहुत अच्छे मिलते हैं।

राजू - ठीक है अंकल जी, फिर तो बड़ा मजा आएगा।

अभ्यास

1. साप्ताहिक बाजार और शॉपिंग मॉल में क्या अंतर है?

_____

_____

_____

2. थोक बाज़ार में लोग सामान खरीदने क्यों जाते हैं?

_____

_____

_____

3. राजू को कौन-कौन से बाज़ार के बारे में पता चला?

_____

_____

_____

4. रोजमर्रा का छोटा- मोटा सामान लोग मोहल्ले के दुकान से ही क्यों खरीद लेते हैं?

_____

_____

_____

5. आप अपने माता-पिता से बात करके लिखो कि वे यह सामान कहां से लाते हैं?

1. रोजमर्रा के प्रयोग का सामान _____

2. त्योहारों या खास मौके(शादी इत्यादि) के लिए _____

3. थोक में सामान खरीदना _____

कार्यपत्रक संख्या:-15

विद्यार्थी का नाम - _____

हमारे आस-पास के बाजार

अधिगम संप्राप्ति

1. छात्र विभिन्न प्रकार के बाज़ारों के बीच अंतर करने में सक्षम होंगे ।
2. छात्र विभिन्न बाज़ार/स्थानों पर सामान कैसे जाता है? यह पता लगाने में सक्षम होंगे।

हम अक्सर अपने घरों के लिए राशन या सामान की खरीदारी मोहल्ले की दुकान, साप्ताहिक बाजार, शॉपिंग मॉल या थोक बाजार से करते हैं। परंतु हमें कई बार यह नहीं पता होता जो सामान हम खरीद रहे हैं वो कहाँ से आता है?

जरा सोचिए हम जिन वस्तुओं या राशन की चीजों को दुकानदारों से खरीदते है, इन वस्तुओं को दुकानदार कहाँ से लाते है?

क्रियाकलाप -आओ पता लगाएँ-

रमेश के पापा - राजू बेटा आपने तो हमसे सभी बाज़ारों के बारे में पूछ लिया। अब तुम बताओ ये दुकानदार अपनी दुकान के लिए सामान कहाँ से लाते हैं?

राजू - अंकल जी, कभी-कभी रिक्शा, ट्रक, टेंपो,वाले इनकी दुकान पर सामान छोड़कर जाते हैं बस यही पता है।

रमेश के पापा - तो सुनो राजू, ये दुकानदार थोक व्यापारियों से सामान खरीद कर अपनी दुकान में लाते हैं। उपभोक्ता यानि हम लोग को लाभ के लिए बेचते हैं।

राजू - अंकल जी फिर थोक विक्रेता सामान बेचने के लिए कहाँ से लाते हैं?

रमेश के पापा - थोक विक्रेता अपने लिए सामान को सीधे उत्पादन करने वालों से खरीदते हैं। जैसे- सामान बनाने वाले कारखाने,किसानों से सीधे खरीदना। सामानों को एक जगह से दूसरी जगह लाने ले जाने के लिए यातायात के साधनों का भी प्रयोग होता है।

अब इस बॉक्स को देखो और पढ़ो-

1. सामान का उत्पादन करने वाले लोग/किसान	2. किसानों/कारखानों से सामान खरीदने वाले व्यापारी	3. थोक व्यापारियों से सामान खरीदने वाले दुकानदार।	3. दुकानदारों से सामान खरीदकर प्रयोग करने वाले उपभोक्ता यानि हम लोग।

राजू - अंकल जी, फिर इन बाज़ारों में क्या अंतर है?

रमेश के पापा - राजू बेटा, छोटा दुकानदार कम पूँजी लगाकर काम शुरू करता है। बड़ा दुकानदार या थोक व्यापारी ज्यादा पूँजी लगाकर काम शुरू करता है। इन दोनों की आय में फर्क होता है। दोनों के सामान के भाव में भी अंतर होता है। परंतु इन बाज़ारो से बहुत से लोगों को रोज़गार मिलता है। बड़े पूँजीपति लोग कई तरह से अपने सामान का प्रचार करके अधिक लाभ भी पा लेते हैं।

अभ्यास

1. उत्पादनकर्ता और उपभोक्ता में क्या अंतर होता है?

_____

_____

_____

2. हम कुछ वस्तुओं या सामानों को सीधे उत्पादन करने वालो से क्यों नहीं खरीद पाते?

_____

_____

_____

3. आप कौन से बाज़ार से वस्तु या सामान खरीदना पसन्द करते हो?

_____

_____

_____

कार्यपत्रक संख्या:-16

विद्यार्थी का नाम - _____

बाज़ार में एक कमीज़

अधिगम संप्राप्ति

छात्र यह पता लगाने में सक्षम होंगे कि विभिन्न बाज़ार/ स्थानों पर सामान कैसे जाता है?

बच्चों, आमतौर पर हम कपड़े से बनी कमीज कभी न कभी पहनते ही हैं। आजकल तो तरह-तरह के प्रिंट और डिजाइन वाली कमीजें बाजार में आसानी से मिल जाती है।

जरा सोचिए ये कमीजें कैसे बनती हैं ?

→→ कपास से कमीज →→→→→→→

क्रियाकलाप- आओ सोनू की कहानी से जाने कमीज़ कैसे बनाती है?

एक बार सोनू नई कमीज़ पहनकर अपने गाँव गया। वहाँ जाकर उसको पता चला कि गाँव के बहुत सारे लोग रोजाना कपास से डोडे चुनने जाते हैं। सोनू यह जानने के लिए उत्सुक था कि ये डोडे क्या होते हैं और इनका ये लोग क्या करते है? उस रात तो सोनू ने अपनी दादी से पूछ ही लिया-

सोनू अपनी दादी से बोला- दादी माँ, ये डोडे क्या होते हैं?

दादी - सोनू बेटा, डोडे कपास के पेड़ मे उगते हैं। ये डोडे कभी- कभी खुद फूट जाते हैं और इनमें से रूई बनाने वाली सामग्री निकलती है। तुमने यह जो सुंदर सी कमीज पहनी है यह कपास से ही बनती है।

सोनू - दादी पर कमीज़ तो दुकान पर मिलती है।

दादी - सोनू बेटा हमारे गाँव के कुछ लोग कपास की खेती करते है इसके पौधों से डोडे चुनकर लाते हैं। फिर इनसे रुई निकालते हैं। इस रुई को स्थानीय व्यापारियों को बेच देते हैं। कपास की खेती में खाद, उर्वरक,कीटनाशक आदि का बहुत खर्चा होता है। कभी-कभी इसके लिए किसानों को उधार पैसा भी लेना पड़ता है। रुई को बेचने के बाद मिलने वाले पैसे से कर्जा उतारते है और घर का खर्च चलते है।

सोनू - दादी ये व्यापारी लोग रुई का क्या करते हैं?

दादी मां - सोनू बेटा, व्यापारी लोग रुई से सूत बनवाकर बुनकरों को देते है।

बुनकर लोग

सोनू - दादी ये बुनकर कौन होते हैं?

दादी - बुनकर सूत से कपड़ा बनाने वाले लोगों का एक समुदाय होता है। बुनकर, व्यापारियों से सूत लेते हैं और व्यापारियों की इच्छा अनुसार उनको कपड़ा बना कर वापस कर देते हैं। इस काम के लिए उनकी आमदनी भी होती है। परंतु इस काम के लिए इनको कपड़ा बनाने वाले करघों को खरीदना पड़ता है। एक कपड़ा बनाने के लिए कई -कई घंटे लगातार काम करना होता है।

सोनू - दादी माँ! ये व्यापारी इतने सारे कपड़े का क्या करते हैं?

दादी मां - सोनू बेटा! ये व्यापारी सारा कपड़ा अपने लिए नहीं खरीदते, बल्कि आगे कमीज़ बनाने वाले कारखाने को बेच देते हैं। इन कारखानों से बनी कमीजे देश-विदेश में भी भेजी जाती है। इन कारखानों में बहुत सारे लोगों को रोजगार मिलता है।

सोनू - दादी माँ, इस काम में किसान से लेकर दुकानदार तक किस को सबसे ज्यादा फायदा होता है?

दादी - सोनू बेटा दुकानदार तक तैयार कमीज पहुँचने तक खरीदने- बेचने की प्रक्रिया चलती रहती है। इसमें बहुत सारे लोगों को रोजगार मिलता है। इस काम में कुछ लोगों को कम मेहनत के बावजूद बहुत लाभ होता है तो कुछ लोगों को बहुत मेहनत के बाद भी कम पैसा मिल पाता है।

अभ्यास

1. कपड़ा कैसे बनता है?

2. बुनकर कौन लोग होते हैं और ये क्या काम करते हैं?

3. इस काम में कई लोगों को बहुत मेहनत के बाद भी कम पैसा मिल पाता है क्यों? बताइए।

4. बाजार में कमीज के दाम कैसे तय होते हैं?

भूगोल

सामाजिक विज्ञान

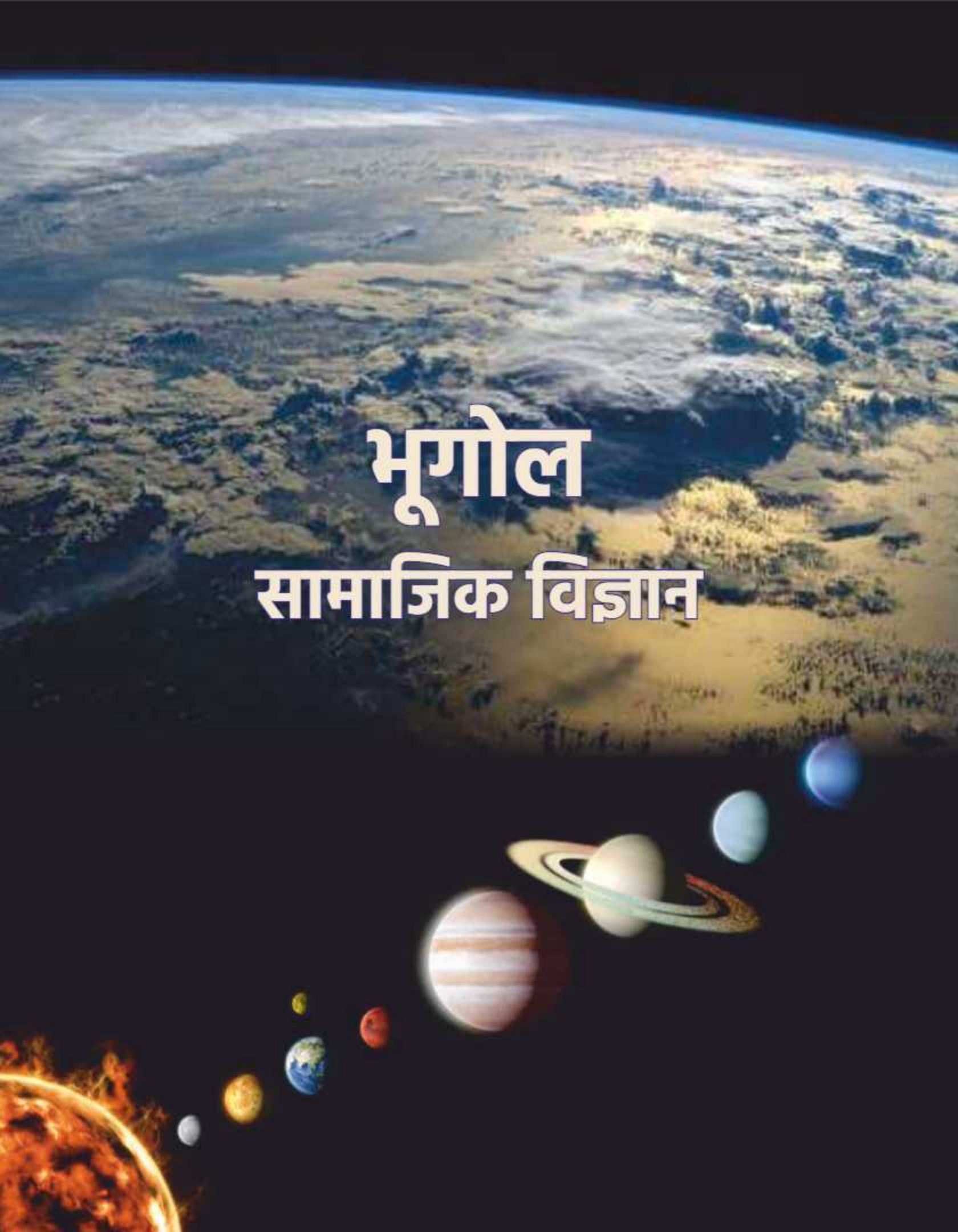

कार्यपत्रक -1

विद्यार्थी का नाम _____

पर्यावरण

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे पर्यावरण के विभिन्न घटकों और उनके बीच अंतरसंबंधों का वर्णन करते हैं।

प्यारे बच्चों, जो भी हमारे आसपास दिखाई देता है या महसूस होता है वह हमारा 'पर्यावरण' है। वायु, पेड़-पौधे, आपके परिवारजन, आपके आसपास विद्यमान सभी वस्तुएँ आपका पर्यावरण है। पर्यावरण हमारे जीवन का मूल आधार है। यह हमें साँस लेने के लिए हवा, पीने के लिए जल, खाने के लिए भोजन एवं रहने के लिए भूमि प्रदान करता है। इनमे से कुछ जीवीय है (जिनमें जीवन है) जैसे- पेड़-पौधे तथा जीव-जन्तु और कुछ अजीवीय (जिनमें जीवन नहीं है) जैसे- वायु, जल, मिट्टी आदि।

किसी भी प्राणी के चारों ओर पाये जाने वाले लोग, स्थान, वस्तुएँ एवं प्रकृति उसके पर्यावरण के अंग होते हैं। पर्यावरण के अंग विभिन्न स्थानों पर भिन्न भी हो सकते हैं। जैसे- आपके विद्यालय और आपके घर के पर्यावरण में कुछ समानता भी हो सकती है ओर कुछ भिन्नता भी।

क्रियाकलाप : आपको अपने चारों ओर क्या-क्या दिखाई देता है अथवा महसूस होता है उसे लिखें तथा यह भी बताएँ कि उनमें से क्या जीवीय है तथा क्या अजीवीय।

पर्यावरण के मुख्य रूप से तीन घटक होते हैं-

1. प्राकृतिक पर्यावरण - जिनको बनाने में मानव का योगदान नहीं है। जैसे- वन, जीव-जंतु, जल आदि।
2. मानव निर्मित पर्यावरण - जिनका निर्माण मानव द्वारा किया जाता है। जैसे- सड़क, भवन, मशीनें आदि।
3. मानवीय पर्यावरण- मानव की परस्पर क्रियाएँ, उनकी गतिविधियाँ एवं उनके द्वारा बनाई गई रचनाएँ जैसे परिवार, रिश्ते नाते, धर्म, विद्यालय, बैंकिंग, राजनीतिक दल आदि।

प्राकृतिक पर्यावरण के भाग -

स्थलमंडल: यह पृथ्वी का चट्टानों व खनिजों से बना व मिट्टी की पतली परत से ढँका विभिन्न असमान स्थल आकृतियों वाला भाग है। इस पर पहाड़, पठार, मैदान, घाटी आदि दिखाई देते हैं। इसी पर

वन, कृषि एवं मानव बस्तियों के लिए भूमि, पशुओं को चरने के लिए घासस्थल तथा खनिज मिलते हैं।

जलमंडल: पृथ्वी के लगभग 71% भाग पर जल के विभिन्न स्रोतों जैसे – नदी, झील, समुद्र, महासागर आदि जैसे विभिन्न जलाशयों से मिलकर बना है। इसलिए इसे जलीय ग्रह भी कहते हैं। जल सभी प्राणियों के लिए आवश्यक है। जल के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते।

वायुमंडल: पृथ्वी के चारों ओर फैली वायु की परत को वायुमंडल कहते हैं। इसमें कई प्रकार की गैस, धूल-कण एवं जलवाष्प उपस्थित रहते हैं। वायुमंडल सूर्य की झुलसाने वाली गर्मी व हानिकारक किरणों से हमारी रक्षा करता है। वायुमंडल में परिवर्तन होने से मौसम एवं जलवायु में परिवर्तन होता है।

जैवमंडल: यह पृथ्वी का वह संकीर्ण क्षेत्र है, जहाँ स्थल, जल, एवं वायु मिलकर जीवन को संभव बनाते हैं। इनमें से किसी एक की भी अनुपस्थिति में हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। मनुष्य, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु मिलकर जैवमंडल का निर्माण करते हैं।

चित्र 1 पर्यावरण के क्षेत्र

पारितंत्र

सभी स्थानों पर जीव-जन्तु तथा पेड़-पौधे आदि समान नहीं होते, उनकी बनावट, आहार आदि मे कुछ अंतर पाया जाता है। जैसे – रेगिस्तान में अधिकतर कीकर तथा कैक्टस जैसे कंटीले पौधे और ऊँट जैसे पशु पाये जाते हैं जबकि जल में पाए जाने वाली जलकुंभी की पतियाँ चपटी व मोटी होती हैं और मछली जल में ही जीवित रह पाती है। बेहद ठंडे इलाकों में पाये जाने वाले जानवरों जैसे – भालू, बकरी के शरीर पर घने बाल पाये जाते हैं, वहाँ पाये जाने वाले पेड़-पौधों की आकृति भी कुछ भिन्नता होती है।

चित्र 2 एक ताल का पारितंत्र

सभी पेड़-पौधे, जीव-जन्तु एवं मानव अपने आस-पास के पर्यावरण पर आश्रित होते हैं। जीवधारियों का आपसी एवं अपने आस-पास के पर्यावरण के बीच का संबंध पारितंत्र का निर्माण करता है। अधिक वर्षा वाले वन, घासस्थल, रेगिस्तान, पर्वत, झील, नदी, एवं छोटे से ताल का भी एक पारितंत्र हो सकता है।

अभ्यास

प्रश्न 1. पर्यावरण के प्रमुख घटक कौन-कौन से हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 2. प्रत्येक के महत्व पर दो दो वाक्य लिखिए।

1) स्थलमंडल _____ _____

2) जलमंडल _____ _____

3) वायुमंडल _____ _____

4) जैवमंडल _____ _____

प्रश्न 3. निम्न पारितंत्र को पहचानिए। (संकेत : पर्वत, मरुस्थल, वन, तालाब)

क) मछली, जल, कमल का फूल - _____

ख) रेट, ऊँट, कैक्टस का पौधा - _____

ग) घने पेड़, जंगली जानवर, जड़ी बूटियाँ - _____

घ) शंकुधारी वृक्ष, भेड़, बर्फ - _____

प्रश्न 4. पौधे तथा जीव-जन्तु एक दूसरे पर किस प्रकार आश्रित है?

_____

_____

_____

प्रश्न 5. अपने क्षेत्र (पारितंत्र) में पाये जाने वाले दो जीव (पशु तथा पक्षी) और दो पेड़ों के नाम बताइये।

_____

_____

_____

कार्यपत्रक -2

विद्यार्थी का नाम _____

पर्यावरण

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे पर्यावरण के विभिन्न घटकों और उनके बीच अंतरसंबंधों को समझ सकेंगे।

मानव निर्मित पर्यावरण

प्यारे बच्चों, शुरू में मानव ने अपने आप को प्रकृति के अनुरूप बना लिया था। उसका जीवन सरल था। प्रकृति से उनकी रहने व खाने की आवश्यकताएँ पूरी हो जाती थी। वह कंद-मूल, फल, बीज खा कर तथा शिकार करके अपना पेट भरता था जिसकी खोज के लिए वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमता रहता था। समय के साथ मानव की कई प्रकार की इच्छाएँ व आवश्यकताएँ बढ़ी। मानव ने पर्यावरण के उपयोग और उनमें परिवर्तन करने के कई तरीके सीख लिए। आग की खोज, पहिये का आविष्कार, पशु पालन तथा फ़सल उगाने के साथ मानव ने स्थायी जीवन जीना सीख लिया।

मानव निर्मित पर्यावरण में मानव द्वारा बनाई गई रचनाएँ शामिल होती हैं। मानव अपने पर्यावरण के साथ पारस्परिक क्रिया करता है और उसमे अपनी आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन करता है।

मानव अपने तकनीकी ज्ञान और विचारों के उपयोग प्राकृतिक पर्यावरण पर करके उसे मानव निर्मित पर्यावरण मे परिवर्तित कर उपयोग करता है। अपने जीवन को सुविधाजनक बनाने के लिए मानव जिस पर्यावरण की रचना करता है उसे मानव निर्मित पर्यावरण कहते हैं।

क्रियाकलाप : दिये हुए चित्र में अपने आस-पास से मानव निर्मित पर्यावरण के उदाहरण दीजिये।

मानव पर्यावरण

मानव सामाजिक प्राणी है। समाज में सभी एक दूसरे पर निर्भर होते हैं तथा सभी के सहयोग से निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं। जीवन को सुविधाजनक बनाने और आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक अनेक व्यवस्थाओं का विकास भी मानव द्वारा किया गया है।

परिवार, धर्म, समाज, विद्यालय, बाज़ार, बैंकिंग, पुलिस, चिकित्सा व्यवस्था जैसे अनेक प्रयासों से मानव अपने कौशल, हुनर, ज्ञान द्वारा अपने पर्यावरण का निर्माण करता जा रहा है।

क्रियाकलाप : उपरोक्त चित्र में रिक्त स्थानों में मानव पर्यावरण के विभिन्न घटक लिखिए एवं बताइए कि ये किस प्रकार आवश्यक हैं।

हमारा बदलता पर्यावरण

अपने चारों ओर आपने बहुत सारा परिवर्तन अवश्य देखा अथवा महसूस किया होगा। जहाँ पहले जंगल थे वहाँ उनकी जगह खेत, मकान, सड़क, कारखाने आदि बन गए हैं। वर्षों से खाली पड़े खेल के मैदान आज फ्लैटों में बदल गए हैं। बाँध बना कर नदियों के जल को संग्रहित किया जाता है, कागज़ के लिए प्रतिदिन लाखों पेड़ काटे जाते हैं, सुविधाजनक प्लास्टिक व थर्मोकोल हमारे जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं। इन सभी कार्यों के लिए मानव बड़े स्तर पर प्रकृति का दोहन करता है तथा अपने पर्यावरण को प्रभावित करता है। इसे पर्यावरण में बदलाव कहा जाता है, यह निरंतर हो रहा है।

पर्यावरण में परिवर्तन हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायक होते है, परंतु आवश्यकता से अधिक होने पर यह हमारे पर्यावरण को हानि भी पहुँचाते हैं। मानव की जरूरते दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं, जिन्हें पूरा करने के लिए मानव लगातार प्राकृतिक पर्यावरण में परिवर्तन कर रहा है और उसे नष्ट कर रहा है। जैसे - मानव ने उद्योग स्थापित किए परंतु उनसे निकालने वाले अपशिष्ट पदार्थों

(धुआँ व कचरा) से वायु तथा जल प्रदूषित हो रहे है। पर्यावरणविद : पर्यावरणविद वह व्यक्ति हैं जो पर्यावरण की सुरक्षा से संबन्धित कार्य में लगे हुए हैं। कुछ विख्यात पर्यावरणविदों के बारे में जानकारी एकत्र कीजिये। प्राकृतिक एवं मानवीय पर्यावरण के बीच सही संतुलन होना आवश्यक है। मानव को पर्यावरण के साथ समरसता से रहना एवं उसका उपयोग करना सीखना चाहिए। वस्तुओं का सही प्रकार से उपयोग हमारे पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने में सहायक हो सकता है। लोगों को पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए प्रत्येक वर्ष 5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया जाता है। हमें अपने द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों से पहले यह सोचना चाहिए कि यह पर्यावरण के लिए हितकारी है अथवा नुकसानदायक।

पर्यावरणविद : पर्यावरणविद वह व्यक्ति हैं जो पर्यावरण की सुरक्षा से संबन्धित कार्य में लगे हुए हैं। कुछ विख्यात पर्यावरंविदों के बारे में जानकारी एकत्र कीजिये।

अभ्यास

प्रश्न 1. मानव प्राकृतिक पर्यावरण में परिवर्तन क्यों करता है?

_____

_____

_____

प्रश्न 2. मानव के वे सभी क्रियाकलाप जो पर्यावरण के लिए हानिकारक है सूचीबद्ध कीजिये।

_____

_____

_____

प्रश्न 3. आप अपने पर्यावरण को स्वच्छ तथा सुरक्षित रखने में किस प्रकार सहयोग दे सकते हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 4. आपने आस-पास के लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए कोई नारा लिखें अथवा पोस्टर बनाएँ।

_____

_____

_____

प्रश्न 5. निम्न चित्रों को देखिये और पता लगाइए कि यह किस प्रकार हमारे पर्यावरण से संबन्धित हैं?

_____

_____

_____

चिपको आंदोलन

Eco Club

कार्यपत्रक -3

विद्यार्थी का नाम _____

हमारी पृथ्वी के अंदर

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे चित्र में पृथ्वी की प्रमुख आंतरिक परतों, शैलों के प्रकार तथा वायुमंडल की परतों को पहचानेंगे।

प्यारे बच्चों, आज हम जानेंगे कि हमारी पृथ्वी अंदर से कैसी है। पृथ्वी के अन्दर तीन मुख्य हिस्से हैं- ऊपरी सतह या भू पर्पटी, प्रावार या मैंटल और केंद्रीय भाग या क्रोड।

पर्पटी (crust) :

- पृथ्वी की सतह की सबसे ऊपरी परत को पर्पटी कहते हैं।
- यह सबसे पतली परत है जो महाद्वीपीय भाग में 35 किलोमीटर एवं समुद्री सतह में केवल 5 किलोमीटर तक चौड़ाई की है।
- इसी पर सभी महाद्वीप व महासागर, पर्वत, पठार, मैदान, नदी, झील आदि स्थित हैं।
- भू-पटल की रचना में सबसे अधिक ऑक्सीजन 11, दूसरे स्थान पर सिलिकन 27.72% और तीसरे स्थान पर एल्युमीनियम 8.13% है।
- महाद्वीपीय भाग मुख्य रूप से सिलिका एवं एलुमिना जैसे खनिजों से बना है। इसलिए इसे सियाल (Sial, Si-Silica और Al–Alumina) कहा जाता है। महासागर की पर्पटी मुख्यतः सिलिका एवं मैग्नीशियम की बनी है; इसलिए इसे सिमा (Sima, Si–Silica और Ma – Magnesium) कहा जाता है।
- इस परत पर औसतन प्रति 32 मीटर की गहराई में 1 डिग्री सेल्सियस तापमान बढ़ जाता है।

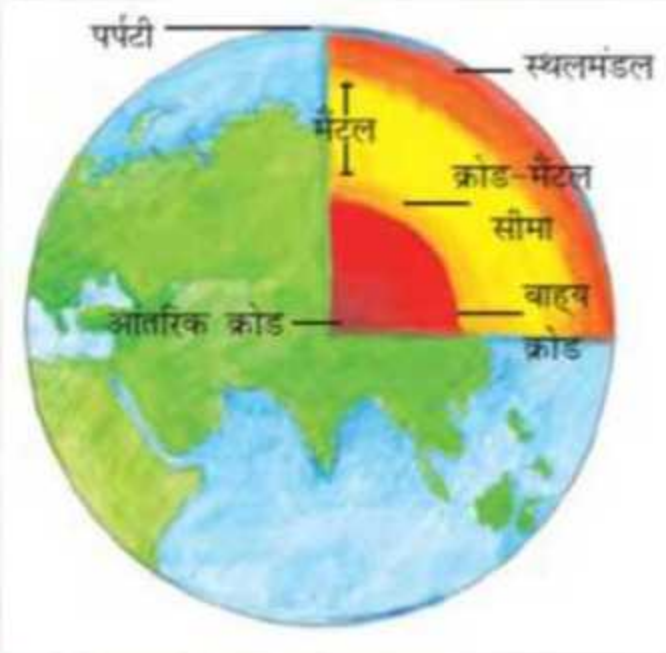

चित्र 1: पृथ्वी का आंतरिक भाग

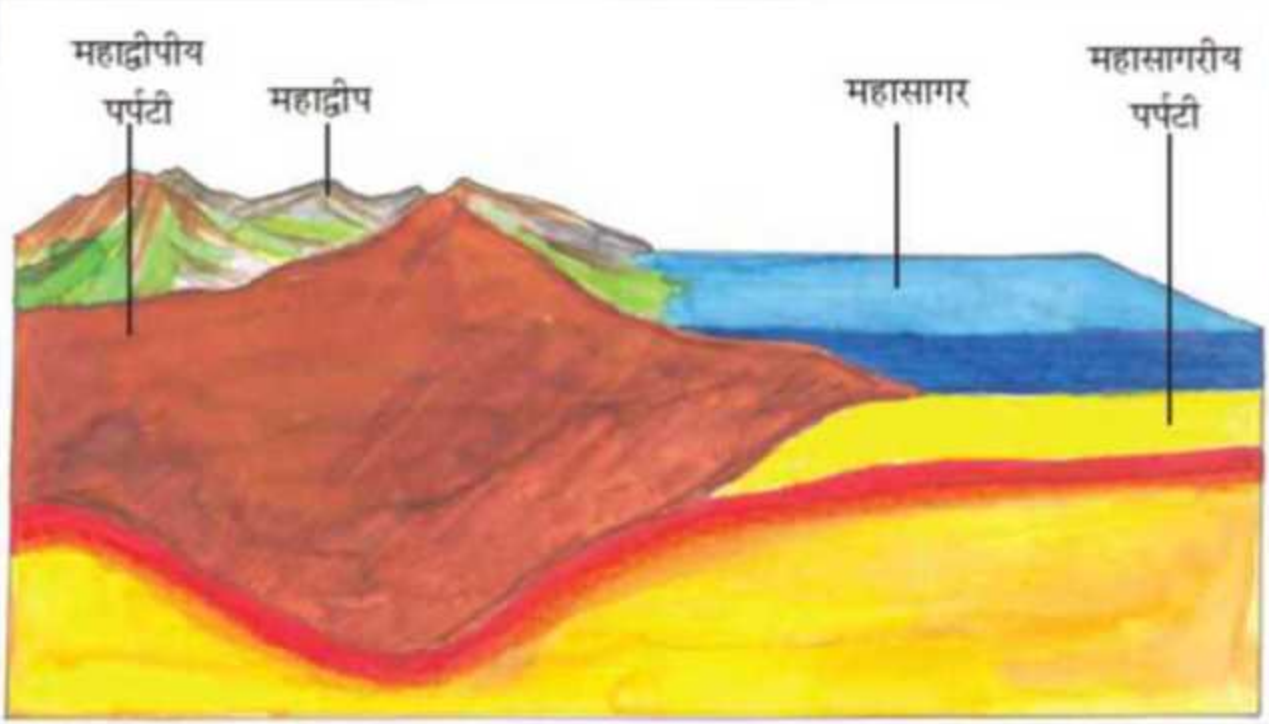

चित्र 2: महाद्वीपीय पर्पटी एवं महासागरीय पर्पटी

प्रावार/मैंटल:

- पर्पटी के ठीक नीचे की परत जो 2900 किलोमीटर की गहराई तक है,प्रावार या मैंटल कहलाती है।
- यहाँ तापमान 1200 से 3500 डिग्री सेल्सियस तक हो जाता है।
- इसी परत में मैग्मा पाया जाता है जो ज्वालामुखी से लावा के रूप में ऊपरी सतह पर आ जाता है।

क्रोड:

- पृथ्वी की सबसे आंतरिक परत क्रोड है, जिसकी त्रिज्या लगभग 3500 किलोमीटर है।
- यह मुख्यतः निकल एवं लोहे की बनी होती है तथा इसे निफे (Nife, Ni- Nicle और Fe – Ferrous) कहते हैं।

अभ्यास

- केंद्रीय क्रोड का तापमान एवं दाब बहुत अधिक होता है।
- यहाँ का तापमान 5200 डिग्री सेल्सियस तक रहता है जो सूर्य की सतह का भी तापमान है।
- पृथ्वी की ऊपरी परत का घनत्व 2.5 ग्राम प्रति वर्ग सेंटीमीटर है, इसका अर्थ है कि एक सेंटीमीटर लंबे, चौडे और ऊँचे टुकड़े का भार 2.5 ग्राम होगा जबकि इसी आकार में मेंटल का भार 3.5 ग्राम जबकि आंतरिक क्रोड में यह भार 13 ग्राम तक हो जाता है। यह अत्यधिक दबाव के कारण होता है।

प्रश्न 1. रिक्त स्थान भरिए।

1. पर्पटी महाद्वीपीय भाग में _____ किलोमीटर एवं समुद्री सतह में _____ किलोमीटर तक मोटाई की है।
2. _____ पृथ्वी की सबसे पतली परत है और _____ सबसे मोती परत है।
3. क्रोड की त्रिज्या लगभग _____ किलोमीटर है और इसका तापमान एवं _____ बहुत अधिक होता है।

प्रश्न 2. पृथ्वी की ऊपरी सतह पर किस दर से गहराई के साथ तापमान बढ़ता है?

_____

_____

_____

प्रश्न 3. पृथ्वी की सतह पर कौन से तत्व बहुतायत में पाए जाते हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 4. पृथ्वी की विभिन्न परतों पर्पटी, प्रावार और क्रोड को किन- किन नामों से जाना जाता है? इन नामों के कारण भी बताइये।

_____

_____

_____

प्रश्न 5. पृथ्वी की विभिन्न परतों के घनत्व में काफी अंतर पाया जाता है, इसके पीछे क्या कारण हो सकता है?

_____

_____

_____

कार्यपत्रक -4

विद्यार्थी का नाम _____

हमारी पृथ्वी के अंदर

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे चित्र में पृथ्वी की प्रमुख आंतरिक परतों, शैलों के प्रकार तथा वायुमंडल की परतों को पहचान सकेंगे।

प्यारे बच्चों, आपने पृथ्वी की सबसे ऊपरी परत या पर्पटी के बारे में जाना था। यह अनेक प्रकार के शैलों से बनी है। पृथ्वी की पर्पटी बनाने वाले पदार्थ के किसी भी ठोस प्राकृतिक पिंड को शैल कहते हैं। शैल विभिन्न रंग, आकार एवं गठन की हो सकती हैं, इस कारण से भी अलग-अलग स्थानों की मिट्टी व धरातल अलग-अलग प्रकार के हो सकते हैं।

मुख्य रूप से शैल तीन प्रकार की होती हैं – आग्नेय शैल, अवसादी शैल एवं कायांतरित शैल।

आग्नेय शैल: पृथ्वी के प्रावार या मैंटल से मैग्मा ऊपरी सतह पर लावा के रूप मे ठंडा होकर ठोस हो जाता है। इस प्रकार बने शैल को आग्नेय शैल कहते हैं। इन्हें प्राथमिक शैल भी कहते हैं क्योंकि आग्नेय शैल से ही अन्य दोनों प्रकार की शैल बनती हैं। बेसाल्ट व ग्रेनाइट इसके उदाहरण हैं।

अवसादी शैल: शैल लुढककर, चटककर तथा एक-दूसरे से टकराकर छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट जाती हैं। इन छोटे कणों को अवसाद कहते हैं। ये अवसाद हवा, जल आदि के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाकर जमा कर दिए जाते हैं। ये ढीले व नरम अवसाद दबकर एवं कठोर होकर शैल की परत बनाते हैं। इस प्रकार की शैलों को अवसादी शैल कहते है। रेत के कणों के जमने और कठोर होने से बलुआ पत्थर बनता है। इन शैलों में पौधों, जीव-जंतुओं, जो कभी इन शैलों पर रहे हैं, के जीवाश्म भी हो सकते हैं। कोयला व चूना पत्थर इसके उदाहरण हैं।

कायांतरित शैल: जब आग्नेय एवं अवसादी शैल पृथ्वी की गहरी परतों में पहुँच जाते हैं तो गहराई में उच्च ताप एवं दाब के कारण इन शैलों के रूप और गुणों में परिवर्तन हो जाता है। उदाहरण के लिए, चिकनी मिट्टी स्लेट में एवं चूना पत्थर संगमरमर में परिवर्तित हो जाता है।

शैल हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं। सड़क, घर एवं इमारत बनाने के लिए पत्थरों का उपयोग करते हैं। सेल खडी से बना पाउडर आपने इस्तेमाल किया ही होगा। हीरा भी कोयले का कायांतरित रूप है।

शैल चक्र

निश्चित दशाओं में एक प्रकार की शैल चक्रीय तरीके से एक-दूसरे में परिवर्तित (बदल) हो जाते हैं, इस प्रक्रिया को शैल चक्र कहते हैं। पिघला मैग्मा ठंडा होकर ठोस आग्नेय शैल बन जाता है। ये आग्नेय शैल छोटे-छोटे टुकड़ों में टूटकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होकर अवसादी शैल का निर्माण करते हैं। शैलें पृथ्वी की गहराईयों में पहुँच कर अत्यधिक ताप एवं दाब के कारण ये आग्नेय एवं अवसादी शैल कायांतरित शैल में बदल जाती हैं। यही ताप एवं दाब के कारण कायांतरित शैल पुनः पिघलकर द्रवित मैग्मा बन जाती है। यह द्रवित मैग्मा पुनः ठंडा होकर ठोस आग्नेय शैल में बदल जाता है।

चित्र 1 शैल चक्र

खनिज:

शैल विभिन्न खनिजों से बनी होती हैं। खनिज प्राकृतिक रूप में पाए जाने वाले पदार्थ हैं जिनका निश्चित भौतिक गुणधर्म एवं निश्चित रासायनिक मिश्रण होता है। खनिज मानव जाति के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। हमारे भोजन में नमक से लेकर, दंत मंजन, भोजन के मसालों, बर्तनों, मशीनों, घर के अंदर, खेतों, कारखानों, साइकिल से लेकर हवाई जहाज सभी में खनिजों का ही सबसे महत्वपूर्ण स्थान व भूमिका (काम) है। कोयला, प्राकृतिक गैस एवं पेट्रोलियम का उपयोग ईंधन व उद्योगों, औषधि एवं उर्वरक में भी होता है। लोहा, एल्यूमिनियम, सोना, यूरेनियम, आदि अनेक महत्वपूर्ण खनिज हैं जिनके बिना आज जीवन के बारे में सोचना भी मुश्किल है।

अभ्यास

प्रश्न 1. शैलों के विभिन्न उपयोगों की सूची बनाइये।

_____

_____

_____

प्रश्न 2. आग्नेय शैलों को प्राथमिक शैल क्यों कहा जाता है? कारण बताइये।

_____

_____

_____

प्रश्न 3. उच्च तापमान और दबाव शैलों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं? उदाहरण सहित बताइये।

_____

_____

_____

प्रश्न 4. खनिजों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? उदाहरण सहित समझाइए।

_____

_____

_____

प्रश्न 5. रिक्त स्थान भरिए।

1. अवसादी शैलों में पौधों, जीव,-जंतुओं जो कभी इन शैलों पर रहे हैं, के _____ भी हो सकते हैं।
2. शैल लुढ़ककर, चटककर तथा एक-दूसरे से टकराकर छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट जाती हैं। इन छोटे कणों को _____ कहते हैं।
3. हीरा _____ का कायांतरित रूप है।
4. खनिज प्राकृतिक रूप में पाए जाने वाले पदार्थ हैं जिनका निश्चित _____ एवं _____ होता है।
5. _____ शैलों का निर्माण परतों में होता है।

कार्यपत्रक -5

विद्यार्थी का नाम _____

हमारी बदलती पृथ्वी

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे चित्र में पृथ्वी की प्रमुख आंतरिक परतों, शैलों के प्रकार तथा वायुमंडल की परतों को पहचानते हैं।

बच्चे आपदाओं तथा विपत्ति के कारकों पर विचार व्यक्त करते हैं।

बच्चे विभिन्न आपदाओं, जैसे-भूकंप, बाढ़, सूखा आदि के दौरान किए जाने वाले बचाव कार्य को विस्तार से बताते हैं।

प्यारे बच्चों, पृथ्वी की ऊपरी परत में लगातार परिवर्तन होते रहते हैं, जिससे पृथ्वी का भौतिक (जो दिखाई दे) स्वरूप बदल जाता है। पृथ्वी की ऊपरी ठोस परत (स्थलमंडल) कई प्लेटों में विभाजित है। इन प्लेटों की चौड़ाई ५ किमी से २०० किमी तक होती है, जो हमेशा पिघले हुए मैग्मा पर घूमती रहती हैं। हम इस गति को महसूस नहीं करते क्योंकि ये प्लेटें बहुत धीमी गति से घूमती हैं - हर वर्ष केवल कुछ मिलीमीटर के लगभग। ये प्लेटें लगातार एक-दूसरे पर बल लगा रही हैं, रगड़ रही हैं और धक्का दे रही हैं। प्लेटों की इस गति के कारण पृथ्वी की सतह पर भी परिवर्तन होता है। हमारे देश भारत की उत्तरी दिशा में स्थित हिमालय पर्वतमाला का निर्माण ऐसे ही प्लेटों के आपस में टकराने और दबाव के कारण हुआ है।

पृथ्वी की गति को उन बलों के आधार पर विभाजित किया गया है जिसके कारण गतियाँ उत्पन्न होती हैं। जो बल पृथ्वी के आंतरिक (अंदर के) भाग में घटित होते हैं उन्हें अंतर्जनित बल (अंदर से उत्पन्न) कहते हैं एवं जो बल पृथ्वी की सतह पर उत्पन्न होते हैं उन्हें बहिर्जनित बल (बाहर से उत्पन्न) कहते हैं।

चित्र 1 स्थलरूपों का विकास

अंतर्जनित बल के प्रभाव

- स्थलमंडलीय प्लेटों के गति के कारण पृथ्वी की सतह पर कंपन होता है जिसे भूकंप कहते हैं। भूकंप के दौरान भूमि पर गहरी दरारें भी विकसित हो सकती हैं जिससे ऊँची इमारतों को भारी नुकसान होता है। कभी-कभी भयंकर भूकंपों में हजारों इमारतें ढह जाती हैं, जिससे जान-माल का भारी नुकसान होता है।
- पृथ्वी के अंदर गर्म मैग्मा कभी-कभी कमजोर और पतली दरारों के माध्यम से लावा के रूप में निकलता है जिसे ज्वालामुखी विस्फोट कहा जाता है। ज्वालामुखी के लम्बे समय तक सक्रिय रहने के कारण ऊँचे पर्वत भी बन जाते हैं।

अंतर्जनित बल से भूकंप एवं ज्वालामुखी जैसी आकस्मिक घटनाओं के कारण पृथ्वी की सतह पर अत्यधिक बदलाव व हानि हो सकती है। भूकंप और ज्वालामुखी विस्फोट के बारे में पहले से जानकारी देना संभव नहीं है। केवल उचित पूर्व योजना और तैयारी ही आपको इन प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सुरक्षित बना सकती है।

भूकंप के दौरान ध्यान रखने योग्य कुछ महत्वपूर्ण बिंदु हैं –

1. सुरक्षित स्थान खोजें - किचन काउंटर, टेबल या डेस्क के नीचे, अंदर के कोने या दीवार के सामने।
2. दूर रहें - आग वाले स्थान, चिमनी के आसपास के क्षेत्र, शीशे और फ्रेम सहित बिखरने वाली खिड़कियां।
3. तैयार रहें - अपने दोस्तों और परिवार के सदस्यों के बीच जागरूकता फैलाएँ और किसी भी आपदा का आत्मविश्वास से सामना करें।

बहिर्जनित बल के प्रभाव

पृथ्वी की ऊपरी सतह पर परिदृश्य (दिखाई देने वाला दृश्य) लगातार विघटित होता (बदलता) रहता है।

- पर्वत जैसी ऊँची-ऊँची संरचनाएँ पृथ्वी की अंतर्जनित बल जैसे प्लेटों की गतियों, ज्वालामुखी और भूकंप का परिणाम होती हैं।
- भू-दृश्य पर जल, पवन एवं हिम जैसे विभिन्न घटकों के द्वारा होने वाले घिसावट से क्षय और टूटने को अपर्दन कहते हैं।

पर्वत जैसी ऊँची संरचनाओं को वायु, जल, हिम व अन्य कारकों द्वारा निरंतर काटा, घिसा, तोडा और पीसा जाता रहता है। वायु, जल और हिम जैसे कारक अपरदित पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं और एक स्थान पर निक्षेपित (जमा) करते हैं। अपरदन एवं निक्षेपण के प्रक्रम (लगातार चलने वाले कार्य) पृथ्वी के धरातल पर विभिन्न स्थलाकृतियों का निर्माण करते हैं। **टिब्बे**, लैगून, नदी, झरने, जलप्रपात, घाटी, बाढ़ के मैदान, डेल्टा आदि इन्हीं बलों के निरंतर कार्य का परिणाम हैं।

अभ्यास

प्रश्न 1. रिक्त स्थान भरिए।

1. हिमालय पर्वतमाला का निर्माण _____ के आपस में टकराने और दबाव के कारण हुआ है।
2. _____ , _____ और _____ अपरदन के कारक हैं।
3. भूकंप और ज्वालामुखी विस्फोट के बारे में _____ देना संभव नहीं है।
4. पृथ्वी की सतह पर शैलों का टूटना _____ कहलाता है।

प्रश्न 2. भूकंप के कारण और परिणाम लिखिए।

_____

_____

_____

प्रश्न 3. भूकंप के दौरान आप कैसे सुरक्षित रह सकते हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 4. पृथ्वी पर परिवर्तन किन दो बलों का परिणाम है? इन दोनों बलों के कार्य भी लिखिए।

_____

_____

_____

प्रश्न 5. उन स्थलाकृतियों/परिदृश्यों की सूची बनाएं जो अपरदन और निक्षेपण के परिणाम हैं।

_____

_____

_____

कार्यपत्रक -6

विद्यार्थी का नाम _____

हमारी बदलती पृथ्वी

अधिगम संप्राप्ति

विद्यार्थी विभिन्न कारकों द्वारा निर्मित स्थलरूपों के बनने की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं।

प्यारे बच्चों, हमने जाना था कि अपरदन एवं निक्षेपण के क्रम पृथ्वी के धरातल पर विभिन्न स्थलाकृतियों का निर्माण करते हैं। वायु, जल और हिम आदि अपरदित पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं, और फलस्वरूप एक स्थान पर निक्षेपित करते हैं।

जल द्वारा परिवर्तन

नदी के जल से दृश्य भूमि का अपरदन होता है। अपने उद्गम से ले कर समुद्र मे मिलने तक नदी विभिन्न स्थलाकृतियों का निर्माण करती है।

जलप्रपात
- जब नदी किसी खड़े ढाल वाले स्थान से अत्यधिक कठोर शैल या खड़े ढाल वाली घाटी में गिरती है, तो यह जलप्रपात बनाती है।

विसर्प
- जब नदी मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है, तो वह मोड़दार मार्ग पर बहने लगती है। नदी के इन्हीं बड़े मोड़ों को विसर्प कहते हैं।

चापझील
- इसके बाद विसर्पों के किनारों पर लगातार अपरदन एवं निक्षेपण शुरू हो जाता है। विसर्प लूप के सिरे निकट आते जाते हैं। समय के साथ विसर्प लूप नदी से कट जाते हैं और एक अलग झील बनाते हैं, जिसे चापझील कहते हैं।

बाढ़ कृत मैदान
- वर्षा काल में कभी-कभी नदी अपने तटों से बाहर बहने लगती है। फलस्वरूप निकटवर्ती क्षेत्रों में बाढ़ आ जाती है। बाढ़ के कारण नदी के तटों के निकटवर्ती क्षेत्रों में महीन मिट्टी एवं अन्य पदार्थों का निक्षेपण करती है। ऐसी मिट्टी एवं पदार्थों को अवसाद कहते हैं। इससे समतल उपजाऊ बाढ़कृत मैदान का निर्माण होता है।

वितरिका

- नदी के ऊँचे उठे तटों को तटबंध कहते हैं। समुद्र तक पहुँचते-पहुँचते नदी का प्रवाह धीमा हो जाता है तथा नदी अनेक धाराओं में विभाजित हो जाती है, जिनको वितरिका कहा जाता है। यहाँ नदी इतनी धीमी हो जाती है कि यह अपने साथ लाए मलबे का निक्षेपण करने लगती है।

डेल्टा

- प्रत्येक वितरिका के मुहानों पर अवसादों के संग्रह से डेल्टा का निर्माण होता है। डेल्टा बहुत उपजाऊ होते हैं, विश्व का सबसे विशाल डेल्टा गंगा – ब्रह्मपुत्र का सुंदरबन डेल्टा है।

चित्र 1: एक जलप्रपात

चित्र 2: बाढ़कृत मैदान में नदी द्वारा निर्मित स्थलकर्तियाँ

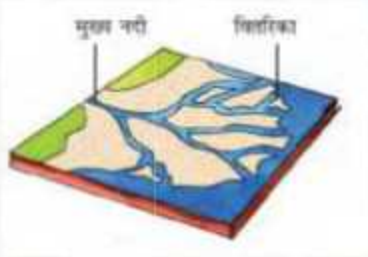

चित्र 3: डेल्टा

समुंद्री तरंगों द्वारा परिवर्तन

समुद्र में भी तरंगों के कारण जल के निरंतर कटाव करने से समुद्री गुफा, समुद्री मेहराब और कटे फटे तट बनते हैं, जबकि समुद्र द्वारा निक्षेपण से बहुत कम ढाल वाले लंबे लंबे निमग्न (डूबे हुए) तट बनते हैं।

चित्र 4: समुंद्री तरंगों द्वारा निर्मित स्थलाकृतियाँ

- समय के साथ शैलों की दरारें और बड़ी ओर चौड़ी होती जाती हैं और जिन्हें समुंदरी गुफा कहते हैं।
- इन गुफाओं के बड़े होते जाने पर इनमें केवल छत ही बचती है, जिससे तटीय मेहराब बनते हैं।
- लगातार अपरदन छत को भी तोड़ देता है और केवल दीवारें बचती हैं।

हिम द्वारा परिवर्तन

हिमनद अथवा हिमानी बर्फ़ की नदियाँ होती हैं। हिमनद अपने नीचे की कठोर चट्टानों से गोल सख्त मिट्टी और पत्थरों को अपरदित कर देती है और साथ-साथ भूदृश्य का अपरदन करती है।

- हिमनद बड़ी मात्रा में मिट्टी, पत्थर और शैलें ले जाते हैं।

चित्र 5: हिमनद

- हिमनद गहरे गर्तों (गढ़्ढों) का निर्माण करते हैं। पर्वतीय क्षेत्र में बर्फ पिघलने से उन गर्तों (गढ़्ढों) में जल भर जाता है और वे सुंदर झील बन जाते हैं।
- हिमनद के द्वारा लाए गए पदार्थ, जैसे–छोटे-बड़े शैल, रेत एवं तलछट मिट्टी निक्षेपित होते हैं। ये निक्षेप हिमनद हिमोढ़ का निर्माण करते हैं।
- हिमनदों से अनेक नदियों का भी उद्गम होता है।

वायु द्वारा परिवर्तन

चित्र 6: बालू टिब्बे

रेगिस्तान में पवन अपरदन एवं निक्षेपण का प्रमुख कारक है।

- रेगिस्तान में आप छत्रक (छतरी) के आकार के शैल देख सकते है, जिन्हें छत्रक शैल कहते हैं। पवन शील के ऊपरी भाग की अपेक्षा निचले भाग को आसानी से काटती है। इसलिए ऐसी शैल के आधार संकीर्ण एवं शीर्ष विस्तृत होते हैं।
- पवन चलते समय अपने साथ रेत को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाती है। जब पवन का बहाव रुकता है तो यह रेत गिरकर छोटी पहाड़ी बनाती है। इनको बालू टिब्बा कहते हैं।
- जब बालू कण महीन एवं हल्के होते हैं, तो वायु उनको उठाकर अत्यधिक दूर ले जा सकती है। जब से बालू कण विस्तृत क्षेत्र में निक्षेपित हो जाते हैं, तो इसे लोएस कहते हैं।

अभ्यास

प्रश्न 1. हिमनद द्वारा अपरदन किस प्रकार होता है जबकि हिमनद की गति बहुत धीमी होती है?

_____

_____

_____

प्रश्न 2. नदी द्वारा कौन-कौन सी स्थालाकृतियाँ/भू- दृश्य अपरदन और निक्षेपण प्रक्रिया द्वारा बनते हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 3. रेगिस्तान में अपरदन और निक्षेपण द्वारा कौन-कौन सी संरचना बनती हैं?

प्रश्न 4. नदी द्वारा सबसे अधिक निक्षेपण क्रिया कहाँ होती है?

प्रश्न 5. वायु, जल और हिमनद द्वारा अपरदन, परिवहन व निक्षेपण क्रिया मानव जीवन को किस तरह प्रभावित करती हैं? अच्छे और बुरे दोनों प्रभाव लिखिये।

कार्यपत्रक -7

विद्यार्थी का नाम _____

वायु

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे वायुमंडल के संघटन एवं संरचना का वर्णन करते हैं। बच्चे अपने आस-पास प्रदूषण के कारकों का विश्लेषण करते हैं तथा उन्हें कम करने के उपायों की सूची बनाते हैं।

वायुमंडल : पृथ्वी के चारों ओर फैले वायु के आवरण को वायुमंडल कहते हैं। पृथ्वी पर सभी जीव जीवित रहने के लिए वायुमंडल पर निर्भर हैं। यह हमें साँस लेने के लिए वायु प्रदान करता है एवं सूर्य की किरणों के झुलसाने वाले प्रभाव से हमारी रक्षा करता है। पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल वायुमंडल को थामे रखता हैं।

पृथ्वी पर जीवन को संभव बनाने में वायुमंडल एक मुख्य कारक है। वायुमंडल के कारण ही पृथ्वी का तापमान रहने योग्य बन पाया। वायुमंडल के अभाव में दिन के समय तापमान इतना अधिक हो जाता कि सब कुछ जल जाए ओर रात को इतना कम कि सब कुछ जम जाए।

क्रियाकलाप : अगर वायुमंडल न हो तो पृथ्वी पर क्या प्रभाव होगा? चर्चा करिये तथा लिखिए।

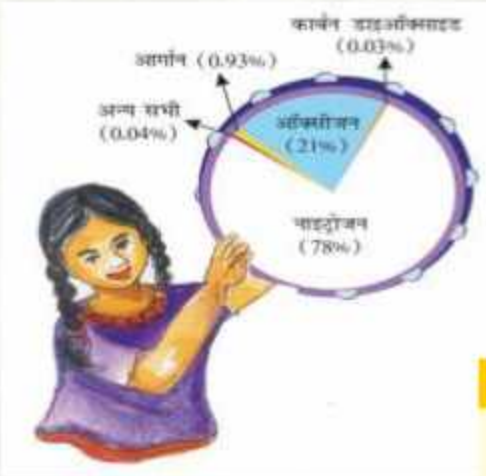

चित्र 1: वायु के संघटक

वायुमंडल में विभिन्न प्रकार की गैसों के अलावा धूल के छोटे-छोटे कण तथा जलवाष्प भी उपस्थित होते हैं। दिये हुए वृत्तरेखा चित्र 1 में वायु के विभिन्न संघटनों के प्रतिशत दर्शाये गए है। इस चित्र का ध्यान पूर्वक अध्ययन कीजिये तथा वायुमंडल की विभिन्न गैसों का उनकी मात्रा से मिलान करिये।

गैस	मात्रा
1. ऑक्सीजन	क) 0.93%
2. कार्बन डाइऑक्साइड	ख) 78%
3. नाइट्रोज़ेन	ग) 21%
4. आर्गन	घ) 0.03%

वायुमंडल में विद्यमान प्रत्येक गैस का कोई न कोई महत्व है। आइये कुछ मुख्य गैसों का महत्व जानते हैं।

नाइट्रोजन : यह पेड़-पौधों के बढ़ने में सहायक होती है।

आक्सीजन : यह सभी जीव-जन्तुओं व मनुष्यों के श्वसन क्रिया व जीवित रहने के लिए आवश्यक है। इसके अभाव में दहन (जलने) की क्रिया भी असंभव है। क्रियाकलाप : वायुमंडल में विद्यमान अन्य गैसों का महत्त्व पता कीजिए।

कार्बन डाइआक्साइड : यह वनस्पति या पेड़ पौधों के भोजन का मुख्य अंग है। जो आगे चलकर सभी जंतुओं के भोजन का आधार हैं। यह दिन के समय सूर्य से प्राप्त ऊष्मा को पृथ्वी पर रोक कर रखती है। इस के अभाव मे रात के समय पृथ्वी इतनी ठंडी हो जाती कि इस पर रहना असंभव होता।

क्रियाकलाप : अवायुमंडल में विद्यमान अन्य गैसों का महत्व पता कीजिए।

वायु प्रदूषण : इंधनों को जलाने, वाहनों, फैक्ट्रियों आदि से निकलने वाले धुएँ से वायु प्रदूषित होती है। इस से मानव, जीव-जंतुओं तथा पर्यावरण को नुकसान पहुँचता है। वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) की सहायता से हम वायु की गुणवत्ता तथा प्रदूषण के स्तर का पता लगा सकते हैं। इसकी बढ़ी हुई मात्रा स्वास्थ्य जोखिमों को दर्शाती है।

क्रियाकलाप : वायु प्रदूषण के कारण तथा दुष्प्रभाव सूचीबद्ध करें।

भूमंडलीय तापन (ग्लोबल वार्मिंग)

अपने घर के बड़े-बुजुर्गों को अक्सर आपने बात करते सुना होगा कि पहले मौसम का बदलाव समय के साथ होता था। परंतु अब न तो सर्दी और न ही गर्मी का मौसम नियमित रहता है और न ही बरसात का मौसम समय से आता है। गर्मियों में भी तापमान पहले की अपेक्षा कहीं अधिक रहता है। मानव द्वारा किए गए कई क्रियाकलाप इस के लिए उत्तरदायी हैं।

पृथ्वी के तापमान में वृद्धि के कारण :

1. कोयला, खनिज तेल आदि जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग। अति मशीनीकरण, अति नगरीकरण, भूमि का बदलता उपयोग
2. बड़ी मात्रा में पेड़ों का काटा जाना।
3. हरित गृह प्रभाव-औद्योगिक क्रांति के बाद पृथ्वी के वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन, ओजोन, क्लोरो-फ्लोरो कार्बन आदि गैसों की मात्रा बढ़ गई है। यह प्रभाव एक काँच के घर के समान होता है, जिसमें सूर्य से गर्मी आ तो सकती पर लौट नहीं सकतीं।

भूमंडलीय तापन के दुष्प्रभाव

1. तापमान की इस वृद्धि के कारण आर्कटिक प्रदेशों में जमी बर्फ पिघलती है। जिससे समुद्र के जलस्तर में वृद्धि होती है और तटीय क्षेत्रों मे बाढ़ आ जाती है।
2. लंबी अवधि में इसके कारण जलवायु में अत्यधिक परिवर्तन हो सकता है, जिसके फलस्वरूप कुछ पौधे एवं पशु लुप्त हो सकते हैं।

क्रियाकलाप : भूमंडलीय ताप वृद्धि के दुष्प्रभावों को किस प्रकार कम किया जा सकता है? चर्चा करें।

अभ्यास

प्रश्न 1. जीवनदायिनी / प्राणदायी वायु कौन सी गैस को कहा जाता है ओर क्यों?\

प्रश्न 2. वायुमंडल को परिभाषित करें।

प्रश्न 3. हमारे वायुमंडल का एक बड़ा भाग किन दो गैसों से मिल कर बना है।

प्रश्न 4. उपरोक्त सिलेंडर के चित्रों को देखें और बताएँ कि उनका प्रयोग किस काम के लिए होता है तथा इनमे कौन सी गैस होती है?

कार्यपत्रक -8

विद्यार्थी का नाम _____

वायु

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे वायुमंडल के संघटन एवं संरचना का वर्णन करते हैं।

प्यारे बच्चों, आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि एक समान दिखने वाला हमारा वायुमंडल वास्तव में पाँच परतों में विभाजित है, जो पृथ्वी की सतह से आरंभ होती हैं। ये हैं – क्षोभमंडल, समतापमंडल, मध्यमंडल, बाह्य मंडल एवं बहिर्मंडल। परंतु हम इसे देख नहीं पाते क्योंकि हम वायु को देख नहीं सकते केवल महसूस कर सकते हैं और आसमान की ओर देखने पर भी एक सीमा तक ही हम वस्तुओं को देख पाते है। यह पाँच परतें अलग-अलग तरह से हमारे लिए उपयोगी हैं। आइये इन परतों के बारे में विस्तार से जानते हैं।

क्षोभमंडल

- यह वायुमंडल की सबसे महत्वपूर्ण परत है।
- इसकी औसतन ऊँचाई 13 किलोमीटर है।
- हम इसी मण्डल में मौजूद वायु में साँस लेते हैं।
- मौसम संबंधी सभी घटनाएँ जैसे – वर्षा, कुहरा, बादल गरजना, बिजली चमकना, आँधी-तूफान आना ओलावर्षण आदि इसी परत में होती है।
- इस परत में प्रति 165 मीटर की ऊँचाई पर वायु का तापमान 1 डिग्री सेल्सियस की औसत दर से घटता है।

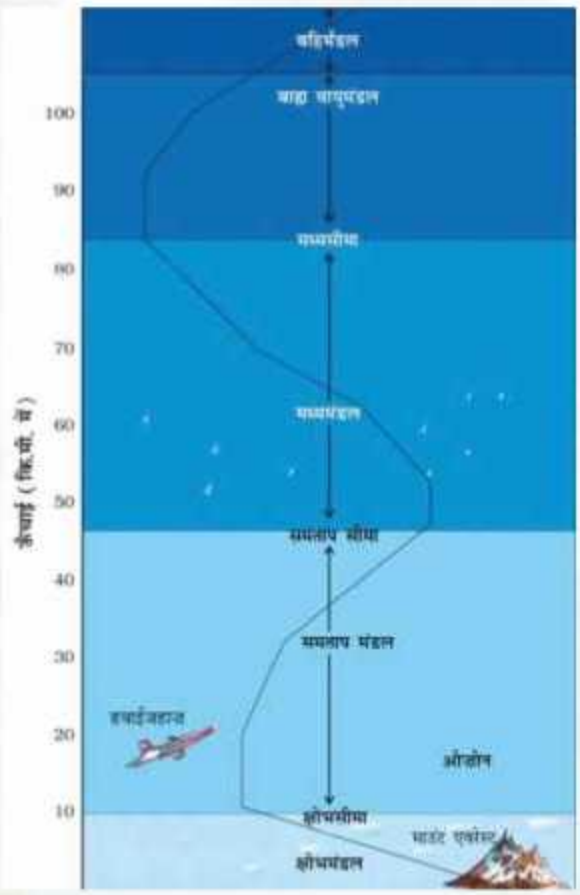

चित्र 1 वायुमंडल की परतें

समतापमंडल

- क्षोभमंडल के ऊपर की परत को समतापमंडल कहते हैं।
- यह लगभग 50 किलोमीटर की ऊँचाई तक फैली है।
- इस परत में तापमान लगभग एक समान रहता है।
- यह परत बादलों एवं मौसम संबंधी घटनाओं से लगभग मुक्त होती है। इसके फलस्वरूप यहाँ की परिस्थितियाँ हवाई जहाज के उड़ने के लिए आदर्श होती हैं।
- समतापमंडल में ओज़ोन गैस की परत है, जो सूर्य से आने वाली हानिकारक गैसों से हमारी रक्षा करती है।

मध्यमण्डल

- यह वायुमंडल की तीसरी परत है।
- यह समतापमंडल के ठीक ऊपर होती है।
- यह लगभग 80 किलोमीटर की ऊँचाई तक फैली है।
- अन्तरिक्ष से प्रवेश करने वाला उलका पिंड इस परत में आने पर जल जाते हैं।

बाह्य वायुमंडल

- यह वायुमंडल की चौथी परत है।
- बाह्य वायुमंडल में बढ़ती ऊँचाई के साथ तापमान अत्यधिक तीव्रता से बढ़ता है।
- आयन मण्डल इस परत का एक भाग है।
- यह 80 से 400 किलोमीटर तक फैला है।
- वायरलैस संचार जैसे मोबाइल, इंटरनेट, रेडियो आदि के उपयोग के लिए इस के कारण ही संभव होता है। वास्तव में पृथ्वी से प्रसारित रेडियो तरंगें इस परत द्वारा पुनः पृथ्वी पर भेज दी जाती हैं।

बहिर्मंडल

- यह वायुमंडल की अंतिम और सबसे ऊपरी परत है।
- हल्की गैसें जैसे – हीलियम एवं हाइड्रोज़ेन यहीं से अंतरिक्ष में तैरती रहती हैं।

अभ्यास

प्रश्न 1. मौसम संबंधी सभी घटनाएँ वायुमंडल की किस परत में होती हैं?

प्रश्न 2. ओज़ोन परत की हमारे जीवन में क्या उपयोगिता है?

प्रश्न 3. कुछ समय से समाचार पत्रों में ओज़ोन परत में सुराख की खबरें आ रही हैं? आपके अनुसार ओज़ोन परत में सुराख के क्या कारण हो सकते हैं? इसके क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं।

प्रश्न 4. निम्न चित्रों से वायुमंडल की परतों को पहचानिए।

प्रश्न 5. वायुमंडल की विभिन्न परतों के नाम तथा ऊँचाई लिखिए।

कार्यपत्रक -9

विद्यार्थी का नाम _____

वायु

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे ग्लोब अथवा विश्व के मानचित्र पर विभिन्न जलवायु प्रदेशों के वितरण तथा विस्तार को बताते हैं।

मौसम और जलवायु

प्यारे बच्चों, आपने मौसम के बारे में जरूर सुना व सोचा होगा। हम अक्सर कहते या सुनते हैं कि आज का मौसम अच्छा है या मौसम बदल गया या मौसम बहुत खराब हो गया। वो कौन से कारक हैं जिनसे हमें मौसम सुहावना, अच्छा, बिगड़ा हुआ या खराब लगने लगता है? आओ जानते हैं-अब आप बताइये आप को आज का मौसम कैसा लग रहा है और क्यों?

मौसम, किसी भी समय एक स्थान विशेष (छोटे स्थान) के वायुमंडल की स्थिति होती है। वायुमंडल की स्थिति में तापमान, आर्द्रता (हवा में नमी), वायुदाब (हवा चलने/गति का कारण) शामिल हैं। मौसम के इन तीन कारकों के मेल से ही किसी स्थान का उस समय का मौसम निर्धारित होता है। आर्द्र एवं गर्म मौसम किसी को भी चिड़चिड़ा बना सकता है। कम गर्मी व हवादार मौसम हमें अच्छा लगता है। बहुत तेज गर्मी या बहुत उमस का चिपचिपा बनाने वाला या बहुत तेज आँधी तूफान की दशा को हम खराब मौसम ही कहते हैं। जैसे ही तापमान, आर्द्रता या वायुदाब बदलता है हम कहते हैं कि मौसम बदल गया। लंबे समय (कम से कम 30 वर्ष) में किसी स्थान का औसत मौसम, उस स्थान की जलवायु बताता है।

भारत का मौसम बताना क्यों संभव नहीं है? चर्चा करें।

अब आप बताइये आप को आज का मौसम कैसा लग रहा है और क्यों?

तापमान

आप प्रतिदिन जिस तापमान का अनुभव करते हैं, वह वायुमंडल का तापमान होता है। वायु में मौजूद ताप के परिमाण को तापमान कहते हैं।

वायुमंडल का तापमान केवल दिन और रात में ही नहीं बदलता बल्कि ऋतुओं के अनुसार भी बदलता है। शीत ऋतु की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु में तापमान अधिक रहता है। क्या आप जानते हैं आज के दिन का

अधिकतम तथा न्यूनतम तापमान लगभग कितना रहने वाला है?

सूर्य से आने वाली वह ऊर्जा जिसे पृथ्वी रोक लेती है, आतपन कहलाती है, जो तापमान के वितरण को प्रभावित होता है। आतपन (सूर्यातप) की मात्रा व तापमान विषुवत वृत्त (भूमध्य रेखा) से ध्रुवों की ओर घटती है इसीलिए ध्रुव बर्फ़ से ढँके हुए हैं।

यदि पृथ्वी का तापमान अत्यधिक बढ़ जाए तो क्या क्या परिणाम हो सकते हैं? चर्चा करें।

तापमान को मापने की मानक (जिसे सभी मानते हैं) इकाई डिग्री सेल्सियस है। सेल्सियस पैमाने पर जल 0° सेल्सियस पर जमता है एवं 100° सेल्सियस पर उबलता है। हमारे शरीर का भी एक निश्चित तापमान होता है।

वायु दाब

पृथ्वी की सतह पर वायु के भार द्वारा लगाया गया दाब, वायु दाब कहलाता है। समुद्र स्तर पर वायु दाब सर्वाधिक होता है और ऊँचाई पर जाने पर यह घटता जाता है। अधिक तापमान वाले क्षेत्रों में वायु गर्म होकर ऊपर उठती है। यह निम्न दाब (कम दबाव) क्षेत्र बनाता है। कम तापमान वाले क्षेत्रों की वायु ठंडी और भारी होती है। भारी वायु सिकुड़ कर उच्च दाब क्षेत्र बनाती है।

वायु सदैव उच्च दाब क्षेत्र से निम्न दाब क्षेत्र की ओर चलती है, इसे 'पवन' कहते हैं। आप पवन को धूल उड़ने, पत्तों के हिलने, से लेकर तेज आँधी तूफान में अनुभव कर पाते हो। पवन को मुख्यत: तीन कोटियों में विभाजित किया जा सकता है।

1. स्थायी पवनें: ये वर्ष भर लगातार निश्चित दिशा में चलती रहती हैं, व्यापारिक, पश्चिमी एवं पूर्वी पवनें स्थायी पवनें हैं
2. मौसमी पवनें: ये पवनें विभिन्न ऋतुओं में अपनी दिशा बदलती रहती हैं। भारत में मानसूनी पवनें ।
3. स्थानीय पवनें: ये पवनें किसी छोटे क्षेत्र में वर्ष या दिन के किसी विशेष समय में चलती हैं। जैसे स्थल एवं समुद्री समीर, भारत के उत्तरी क्षेत्र की गर्म एवं शुष्क (सूखी) 'लू' पवन।

आद्रता

पृथ्वी एवं विभिन्न जलाशयों का जल वाष्पित होकर जलवाष्प बन जाता है। वायु में किसी भी समय जलवाष्प की मात्रा को 'आर्द्रता' कहते हैं। जैसे-जैसे वायु गर्म होती जाती है, इसकी जलवाष्प धारण करने की क्षमता बढ़ती जाती है, इसीलिए गर्म व आर्द्र (नमी) दिनों में, कपड़े सूखने में काफ़ी समय लगता है।

अब आप बताइये कि गर्म और आर्द्र दिन में हम असहज महसूस क्यों करते हैं?

जलवाष्प ऊपर उठ ठंडा होकर जल की बूँद बनाते हैं। बादल इन्हीं जल बूँदों का ही एक समूह होता है। जब जल की ये बूँदें इतनी भारी हो जाती हैं कि वायु में तैर न सकें, तब ये वर्षण के रूप में नीचे आ जाती हैं। वर्षण वर्षा, हिमपात या ओले के रूप मे हो सकता है।

पृथ्वी पर जल के रूप में गिरने वाला वर्षण, वर्षा कहलाता है। ज़्यादातर भौम जल (भूमि के अंदर का)

वर्षा जल से ही प्राप्त होता है। पौधों तथा जीव-जंतुओं के जीवित रहने के लिए वर्षा बहुत महत्त्वपूर्ण है। इससे धरातल को ताज़ा जल प्रदान होता है। यदि वर्षा कम हो, तो जल की कमी तथा सूखा हो जाता है। इसके विपरीत अगर वर्षा अधिक होती है, तो बाढ़ आ जाती है।

अब आप समझ गए होंगे कि मौसम क्या है और यह बदलता कैसे है।

अभ्यास

प्रश्न 1. जलवायु मौसम से किस प्रकार भिन्न है?

प्रश्न 2. मौसम का दैनिक पूर्वानुमान क्यों लगाया जाता है?

प्रश्न 3. समाचार पत्रों में मौसम से संबन्धित क्या-क्या जानकारी उपलबद्ध करवाई जाती है।

प्रश्न 4. मौसम की जानकारी के लिए किन-किन यंत्रों का उपयोग किया जाता है? पता लगाएँ।

प्रश्न 5. वर्षा की हमारे जीवन में क्या उपयोगिता है? अधिक वर्षा से होने वाले दुष्प्रभाव भी बताएँ।

कार्यपत्रक -10

विद्यार्थी का नाम _____

जल

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे प्राकृतिक संसाधनों, जैसे – वायु, जल, पादप (पेड़-पौधे) एवं जंतुओं के संरक्षण के प्रति विचार विमर्श करते हैं।

प्यारे बच्चों, आपने वर्षा ऋतु में पानी बरसते जरूर देखा होगा। आओ, विचार करें कि...

- यह बरसता हुआ पानी आता कहाँ से है और बहता हुआ पानी कहाँ चला जाता है?
- नदियों में जल कहाँ से आता है?
- पर्वतों की चोटियों पर बर्फ कहाँ से आई?
- जमीन के नीचे से कुओं और नलकूपों में जल कहाँ से आता है?
- अपने घर में हम जिस पानी का इस्तेमाल करते हैं, क्या उसका भी कुछ संबंध इस वर्षा के जल से है?

जल चक्र

सूर्य के ताप के कारण पृथ्वी की सतह या धरातल का जल (विशेषकर महासागरों से) वाष्पित (भाप बनना) हो जाता है। ऊँचाई पर जाकर, तापमान कम होने के कारण जलवाष्प संघनित (इकट्ठा) होकर बादलों का रूप ले लेता है। यहाँ से यह वर्षा, हिम अथवा हिम वृष्टि (बर्फ के साथ वर्षा) के रूप में पृथ्वी पर नीचे गिरता है।

जल लगातार अपने स्वरूप को बदलता रहता है और महासागरों, वायुमंडल एवं धरती के बीच विभिन्न रूपों में घूमता रहता है, इसे जल चक्र कहते हैं।

- वाष्पीकरण : जल का भाप में बदलना
- संघनन : भाप का ठंडा होकर बादल बनना

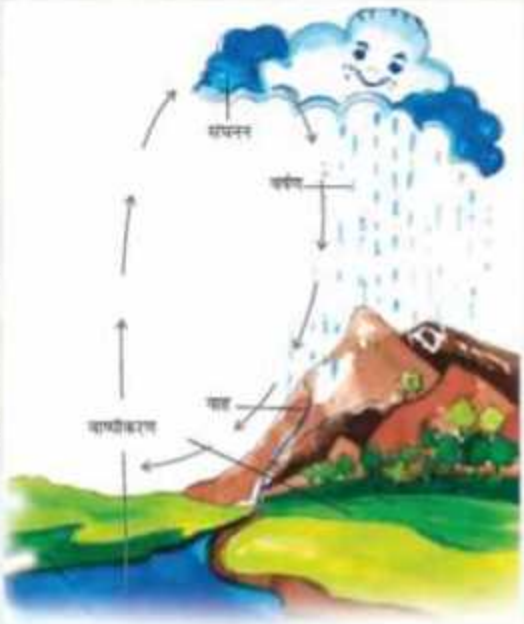

चित्र : जल चक्र

- वर्षण: जल का धरती पर विभिन्न रूपों में गिरना
- बाह: धरती पर गिरे जल का बह कर विभिन्न प्राकृतिक स्रोतों में जाना

जल की उपयोगिता

जीवन के लिए जल अत्यधिक आवश्यक है। जल में कोई ऊर्जा (ताकत/शक्ति) या जैविक पोषक तत्व नहीं होता है किंतु यह जीवन के सभी ज्ञात रूपों के लिए महत्वपूर्ण है।

- जल में अधिकांश खनिज व लवण घुल सकते हैं, इस कारण भोजन से लेकर, कृषि, पशु पालन, उद्योगों तक में इसका बहुत उपयोग व महत्व है।
- मनुष्यों द्वारा उपयोग किए जाने वाले मीठे पानी का लगभग 70% कृषि में जाता है।
- जलाशयों, समुद्रों में मछली पकड़ना भोजन व रोजगार का एक प्रमुख स्रोत है।
- अधिकांश पेट्रोलियम तेल और प्राकृतिक गैस का मुख्य स्रोत (प्राप्ति स्थान) है।
- निर्मित उत्पादों का लंबी दूरी का व्यापार व परिवहन समुद्र, नदियों, झीलों और नहरों के माध्यम से किया जाता है।
- जल का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। जल एक पारदर्शी (आर-पार दिखाई देने वाला) आकारहीन, गंधहीन और लगभग रंगहीन रासायनिक पदार्थ है। जल,पृथ्वी पर सामान्य परिस्थितियों में ठोस(बर्फ), तरल(पानी) और गैस(भाप) के रूप में मौजूद रहने वाला एकमात्र पदार्थ है।

चर्चा कीजिये :

- क्या बिना जल के आपके घर में भोजन पकाया जा सकता है?
- भोजन बनाने की क्रिया में जल का क्या योगदान है?
- सब्जी धोने, दाल बनाने, आटा गूँथने जैसे कामों के लिए पानी का ही प्रयोग क्यों किया जाता है?
- यदि 2 या 3 दिन भी जल उपलब्ध न हो तो कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

पृथ्वी पर जल का वितरण

पृथ्वी की सतह का तीन-चौथाई भाग जल से ढँका हुआ है। जल पृथ्वी की नदियों, झीलों और महासागरों का मुख्य घटक है। पृथ्वी पर थल (कठोर भूमि) की अपेक्षा जल अधिक है फिर भी

प्रति 1000 ग्राम जल में मौजूद नमक की मात्रा को लवणता कहते है। महासागर की औसत लवणता, 35 ग्राम प्रति हज़ार ग्राम है।

अनेक देशों में जल की कमी का सामना करना पड़ता है। इसका कारण यह है कि पृथ्वी पर उपलब्ध जल का 97% से अधिक भाग महासागरों में है। महासागरों एवं समुद्रों का जल लवणीय (नमकीन) होता है तथा मानव उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं होता है। किंतु इसी लवणीय जल से हमारे भोजन का मुख्य अंग नमक भी प्राप्त होता है।

पृथ्वी पर उपलब्ध लगभग 2% जल ध्रुवों पर बर्फ़ की चादर के रूप में है। 1% से भी कम अलवणीय जल मानव उपयोग के लिए उपलब्ध है। अलवणीय जल के मुख्य स्रोत नदी, ताल, सोते एवं हिमनद हैं। समझदारी से जल का उपयोग करने पर हम इस बहुमूल्य संसाधन को बचा सकते हैं।

अभ्यास

प्रश्न 1. यदि पृथ्वी पर थल की अपेक्षा जल अधिक है, तो अनेक देशों में जल की कमी का सामना क्यों करना पड़ता है? कारण बताइये।

_____

_____

_____

प्रश्न 2. ऐसे कुछ उपाय बताइये जिनसे जल की बचत हो सके या जल का अपव्यय रोका जा सके।

_____

_____

_____

प्रश्न 3. आप प्रतिदिन जल का विविध रूपों में उपयोग करते हैं। जल के विविध उपयोगों की सूची बनाइये।

_____

_____

_____

प्रश्न 4. निम्न रिक्त स्थानों को भरिये। (संकेत : सभी रिक्त स्थानों मे एक ही शब्द आएगा)

प्रश्न 5. दिये गए जल चक्र के चित्र में रंग भरिए तथा नामांकित करिये। (संकेत – प्रवाह, संघनन, वर्षण, वाष्पीकरण)

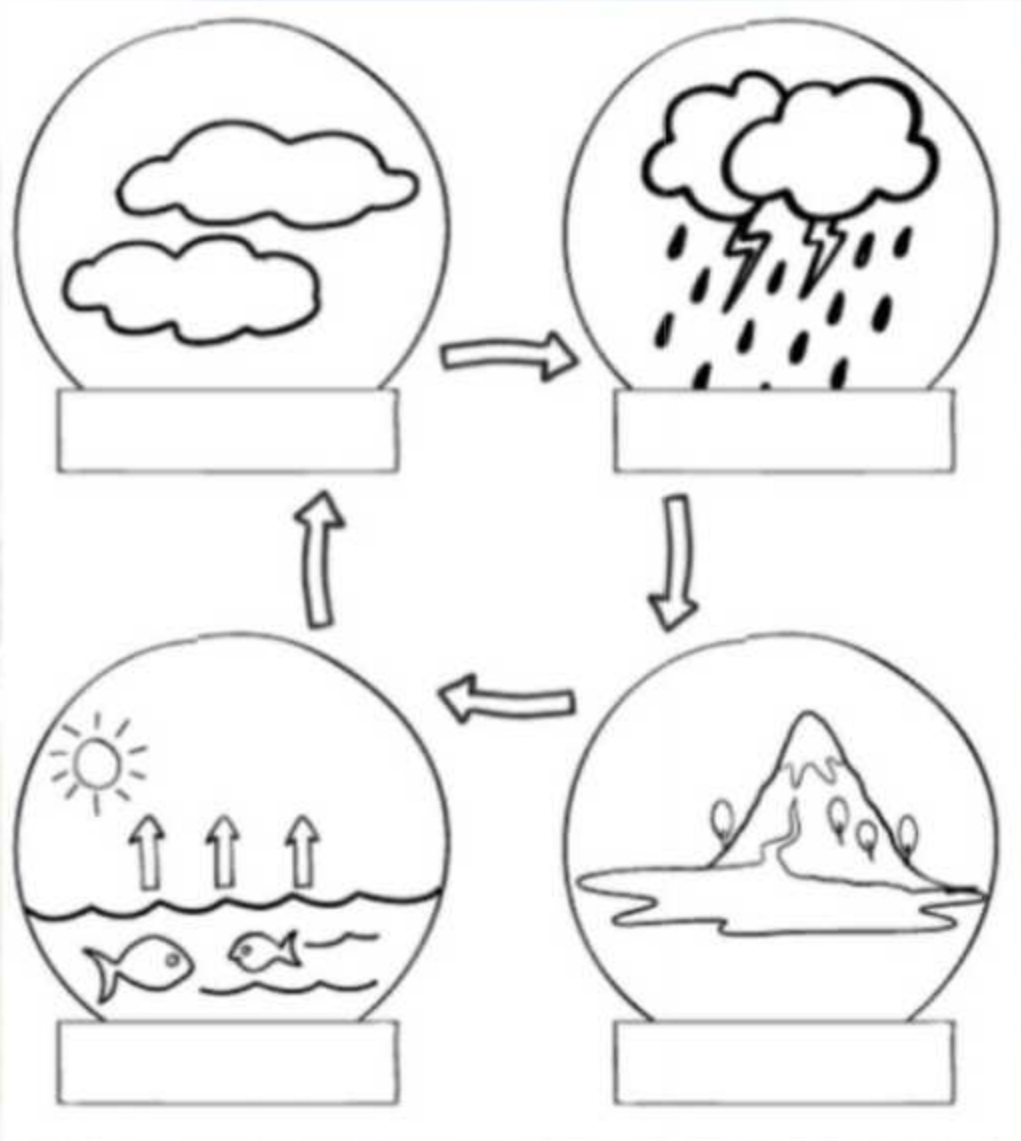

प्रश्न 6. जल सबसे सस्ता और सबसे महंगा संसाधन माना जा सकता है। इसके बिंदु लिखिये।

_____

_____

_____

कार्यपत्रक -11

विद्यार्थी का नाम _____

जल

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे प्राकृतिक संसाधनों, जैसे – वायु, जल, ऊर्जा, पादप (पेड़-पौधे) एवं जंतुओं के संरक्षण के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं। बच्चे आपदाओं तथा विपत्ति के कारकों पर विचार व्यक्त करते हैं।

जल की विभिन्न गतियाँ

जल की विभिन्न गतियों के विषय में दो भाई – बहन, जिज्ञासा और कबीर की उनके पड़ोस में रहने वाले शिक्षक श्रीमान इकबाल से बातचीत के कुछ अंश।

जिज्ञासा : पिछली कक्षा में हमने जाना था कि हमारी पृथ्वी के दो तिहाई से अधिक भाग पर जल है। नदियों और नालों में हमने पानी बहते हुए भी देखा है। ये नदियों और नालों का जल कहाँ जाता है? और सबसे ज्यादा जल एक साथ कहाँ देखा जा सकता है?

कबीर : पृथ्वी पर सबसे अधिक जलराशि (जल संग्रह) महासागरों (बहुत बड़े समुद्रों) में होती है। ऐसा मैंने पढ़ा था और फिल्मों में देखा भी है

जिज्ञासा : क्या महासागरों का जल भी नदी की तरह गतिमान (गति करता/चलता) है या तालाब के जल की तरह केवल ऊपर नीचे उठता है?

कबीर : चलो अपने गुरु जी से पूछते हैं।

इकबाल गुरुजी : प्यारे बच्चों, महासागरीय जल हमेशा गतिमान रहता है। महासागरों के जल की गतियों को मुख्य रूप से इस प्रकार से बाँट सकते हैं– तरंगें, ज्वार-भाटा एवं धाराएँ।

जिज्ञासा : गुरुजी, ये तरंग क्या होती है?

इकबाल गुरुजी : बच्चों, आपने कभी न कभी किसी तालाब के जल में पत्थर अवश्य फेंका होगा? आपने वहाँ कुछ महसूस किया?

कबीर : जी, तालाब में एक पत्थर फेंकने से पानी ऊपर नीचे हलचल करने लगता है।

इकबाल गुरुजी : जल में यह हलचल तरंग होती हैं। जब महासागरीय (महासागरों के) सतह पर जल लगातार उठता और गिरता रहता है, तो इन्हें तरंगें कहते हैं। समुद्री सतह पर पवन

बहने से तरंगें जल में उत्पन्न (जन्म लेती /पैदा) होती हैं।

कबीर : जी गुरुजी, हमने टी.वी. पर समुद्र में इस प्रकार की हलचलों (लहरों) को देखा है। कितनी सुहावनी लगती हैं। लेकिन मैंने टी.वी. पर देखा था कि इनके कारण अत्यधिक विनाश भी हो सकता है।

जिज्ञासा : सही कहा, कभी-कभी हम समाचारों में तरंगों से हुए नुकसान/विनाश के बारे में भी सुनते हैं।

इकबाल गुरुजी : सही कहा बच्चों समुद्र की लहरें सुहावनी तो लगती हैं। परंतु तूफ़ान में तेज़ वायु चलने पर विशाल तरंगें उत्पन्न होने, भूकंप आने, ज्वालामुखी फटने, या जल के नीचे भूस्खलन (जमीन के बड़े टुकड़े का नीचे की ओर खिसकना) के कारण महासागरीय जल बहुत ज्यादा विस्थापित (पीछे हटना) होता है। इनसे 15 मीटर तक की ऊँचाई वाली विशाल तरंगें उठ सकती हैं, जिसे सुनामी कहते हैं।

क्रियाकलाप : 2004 में भारत में हुई सुनामी के बारे में जानकारी जुटाइये। (पाठ्य पुस्तक पृष्ठ 34-35)

जिज्ञासा : गुरुजी, क्या और भी कोई गति महासागरों में होती है?

इकबाल गुरुजी : हाँ बच्चों, ज्वार-भाटा और धाराएँ भी महासागरीय जल की गतियाँ हैं। दिन में दो बार नियम से महासागरीय जल का उठना एवं गिरना 'ज्वार-भाटा' कहलाता है। सर्वाधिक ऊँचाई तक जल का उठना ज्वार कहलाता है। जब जल अपने निम्नतम स्तर तक आ जाए तो उसे भाटा कहते हैं।

कबीर : महासागरों का जल आखिर किस कारण से अपने सबसे ऊँचे और सबसे निचले स्तर तक गति करता है?

इकबाल गुरुजी : सूर्य एवं चंद्रमा के शक्तिशाली गुरुत्वाकर्षण बल (भारी वस्तु द्वारा हल्की वस्तु को अपनी ओर खींचने की शक्ति) के कारण पृथ्वी की सतह पर ज्वार-भाटे आते हैं। पूर्णिमा एवं अमावस्या को सूर्य, चंद्रमा एवं पृथ्वी तीनों एक सीध में होते हैं और इस समय सबसे ऊँचे ज्वार उठते हैं।

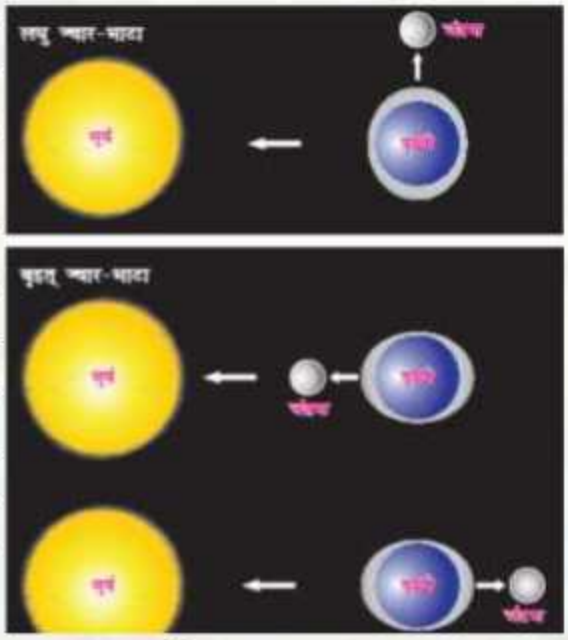

चित्र : ज्वार भाटा

जिज्ञासा : क्या ज्वार-भाटा से मानव को कुछ लाभ भी है?

इकबाल गुरुजी : इस ज्वार भाटे के बहुत से लाभ भी हैं। ऊँचे ज्वार नौसंचालन (नाव/जहाज के चलाने) में और जहाज़ को गहरे समुद्र से बंदरगाह तक पहुँचाने में मदद करते हैं। उच्च ज्वार मछली पकड़ने में भी मदद करते हैं। उच्च ज्वार के दौरान काफी मछलियाँ तट के निकट आ जाती हैं और मछुआरे बिना कठिनाई के मछलियाँ पकड़ पाते हैं।

जिज्ञासा : अच्छा तो ज्वार के तो बड़े लाभ हैं।

इकबाल गुरुजी : यही नहीं, ज्वार-भाटे की सहायता से टरबाईन (बहुत बड़ी घूमने वाली मोटर) चला कर बिजली भी बनाई जाती है।

कबीर : गुरुजी, क्या महासागरीय धाराएँ नदी की तरह बहती हैं?

इकबाल गुरुजी : कबीर सही कहा, महासागरों के जल में भी नदियों की तरह बहाव देखा जाता है, इन्हें महासागरीय धाराएँ कहते हैं। निश्चित दिशा में महासागरीय सतह पर नियमित रूप से बहने वाली जल की गर्म या ठंडी धाराएँ (लगातार बहाव) बहती हैं। सामान्यतः : गर्म महासागरीय धाराएँ भूमध्य के निकट उत्पन्न होती हैं एवं ध्रुवों की ओर बहती हैं। ठंडी धाराएँ, ध्रुवों या उच्च अक्षांशों से उष्णकटिबंधीय या निम्न अक्षांशों की ओर प्रवाहित होती हैं।

जिज्ञासा : क्या महासागरीय धाराएँ भी किसी प्रकार से हमारे लिए लाभदायक हैं?

इकबाल गुरुजी : महासागरीय धाराएँ, किसी क्षेत्र के तापमान को प्रभावित कर गर्म या ठंडा कर सकती हैं। जिस स्थान पर गर्म एवं शीत जल धाराएँ मिलती हैं वहाँ सूक्ष्म (बहुत छोटे) जीव, प्लवक पाए जाते हैं जो सभी मछलियों का आहार (भोजन) भी हैं, इस कारण वह स्थान सर्वोत्तम मत्स्ययन (मछली पकड़ने का) क्षेत्र माना जाता है। इसी लिए गर्म और ठंडी जलधाराओं के मिलने के स्थान जैसे जापान के पूर्वी महासागरीय भाग व अमरीका के पूर्वी भाग न्यू फाउंडलैंड के क्षेत्र मत्स्ययन के लिए बहुत अच्छे हैं।

कबीर : इसका मतलब महासागरों से हमें बहुत बड़ी मात्रा में खाद्य (खाने योग्य) संसाधन मिलते हैं, मेरी दादी जी बता रही थीं कि हमारे भोजन का अभिन्न अंग नमक भी समुद्रों के जल से ही प्राप्त होता है।

इकबाल गुरुजी : बिल्कुल सही कहा। इसके अलावा महासागरों से पेट्रोलियम जैसे महत्वपूर्ण खनिज भी मिलते हैं, जो पूरे विश्व में ईंधन का महत्वपूर्ण स्रोत है। महासागरों द्वारा बड़े स्तर पर परिवहन का सबसे सस्ता साधन प्राप्त होता है, आज भी विश्व भर के व्यापार का अधिकांश परिवहन समुद्री मार्गों से ही होता है।

अभ्यास

बच्चों, आज के कार्यपत्रक में हमने महासागरों की गतियों के बारे में चर्चा की। अब कुछ प्रश्नों का उत्तर दीजिये।

प्रश्न 1. चेन्नई समुद्र के किनारे बसा हुआ एक महानगर है, यहाँ वर्ष भर पीने के पानी की कमी रहती है। कारणों की खोज करिये।

_____

_____

_____

प्रश्न 2. यदि महासागरों का जल सूख जाए तो क्या-क्या परिणाम हो सकते हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 3. मिलान करें।

क) तरंगें	i) दिन में दो बार (उच्चतम तथा निम्न स्तर) नियम से जल का उठना व गिरना
ख) ज्वार-भाटा	ii) निश्चित मार्ग में प्रवाहित होने वाली जल धाराएँ
ग) महासागरीय धाराएँ	iii) महासागरीय जल का लगातार उठना व गिरना

प्रश्न 4. दो गर्म (उष्ण) धाराओं तथा दो शीत धाराओं के नाम बताइये। (अपनी पुस्तक का पृष्ठ 37 देखिये)

_____

_____

_____

कार्यपत्रक -12

विद्यार्थी का नाम _____

प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीवन

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे विभिन्न जलवायु एवं स्थलरूपों में पाए जाने वाले पादप एवं जंतुओं की विभिन्नताओं के कारणों को बताते हैं।

समीर बहुत खुश था क्योंकि पूरे 3 साल बाद गर्मियों की छुट्टियों में वह अपने गाँव जा रहा था और वो भी रेल से। उसके माता पिता दोनों ही चेन्नई में एक कताई मिल में काम करते हैं। चेन्नई से रेल द्वारा शिमला होते हुए मनाली और आगे बस से यात्रा बहुत लंबी थी।

छोटी बहन रूबी और समीर रेल की खिड़की से बाहर के तेजी से बदलते नजारे देखते हुए बहुत उत्सुक थे। चेन्नई से रेल जैसे-जैसे आगे बढ़ रही थी तो स्थलाकृति (सतह की आकृति/ बनावट) और पेड़ पौधों के बदलते रूपों को देखकर कितनी हैरानी हो रही थी। शहर से निकलते ही हरे भरे खेत, केले के बगीचे, रबर के बागान दिखाई दिये। जहाँ दूर-दूर तक गाँव या आबादी नहीं थी, वहाँ जंगल शुरू हो गए।

रूबी : भाई अभी तक तो खेतों में अलग अलग पौधों से खूब हरियाली दिखाई दे रही थी। लेकिन अब तो तरह तरह कर खूब सारे पेड़ पौधे दिखाई दे रहे हैं। कुछ अलग सा लग रहा है।

समीर : हाँ, जो हरियाली खेतों और क्यारियों में आबादी के आसपास एक जैसे पौधे क्यारियों में दिखाई दे रहे थे वो अलग अलग फसलें थी, जो किसी न किसी द्वारा उगाई जाती है। अब जो दिखाई दे रही हैं वो प्राकृतिक (प्रकृति द्वारा अपने आप) उगने वाले पेड़, पौधे, झाड़ियाँ, घास व बेल या लताएँ हैं। इन्हीं को वन (जंगल) कहा जाता है। इनमें पाई जाने वाली अपने आप उगने वाली वनस्पति (पेड़-पौधों) को प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं। इस बारे में हमारी भूगोल की कक्षा में हमें बताया गया था।

रूबी : इसका मतलब फसलों को प्राकृतिक नहीं माना जाता।

पापा : हाँ बेटा, फसलें तो हम अपने खेतों में अपनी अनाज और दूसरी जरूरतों को पूरा करने के लिए बोते हैं। वनों में बहुत से जंगली जानवर भी रहते हैं, जो खेतों में नहीं रहते।

समीर : क्या जानवर भी खास जगहों पर रहते हैं।

मम्मी : हाँ, मुझे याद है कि हमारे गाँव के पास जंगल में हमने लोमड़ी, साँप, हिरण, सियार और कई बार तेंदुआ भी देखा था। अब जंगल साफ करके वहाँ आबादी बन गई है या खेती होने लगी है तो ये जंगली जानवर भी नहीं दिखाई पड़ते।

रूबी : एक बात और मैंने देखी कि जैसे-जैसे मिट्टी का रंग बदल रहा है वैसे ही पेड़-पौधे भी बदले से लग रहे हैं।

पापा : रूबी, बड़ी पैनी नजर है तुम्हारी। किसी भी स्थान की जलवायु की दशाएँ आदि वहाँ पाई जाने वाली प्राकृतिक वनस्पति को पूरी तरह से प्रभावित करती हैं। अब हमारी रेलगाड़ी अलग-अलग जलवायु वाले स्थानों से गुजरेगी, जहाँ अलग-अलग प्रकार की मिट्टी, मिट्टी की परत की मोटाई, जल, नमी, तापमान, धरती की सतह, ढाल होगी। उसी के अनुसार इन स्थानों पर पाए जाने वाले पेड़ और अन्य वनस्पति की सघनता और प्रकार में अंतर आता जायेगा।

समीर : अब हम आंध्र प्रदेश से गुजर रहे हैं।

पापा : हाँ, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों के मैदानी भाग में शीशम, साल, पीपल, नीम, आम, आँवला, चंदन जैसे पेड़ और पठारी भाग में कंटीली झाड़ियाँ, बेल, खेजड़, खजूर जैसी वनस्पति अधिक दिखाई देंगी।

समीर : मैंने वर्षा वाले पाठ में पढ़ा था कि इन स्थानों पर वर्षा भी कम होती है। मुझे तो ऐसा लगता है कि हमारे देश की प्राकृतिक वनस्पति तो पूरी तरह से मानसून के साथ-साथ चलती है।

पापा : बिल्कुल सही कहा, एक रोचक बात यह भी है कि जब हमारी रेलगाड़ी कर्णाटक और महाराष्ट्र के पश्चिमी हिस्से से गुजरेगी तो तुम्हें कभी घने वन दिखाई देंगे, खूब झरने और ऊँची पहाड़ियाँ भी दिखाई देंगी, और थोड़े समय के बाद ही कम ऊँचाई के रूखे विरल वन भी दिखाई देंगे।

रूबी : अच्छा, इतनी पास-पास भी इतना अंतर वनों में हो सकता है।

पापा : हाँ, क्योंकि पश्चिमी समुद्र तट के समानांतर ऊँची पहाड़ियाँ हैं जिनके कारण इनके पश्चिमी किनारों पर खूब वर्षा होती है, यहाँ सदाबहार घने वर्षा वन मिलते हैं। जबकि इन्हीं पहाड़ियों के पूर्वी किनारों पर वर्षा बहुत कम हो पाती है। इन ढालों पर और कम ऊँचाई के पथरीले पठारी भागों में पर्णपाती वन और कंटीली झाड़ी जैसी वनस्पति मिलती है।

समीर : फिर तो इन वनों में जीव-जंतु भी अलग-अलग मिलते होंगे?

मम्मी : हाँ भई, मैंने डिस्कवरी चैनल पर देखा था। पश्चिमी घाट में ही भारत का सबसे ऊँचा जलप्रपात (झरना) जोग जलप्रपात स्थित है। यहाँ के घने जंगलों में सैकड़ों प्रकार के रंगीन

पक्षी भी पाए जाते हैं, जो देश में अन्य स्थानों पर नहीं मिलते। शेर जैसी पूँछ वाला बंदर, हथेली जितने बड़े बंदर, नीलगिरी लंगूर, रंगीन मेंदक, विभिन्न सरीसृप (रेंगने वाले जीव), हाथी, गौर जैसे जीव-जंतुओं का यह आवास भी है। यह हमारे देश की सर्वाधिक समृद्ध जैव विविधता वाला क्षेत्र है। समय निकालकर डिस्कवरी चैनल, नैशनल ज्योग्राफिक चैनल पर संबंधित कार्यक्रम जरूर देखा करो।

रूबी : अब तो जरूर देखेंगे।

पापा : चलो अब सो जाओ, रात हो गई है। सुबह उठेंगे तो नये दृश्य और अलग प्रकार की वनस्पति भी दिखाई देगी। तब उस पर भी बात करेंगे।

अभ्यास

प्रश्न 1. प्राकृतिक वनस्पति की क्या विशेषताएँ हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 2. जंगली जानवर और घरेलू जानवरों की सूची बनाइये। उनके आवास पर उनके पर्यावरण का क्या प्रभाव पड़ता है?

_____

_____

_____

प्रश्न 3. विभिन्न स्थानों की जलवायु तथा मिट्टी का वहाँ की वनस्पति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

_____

_____

_____

प्रश्न 4. पश्चिमी घाट की जलवायु, वन और वन्य जीवन की विशेषताएँ लिखिए?

_____

_____

_____

कार्यपत्रक -13

विद्यार्थी का नाम _____

प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीवन

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे विभिन्न जलवायु एवं स्थलरूपों में पाए जाने वाले पादप एवं जंतुओं की विभिन्नताओं के कारणों को बताते हैं।

प्यारे बच्चों, रेलगाड़ी का सफर बड़ा मजेदार लगता है। रेलगाड़ी से लंबी यात्रा करते हुए आप अपने देश की भौगोलिक विविधता, जलवायु, वनस्पति और उन सभी का हमारे खान-पान, पहनावे, कामों, फसलों, भाषा व बोली को धीरे-धीरे बदलते देख और समझ सकते हो। कल समीर व रूबी अपने माता-पिता के साथ हिमाचल में अपने पैतृक गाँव के लिए चेन्नई से रेल द्वारा चले थे। पूरे रास्ते उन्होंने विभिन्न प्रकार की वनस्पति, वन, पहाड़, पठार व अनेक प्रकार की भूमि देखी और उनका आपसी संबंध भी समझा। आगे की यात्रा.... .. ...

नाश्ते में पोहा व बोंडा लेने के बाद अब रूबी और समीर का ध्यान दोबारा खिड़की के बाहर के नजारों पर गया।

रूबी : भाई, अब तो जमीन कुछ रेतीली, पीली-सी नजर आ रही है और पेड़ भी कुछ छोटे लग रहे हैं।

समीर : हाँ बहन, कल हमने लाल मिट्टी और काली मिट्टी देखी थी। वो लावा ठंडे होकर टूटने से बनी थी, जहाँ बहुत महीन थी वो मिट्टी लोहे की मात्रा अधिक होने के कारण काली थी। काली मिट्टी पानी को खूब सोखती है और कपास व गन्ने के लिए बहुत उपजाऊ होती है। लाल मिट्टी के दाने मोटे होते हैं, उनमें लोहे के साथ चूना भी खूब होता है लेकिन पानी को नहीं रोक पाती। लाल मिट्टी वाले इलाकों में संतरे, काजू, बाजरा, रागी उगाया जाता है।

रूबी : इसका मतलब प्राकृतिक वनस्पति भी अनेक प्रकार की होती है?

पापा : सही कहा, किसी स्थान की वनस्पति की वृद्धि तापमान एवं नमी पर निर्भर करती है आमतौर पर प्राकृतिक वनस्पति को तीन मुख्य श्रेणियों में बाँटा जाता है– पहला है वन, जो वृक्षों के लिए उपयुक्त तापमान एवं परिपूर्ण वर्षा वाले क्षेत्रों में सघन एवं खुले वन विकसित होते हैं। दूसरा है घासस्थल, जो मध्यम वर्षा वाले क्षेत्र में विकसित होते हैं। तीसरे प्रकार की वनस्पति हैं काँटेदार झाड़ियाँ जो केवल शुष्क क्षेत्रों में पैदा होते हैं।

समीर : इसका प्रमाण तो अभी तक रास्ते में खूब मिला है। लगता है गाँव पहुँचते पहुँचते और भी कई प्रकार की वनस्पति देखने को मिलेगी।

मम्मी : हाँ, सही कहा, जो भी तुमने अपनी पुस्तकों में इस बारे में पढ़ा है उसे देखने और समझने का अवसर तुम्हें मिला है।

उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वर्षा वन– ये घने वन भूमध्य रेखा एवं उष्ण कटिबंध के पास पाए जाते हैं। ये क्षेत्र गर्म होते हैं एवं पूरे वर्ष यहाँ अत्यधिक वर्षा होती है। यहाँ का मौसम कभी शुष्क नहीं होता, इसलिए यहाँ के पेड़ों की पत्तियाँ पूरी तरह नहीं झड़ती। इसलिए इन्हें सदाबहार कहते हैं। काफी घने वृक्षों के कारण दिन के समय भी सूर्य का प्रकाश वन में जमीन तक नहीं पहुँच पाता है। आमतौर पर यहाँ कठोर लकड़ी वाले वृक्ष जैसे- रोज़वुड, आबनूस, महोगनी मिलते हैं। साँप, घड़ियाल, तेंदुआ, रीछ, बंदर, लंगूर आदि जानवर यहाँ पाए जाते हैं।

उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन– ये वन मानसूनी वन होते हैं जो भारत, उत्तरी ऑस्ट्रेलिया एवं मध्य अमेरिका के बड़े हिस्सों में पाए जाते हैं। इन क्षेत्रों में मौसमी परिवर्तन होते रहते हैं। जल संरक्षित रखने के लिए शुष्क मौसम में यहाँ के वृक्ष पत्तियाँ झाड़ देते हैं। इन वनों में पाए जाने वाले दृढ़ काष्ठ वृक्षों में साल, सागवान, नीम तथा शीशम हैं। दृढ़ काष्ठ वृक्ष, फर्नीचर, यातायात एवं निर्माण सामग्री बनाने के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। इन प्रदेशों में आमतौर पर पाए जाने वाले जानवर हैं–बाघ, शेर, हाथी, गोल्डन लंगूर एवं बंदर आदि।

शीतोष्ण सदाबहार वन – ये वन मध्य अक्षांश के तटीय प्रदेशों में स्थित हैं। ये सामान्यतः महाद्वीपों के पूर्वी किनारों पर पाए जाते हैं–जैसे दक्षिण-पूर्व अमेरिका, दक्षिण चीन एवं दक्षिण-पूर्वी ब्राजील। यहाँ बांज, चीड़ एवं सफेदा जैसे दृढ़ एवं मुलायम दोनों प्रकार के पेड़ पाए जाते हैं।

शंकुधारी वन - उत्तरी गोलार्द्ध के उच्च अक्षांशों (50□-70□) में भव्य शंकुधारी वन पाए जाते हैं, इन्हें 'टैगा' भी कहते हैं। ये लंबे, नरम काष्ठ वाले सदाबहार वृक्ष होते हैं। इन वृक्षों के काष्ठ का उपयोग लुगदी बनाने के लिए किया जाता है, जो सामान्यतः तथा अखबारी कागज़ बनाने के काम आती है। नरम काष्ठ का उपयोग माचिस एवं पैकिंग के लिए बक्से बनाने के लिए भी किया जाता है। चीड़, देवदार आदि इन वनों के मुख्य पेड़ हैं। यहाँ रजत लोमड़ी, मिंक, ध्रुवीय भालू जैसे जानवर पाए जाते हैं।

उष्ण कटिबंधीय घासस्थल भूमध्य रेखा के किसी भी तरफ उग जाते हैं और भूमध्य रेखा के दोनों ओर से उष्ण कटिबंध क्षेत्रों तक फैले हैं। यहाँ वनस्पति निम्न से मध्यम वर्षा वाले क्षेत्रों में पैदा होती है। यह घास लगभग 3 से 4 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकती है। अफ़्रीका का सवाना घासस्थल इसी

प्रकार का है। सामान्य रूप से उष्णकटिबंधीय घासस्थल में हाथी, ज़ेबरा, जिराफ़, हिरण, तेंदुआ आदि जानवर पाए जाते हैं।

शीतोष्ण घासस्थल मध्य अक्षांशीय क्षेत्रों और महाद्वीपों के भीतरी भागों में पाए जाते हैं। यहाँ की घास आमतौर पर छोटी एवं पौष्टिक होती है। शीतोष्ण प्रदेशों में समान्यतः जंगली भैंस, बाइसन, एंटीलोप पाए जाते हैं।

मरुस्थलीय वनस्पति- उष्ण कटिबंधीय रेगिस्तान अधिकतर महाद्वीपों के पश्चिमी किनारों पर पाए जाते हैं। तीव्र गर्मी एवं बहुत कम वर्षा के कारण यहाँ वनस्पतियों की कमी रहती है।

उष्ण कटिबंधीय घासस्थल	
पूर्वी अफ़्रीका	सवाना
ब्राजील	कंपोस
वेनेजुएल	लानो
शीतोष्ण कटिबंधीय घासस्थल	
अर्जेन्टीना	पम्पास
उत्तरी अमेरिका	प्रेअरी
दक्षिण अफ़्रीका	वेल्ड्स
मध्य एशिया	स्टेपी
ऑस्ट्रेलिया	डान

यदि आप ध्रुवीय प्रदेश में जाएँगे, तो वह स्थान आपको अत्यधिक ठंडा मिलेगा। यहाँ बहुत ही सीमित प्राकृतिक वनस्पति मिलती है। यहाँ केवल काई, लाइकेन एवं छोटी झाड़ियाँ पाई जाती हैं। ये वनस्पतियाँ यूरोप, एशिया एवं उत्तरी अमेरिका के ध्रुवीय प्रदेशों में पाई जाती हैं। यहाँ के जानवरों के शरीर पर मोटा फ़र एवं मोटी चमड़ी होती है, जो उन्हें ठंडी जलवायु में सुरक्षित रखते हैं। यहाँ सील, वालरस, ध्रुवीय भालू और बर्फीली लोमड़ी जैसे जानवर पाए जाते हैं।

रेल शिमला पहुँच गई, अब आगे की यात्रा बस द्वारा होनी है। बस घुमावदार रास्तों से आगे बढ़ने लगी तो समझ आ गया कि ऊँचे पहाड़ों पर रेल चलाना क्यों आसान नहीं है। बस जैसे-जैसे चढ़ाई पर जा रही थी तो वह स्थलाकृति एवं प्राकृतिक वनस्पति के बदलते रूपों को देखकर कितनी हैरान हो रही थी। पहाड़ों के निचले कम ढाल वाले स्थानों में स्थित साल एवं सागवान के घने वन धीरे-धीरे अदृश्य हो गए तथा पर्वत की ढलानों पर पतली नुकीली पत्तियों तथा शंकु आकार वितान (तम्बू की तरह बिछे) लंबे वृक्ष दिखने लगे। वे शंकुधारी वृक्ष थे। मनाली से आगे रोहतांग दर्रे तक के रास्ते में उसने देखा कि भूमि छोटी-छोटी घास एवं कुछ स्थानों पर बर्फ़ से ढँकी थी। स्थल की ऊँचाई एवं वनस्पति की विशेषताएँ एक-दूसरे से संबंधित हैं। ऊँचाई में परिवर्तन के साथ जलवायु में परिवर्तन होता है तथा इसके कारण प्राकृतिक वनस्पति में भी बदलाव आता है।

रेल व बस की 2 दिन की लंबी यात्रा के बाद जब रूबी और समीर अपने गाँव में दादा जी से मिले तो बहुत खुश हुए। अपने चचेरे भाई बहनों और उनके मित्रों को अपनी यात्रा का रोचक वर्णन सुनाया। सभी ने बड़ी उत्सुकता के साथ सारी बातें सुनी और दोनों को आस-पास के खेत, खलिहान, जंगल और पहाड़ों पर घुमाने का वादा किया।

अभ्यास

प्रश्न 1. प्राकृतिक वनस्पति कितने प्रकार की होती है?

प्रश्न 2. वनों में विभिन्नता के क्या-क्या कारण होते हैं?

प्रश्न 3. ऊँचाई बढ़ने से वनस्पति में क्या-क्या अंतर आने लगते हैं?

प्रश्न 4. विभिन्न प्रकार की वनस्पति क्षेत्रों में पाए जाने वाले जीव-जंतुओं की सूची बनाइये। इन जीवों के विशेष क्षेत्रों में रहने के क्या कारण हो सकते हैं?

प्रश्न 5. अपनी किसी लंबी रेल यात्रा या बस यात्रा के दौरान आपने क्या-क्या परिवर्तन देखे? लिखिए।

कार्यपत्रक -14

विद्यार्थी का नाम _____

मानवीय पर्यावरण: बस्तियाँ, परिवहन एवं संचार

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे पर्यावरण के विभिन्न घटकों तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों को वर्णन करते हैं। बच्चे विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करते हैं।

प्यारे बच्चों, हमरे जीवन में हमारे निवास स्थान (घर) का बहुत अधिक महत्व है। घर एक ऐसा स्थान है जिसमें हम अपने परिवार के साथ रहते हैं। आपके घर के पास और लोगों के भी मकान जरूर होंगे। घर में हम बहुत सी आवश्यक सुविधाओं का प्रबंध करने का प्रयास करते हैं। भोजन और कपड़ों के बाद सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता एक घर (आवास) की ही होती है। बचपन में घर-घर का खेल आपने भी जरूर खेला होगा।

एक प्रश्न अपने घर में पूछिये –

- आपके माता-पिता पहले से ही इसी जगह रह रहे हैं या कहीं बाहर (किसी दूसरी बस्ती, शहर या राज्य) से यहाँ आए हैं।
- उन्होंने इस जगह पर ही मकान क्यों लिया?
- मकान लेते समय उन्होने किन-किन चीजों का ध्यान रखा? आदि।

चुन्नू और मुन्नू दोनों भाई-बहन है। लॉकडाउन के दिन हैं उनके माता-पिता (मम्मी-पापा) भी घर पर ही हैं। चुन्नू – मुन्नू के मन में अपने घर को लेकर क्या प्रश्न उठे और उनका समाधान उनके माता-पिता ने किस प्रकार किया, आइये जानते हैं।

चुन्नू : कितने दिन हो गए! हम सभी घर पर ही हैं। बाहर खेलने भी नहीं जा सकते।

मुन्नू : काश! हमारा घर कुछ और बड़ा होता जैसे कि गाँव में ताऊ जी का है। दादा-दादी तथा बाकी परिवार हम सब साथ रहते,जैसे गाँव मे रहते हैं, तो कितना अच्छा होता!

चुन्नू : मम्मी आप बताओ कि हम सब साथ क्यों नहीं रहते।

मम्मी : बच्चों आपके पापा और मैं पहले गाँव में ही रहते थे। जब आपके पिताजी की यहाँ शिक्षक की नौकरी लग गई तो हम यहाँ रहने आ गए। कुछ समय हम दूसरी जगह किराए पर रहे और फिर हमने काफी सोच समझ कर इस बस्ती (कालोनी) में घर ले लिया।

मुन्नू : ये बस्ती किसे कहते हैं?

मम्मी : जहाँ कुछ लोग अपने परिवार, कार्य, रोजगार, अच्छी सुविधाओं आदि के लिए घर बनाकर बस जाते हैं उन्हें बस्तियाँ कहा जाता है। जैसे इस बस्ती में एक घर हमारा है तथा दूसरा तुम्हारे दोस्त मोंटू का, ऐसे बहुत से लोगों का भी। बहुत सारे मकान मिलकर एक बस्ती कहलाते हैं।

चुन्नू : आपने इसी बस्ती में ही मकान लेने का निर्णय (फैसला) क्यों लिया?

मम्मी : हमने बहुत सारी बस्तियाँ देखी और इस बस्ती में कई और मकान भी। यहाँ मकान लेते समय हमने कई बातों का ध्यान रखा, जैसे- यह बस्ती आपके पिताजी के विद्यालय के नज़दीक है, यहाँ पीने का पानी उपलब्ध है, अस्पताल तथा बाज़ार भी पास में ही हैं, कहीं जाने के लिए मेट्रो, बस, ऑटोरिक्शा भी यहाँ आसानी से मिल जाता है। हमारे पास घर खरीदने के लिए जितने पैसे थे, हमें यहाँ मकान लेना ही उचित लगा।

मुन्नू : मम्मी ने हमें अपना घर खरीदने की कहानी तो सुना दी, अब पापा आप हमें बताओ कि सबसे पहले लोगों (प्रारंभिक मानव) ने घर बनाकर रहना कैसे शुरू किया?

पापा : बच्चों, प्रारंभिक (शुरु के) मानव ने अपने आप को प्रकृति के अनुरूप बना लिया था। उसका जीवन सरल था। प्रकृति से उनकी रहने व खाने की आवश्यकताएँ पूरी हो जाती थी। वह कंद-मूल, फल, बीज खाकर तथा शिकार करके अपना पेट भरता था। जिसकी खोज के लिए वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमता रहता था। तब प्रारंभिक मानव (मनुष्य) जानवरों व धूप, वर्षा, आँधी तूफानों से बचने के लिये वृक्षों एवं गुफाओं में निवास करते थे।

मुन्नू : तो मानव ने बस्तियों में रहना कैसे शुरू किया?

पापा : बस्तियों की शुरुआत शायद कृषि (खेती) के ज्ञान के साथ हुई। जब उन्होंने फसलें उगाना आरंभ किया, तो उनके लिए एक जगह स्थायी घर बनाना आवश्यक हो गया क्योंकि कृषि के लिए समतल भूमि, पानी का साधन और फसल पकने के लिए एक जगह रुकना जरूरी होता है।

चुन्नू : पापा, प्रारंभिक मानव ने अपना घर तथा बस्तियाँ बनाने के लिए कौन सी जगह चुनी?

पापा : प्रारंभिक मानव ने ऐसे बसाव स्थान (वे स्थान जहाँ भवन अथवा बस्तियाँ विकसित होती हैं) चुने जहाँ जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध था,समतल भूमि थी, मिट्टी उपजाऊ थी तथा अनुकूल जलवायु थी। साथ-साथ उसने पशु पालन भी शुरू कर दिया। अब भोजन के लिए मानव स्थान-स्थान पर न घूमते हुए अपने लिए अनाज और दूध, माँस का प्रबंध स्थायी रूप से बस कर करने लगा।

चुन्नू : लेकिन कृषि से गाँव तो बसे होंगे, लेकिन इतने बड़े-बड़े शहर व बस्तियाँ कैसे बसी?

पापा : लोगों के बीच व्यापार, वाणिज्य,व्यवसायों (विभिन्न कामों) के विकास के साथ ही मानव बस्तियाँ बड़ी होती गई।

मम्मी : जब हम इस बस्ती में आये थे तब यहाँ इतने लोग नहीं रहते थे। धीरे-धीरे बड़े-बड़े बाजार, मॉल, मेट्रो जैसी सुविधाओं के साथ ही बहुत से मकान भी बने। अब तो हमारी बस्ती में भी बहुत रौनक रहती है।

पापा : सबसे पहले नदी घाटी के निकट बस्ती पनपने लगी एवं सभ्यताओं का विकास हुआ। जैसे – भारतीय उपमहाद्वीप में सिंधु घाटी सभ्यता, मिस्र में नील नदी के किनारे तथा मेसोपोटामिया में टिगरिस नदी के किनारे प्रारम्भिक सभ्यताएँ विकसित हुई।

मुन्नू : पापा, हम लोगों का घर तो एक जगह ही है, परंतु हमने कई ऐसे लोगों को टीवी पर देखा है जिनके घर तंबू(टैंट) के रूप में होते हैं। वे जब चाहे कभी भी और कहीं भी अपना तंबू लगा लेते हैं।

चुन्नू : कई लोग तो चलते फिरते घरों में भी रहते हैं। अपनी गाड़ी में ही उन्होने घर बनाया होता है।

पापा : हाँ बच्चों उन्हें अस्थायी घर कहते हैं। इसी प्रकार बस्तियाँ, स्थायी या अस्थायी हो सकती हैं। जो बस्तियाँ कुछ समय के लिए बनाई जाती हैं, उन्हें अस्थायी बस्तियाँ कहते हैं। घने जंगलों, गरम एवं ठंडे रेगिस्तानों तथा पर्वतों के निवासी अक्सर अस्थायी बस्तियों में रहते हैं। वे आखेट (शिकार), संग्रहण, स्थानांतरी कृषि (जगह बदल कर खेती करना) एवं ऋतु-प्रवास (मौसम के अनुरूप किसी जगह में रहना) करते हैं। यद्यपि अधिकांश बस्तियाँ आज स्थायी बस्तियाँ हैं।

चुन्नू : गाँव में हमारे पड़ोस के घर कुछ दूरी पर थे, यहाँ शहर में तो घर एक दूसरे से लगे हुए हैं।

पापा : ग्रामीण क्षेत्र में शहर के विपरीत अधिक भूमि उपलब्ध होती है। वहाँ बस्तियाँ प्रकीर्ण (दूर-दूर बिखरी हुई) भी हो सकते हैं और सघन (पास-पास) भी। प्रकीर्ण बस्तियाँ मुख्यतः पहाड़ी क्षेत्रों, घने जंगल एवं अति विषम (बहुत कठोर) जलवायु वाले क्षेत्रों में पाई जाती हैं। शहर में अधिकतर सघन बस्तियाँ ही पाई जाती हैं।

चुन्नू : क्या सभी जगह लोग एक ही तरह से घर बनाते हैं? जिस प्रकार हमारी बस्ती में लगभग सभी के मकान एक जैसे हैं?

पापा : विभिन्न स्थानों पर लोग अपने पर्यावरण के अनुकूल घर बनाते हैं। जैसे- अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में ढाल वाली छत बनाते हैं। जिन स्थानों में वर्षा के समय जल का जमाव होता है, वहाँ मचान घर (ऊँचे प्लेटफार्म) पर घर बनाए जाते हैं। गर्म जलवायु वाले क्षेत्रों जैसे

राजस्थान में मिट्टी की मोटी दीवार वाले घर पाये जाते हैं, जिनकी छतें फूस की बनी होती हैं। स्थानीय सामग्री, जैसे –पत्थर, कीचड़, चिकनी मिट्टी, तृण (पुआल/ घासफूस), आदि का उपयोग घर बनाने में किया जाता है।

चुन्नू और मुन्नू के पापा ने इस वार्तालाप के पश्चात कुछ प्रश्न पूछे। देखिये क्या आप उन प्रश्नों के जवाब दे पाते हैं?

अभ्यास

प्रश्न 1. यदि आप गर्म रेगिस्तानी स्थान में अपना घर बनाना चाहोगे तो किन-किन बातों का ध्यान रखोगे?

प्रश्न 2. बस्तियाँ धीरे-धीरे बड़ी हो जाती हैं। इसके क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

प्रश्न 3. क्या तुम इस बस्ती को छोड़कर कहीं दूसरी जगह बसना चाहोगे? कारण भी बताइये।

प्रश्न 4. कृषि के ज्ञान ने मानव जीवन को पूरी तरह से बदल दिया है। इस बिंदु पर चर्चा कर विचार लिखिये।

कार्यपत्रक -15

विद्यार्थी का नाम _____

मानवीय पर्यावरण: बस्तियाँ, परिवहन एवं संचार

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे पर्यावरण के विभिन्न घटकों तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों को वर्णन करते हैं।

प्यारे बच्चों,आज के विषय पर चर्चा करने से पहले कुछ प्रश्नों का उत्तर दीजिये।

- आप विद्यालय कैसे आते हैं?
- यदि आपको घर से 6-7 किलोमीटर दूर किसी मॉल या बाजार जाना हो तो कैसे जाओगे?
- अगर आपको दिल्ली के दर्शनीय (देखने योग्य) स्थल घूमने जाना हो तो आप कैसे जाएंगे?
- अगर आपको दिल्ली से मुंबई पहुँचना हो तो आपके पास क्या-क्या साधन हैं?
- अगर आपको अमेरिका जाना हो तो आप कैसे जाएँगे?

अगर आपके इन सभी उत्तरों को किसी एक नाम से पुकारा जाये तो वह क्या होगा?

परिवहन

परिवहन लोगों एवं सामान के आवागमन (आनेजाने) के साधन होते हैं। मानव के विकास की यात्रा में परिवहन का और परिवहन साधनों का बहुत बड़ा योगदान है। रोजगार, व्यापार, परिवार, विवाह, सुरक्षा, आनंद, डर जैसे अनेक कारणों से मानव छोटी दूरी या लंबी दूरी की यात्रा करता रहा है। परिवहन (आनेजाने) के साधन समय, काल, परिस्थिति, उद्देश्य के अनुसार बदलते रहते है। आज मानव का कहीं भी जाना या आना बहुत आसान हो गया है। चाहे कुछ सामान लेने जाना हो, कहीं घूमने अथवा किसी काम से,आज कल तो बहुत से लोगों के पास अपने खुद के भी वाहन हैं। आप एक निश्चित समय मे कहीं जा कर वापिस आ जाते हैं। परंतु पहले ऐसा नहीं था। क्रियाकलाप ; अपने परिवार में चर्चा करके पता लगाइये कि पुराने समय में यात्रा करने और आजकल की यात्रा करने में कौन-कौन से अंतर आये हैं?

क्रियाकलाप: अपने परिवार में चर्चा करके पता लगाइये कि पुराने समय में यात्रा करने और आजकल की यात्रा करने में कौन-कौन से अंतर आये हैं?

आज भी परिवहन के लिए पशुओं जैसे, गधे, खच्चर, बैल एवं ऊँट आदि का उपयोग किया जाता है।यदि आपने बैलगाड़ी देखी है तो बताइये इस साधन का पुराने समय में क्या महत्त्व था? आज के समय में इसका उपयोग आप अपने आस-पास बहुत कम देख पाते हो, इसके पीछे कौन-कौन से कारण हैं?

भूमि पर अधिकांश परिवहन साधनों, जैसे- साइकिल, रिक्शा, बैलगाड़ी, ठेला, कार, बस, रेलगाड़ी, मेट्रो में आपने पहिये जरूर देखे होंगे। पहिये की खोज से परिवहन आसान हो गया, बाद में वैज्ञानिक खोजों से समय के साथ परिवहन के विभिन्न साधनों का विकास होता चला गया।

क्रियाकलाप : अपने माता-पिता से बात करके पता लगाएँ की क्या कभी उन्होने किसी जानवर के उपयोग से चलने वाली गाड़ी से सवारी की है? उनका अनुभव कैसा रहा?

परिवहन के साधन

मुख्य रूप से परिवहन के तीन साधन हैं स्थल, जल और वायु। इन तीनों की अपनी-अपनी विशेषताएँ तथा सीमाएँ हैं। समय तथा प्रौद्योगिकी (तकनीक) के साथ इनमे भी कई बदलाव हुए हैं। आइये जानते हैं परिवहन के विभिन्न साधनों की कहानी इन्हीं की जुबानी।

स्थलमार्ग:

प्यारे बच्चों, सबसे पहले मेरा (स्थल/जमीन) ही इस्तेमाल यातायात के लिए शुरू हुआ। मेरा इस्तेमाल दो प्रकार के मार्गों के रूप में होता है। सड़कमार्ग के रूप में और रेलमार्ग के रूप में।

चित्र 1: पक्की और कच्ची सड़क

2: रेलमार्ग

सड़कमार्ग :

- कम दूरी पर आने-जाने के लिए सबसे अधिक सड़कमार्ग का ही उपयोग किया जाता है।
- सड़कें, बिंदु से बिंदु या द्वार से द्वार तक आवागमन की सुविधा प्रदान करती हैं।
- सड़कें पक्की एवं कच्ची हो सकती हैं।
- आजकल अधिकतर पक्की सड़कें ही बनाई जाती हैं। पक्की सड़कें कंक्रीट, तारकोल,

क्रियाकलाप : अपने अनुभव से बताइये, खराब सड़क होने या सड़क संपर्क ना होने के कारण कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है?

सीमेंट आदि से बनाई जाती हैं। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में एक गाँव से दूसरे गाँव व खेत खलिहानों को जोड़ने मे कच्ची पगडंडियों व सड़कों का विशेष महत्व है।

- मैदानी क्षेत्रों में सीधी- सीधी सड़कें बनाई जाती हैं परंतु पहाड़ी क्षेत्रों मे समतल भूमि न होने के कारण घुमावदार सड़कें बनाई जाती हैं।
- शहरों मे बढ़ते यातायात तथा जगह की कमी को देखते हुए भूमिगत मार्ग (जमीन के अंदर) तथा उपरिगामी सेतु/फ्लाईओवर (सड़क या रेल लाइन के ऊपर बना पुल) भी बनाए जाते हैं।
- सड़कें गाँवों, बस्तियों, शहरों को एक दूसरे से जोड़ती हैं। कुछ सड़कें विभिन्न राज्यों और देशों से होकर गुजरती हैं। सड़कें कुछ किलोमीटर से लेकर हजारों किलोमीटर तक लंबाई की हो सकती हैं।
- सड़कों के किनारे बस्तियाँ, बाजार, व्यापार,रोजगार के साधन भी खूब विकसित होते हैं।

रेलमार्ग:

- लम्बी दूरी को यात्रा करनी हो या भारी सामान को ढोना हो, रेलमार्ग सड़क मार्ग से तीव्र तथा सस्ता रहता है। कोरोना के समय में भी आपने देखा होगा कि रेल के माध्यम से ऑक्सीजन सिलेंडर विभिन्न राज्यों से लाये गए।
- मैदानी भागों में रेलमार्गों का जाल व्यापक रूप से फैला है। रेल चलाने के लिए रेल की पटरी बिछाना पड़ता है। पहाड़ी क्षेत्रों में समतल भूमि न होने के कारण रेल पटरी बिछाना मुश्किल होता है। उन्नत प्रौद्योगिकी (तकनीकी) कौशल (हुनर/योग्यता) से दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में भी रेलमार्ग बनाना संभव हो पाया है। परंतु उनकी संख्या अभी कम है।
- पहले रेल भाप के इंजन से चलाई जाती थी। समय बीतने और नई प्रौद्योगिकी के आने से इसका स्थान डीज़ल और अब विद्युत इंजनों ने ले लिया है। रेल एक साथ बहुत से यात्रियों और सामान को स्थल पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने का सस्ता व तीव्र साधन है।

क्रियाकलाप : आपको (स्थल) के दोनों रूपों में से कौन अधिक पसंद है और क्यों? बताइये।

जलमार्ग:

प्रारंभिक समय से ही मेरा उपयोग नौ परिवहन के रूप में किया जाता रहा है। अधिक दूरी में भारी एवं बड़े आकार वाले सामानों को ढोने के लिए बाकी सभी साधनो में से मैं सबसे सस्ता साधन हूँ। जल मार्गों का रखरखाव व ईंधन की कम खपत के कारण, छोटी-छोटी नावों से लेकर विशाल जल

क्रियाकलाप : भारत के प्रमुख पतनों के नाम पता लगाइए।

पोत (पानी के जहाज) द्वारा प्राचीन काल से ही व्यापार का सबसे महत्वपूर्ण साधन रहा है। अंतर्देशीय (किसी देश के अंदर) जलमार्ग के रूप में नदियों एवं झीलों का उपयोग परिवहन के लिए किया जाता है। नदियों के किनारे बसे प्राचीन नगरों के विकास में जल मार्गों का बड़ा योगदान रहा है।

समुद्री एवं महासागरीय मार्गों का उपयोग सामान्यतः व्यापारिक माल एवं सामान को एक देश से दूसरे देश में पहुँचाने के लिए करते हैं। समुद्री जल मार्गों के उपयोग के लिए सुविधाओं के साथ आधुनिक पतनों का होना आवश्यक है।

वायुमार्ग :

स्थल तथा जलमार्ग की तुलना में मैं नया हूँ, किंतु मैं उनकी अपेक्षा सबसे तीव्र साधन हूँ। सैंकड़ों किलोमीटर की दूरी मेरे द्वारा कुछ ही घंटों में की जा सकती है। मैं एक अकेला साधन हूँ, जो सर्वाधिक दुर्गम एवं दुरूह स्थानों तक भी पहुँच सकता हूँ। विशेषकर जहाँ सड़क एवं रेलमार्ग नहीं हैं। कभी-कभी खराब मौसम, जैसे- कुहरे एवं तूफान से कई बार वायु यातायात में बाधा पहुँचती है। आपने देखा होगा कि मेरा उपयोग संकटकालीन परिस्थितियों में लोगों को प्राकृतिक आपदाओं से बचाने एवं भोजन, वस्त्र, जल तथा दवाई आदि सामग्री पहुँचाने के लिए किया जाता है। जब मेरा उपयोग किसी देश कि सीमाओं के अंदर होता है तो मैं राष्ट्रीय तथा जब विभिन्न देशों के बीच आने जाने मे होता है तो अंतर्राष्ट्रीय कहलाता हूँ।

बहुत सारे लोगों को लगता है कि मैं बहुत महँगा हूँ। अब मेरे भोजन (ईंधन), रखरखाव, की लागत (कीमत) ही अधिक है तो इसमें मेरा क्या दोष?

क्रियाकलाप : दिल्ली के राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय हवाई पत्तन का नाम पता लगाइए।

अभ्यास

प्रश्न 1. परिवहन के विभिन्न साधनों मे से सबसे महँगा साधन कौन सा है और क्यों?

प्रश्न 2. परिवहन के विभिन्न साधनों में किन-किन वाहनों का उपयोग किया जाता है? आप किन-किन कार्यो, परिस्थितियों (हालातों) में किन-किन परिवहन साधनों का उपयोग करना उचित मानेंगे? कारण सहित सूची बनाइये।

प्रश्न 3. परिवहन के विभिन्न साधनों में से आपका पसंदीदा साधन कौन सा है और क्यों बताइए।

कार्यपत्रक -16

विद्यार्थी का नाम _____

मानवीय पर्यावरण: बस्तियाँ, परिवहन एवं संचार

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे पर्यावरण के विभिन्न घटकों तथा उनके परस्परिक सम्बन्धों को वर्णन करते हैं। बच्चे विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करते हैं।

प्यारे बच्चों, कैसे हैं आप? इस प्रश्न का पूछना और उत्तर देना अपने विचार प्रकट करना और सूचना देना ही है। विभिन्न कारणों से मानव द्वारा अपनी बातें व विचार दूसरों तक पहुँचने की आवश्यकता हमेशा रही है। आपके अनुसार हम सभी के लिए यह क्यों आवश्यक है? अपने विचार लिखिये।

.....

.....

जो लोग हमारे सामने हैं उनसे तो हम बोलकर अथवा अपने हावभाव (सांकेतिक भाषा) से संवाद कर सकते हैं। परंतु जो लोग दूर हैं उन तक हम अपने विचार या सूचना कैसे पहुँचा सकते हैं?

कोरोना काल को याद कीजिये, लगभग सभी कुछ बंद(लॉकडाउन) था। हम लोग अपने घरों में कैद थे। लॉकडाउन के दौरान कौन-कौन से माध्यम थे जिनसे आप आप अपने रिश्तेदारों के हाल चाल जान पाते थे? .....

आप किस प्रकार अपने आपको कोरोना से सुरक्षित रख सकते हैं? इसके बारे में जानकारी व सूचना किस प्रकार आपको मिलती रही? .....

अगर कोई कोरोना से पीड़ित हो गया तो बाकी लोगों को उन्होंने किस प्रकार सूचित किया तथा उनकी मदद के लिए लोग किस प्रकार जुड़े तथा उन तक मदद पहुँचाई? .....

आपके विद्यालय बंद थे, परंतु आप की पढ़ाई फिर भी चलती रही, कैसे? .....

दफ्तर भी बंद थे फिर भी लोग घर से काम किस प्रकार करते रहे? .....

संचार:

संचार दूसरों के पास तक अपने विचार या सूचना पहुँचाने की प्रक्रिया है। यह कार्य अनेक माध्यमों से किया जाता रहा है। पत्र (चिट्ठी), भाषण, विज्ञापन (पर्चे, खंभों, दीवारोंपर), मोबाइल फोन इंटरनेट, टीवी, रेडियो, समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, आदि के रूपो में तकनीकी विकास के साथ मानव ने संचार के नये व तीव्र साधनों को विकसित कर लिया है। आज फोन और इंटरनेट संचार का बहुत महत्त्वपूर्ण साधन है,

लेकिन प्यारे बच्चों, इनका चलन तो पिछले लगभग 30 वर्षों में ही हुआ है, तो पुराने समय में किस प्रकार लोग अपने विचार दूर-दूर तक पहुँचाते होंगे? परिवार में बुजुर्गों (अधिक आयु के लोगों) से बात करके बड़ी रोचक जानकारी मिल सकती है।

पुराने समय में दूर स्थानों पर संदेशों को पहुँचाने के लिए संदेशवाहकों (हरकारों) का उपयोग किया जाता था। शासक/राजा के संदेश को ढ़ोल – नगाड़े बजवाकर, संदेशों को पत्थर या शिलाओं पर खुदवाकर जनसाधारण तक पहुँचाया जाता था। इसमें बहुत समय लग जाया करता था। विशेष रूप से प्रशिक्षित (सिखाये गए) पशु-पक्षियों के माध्यम से भी संदेश पहुँचाए जाते थे, जहाँ संदेशा पहुँचाना होता था, वहाँ के पक्षी लाये जाते थे,फिर उनके पैरों में संदेश बाँध कर उड़ा दिया जाता था वह पक्षी उड़ कर अपने मूल स्थान पर पहुँच जाता था।

चित्र 1: संचार माध्यमों का विकास

इसके बाद चिट्ठियाँ, डाक व्यवस्था, तार आदि का प्रयोग सूचना देने के लिए शुरू हुआ। प्रिंटिंग प्रैस, रेडियो, टेलीविज़न, टेलीफोन, जैसे आविष्कार संचार के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति लेकर आए। इनके माध्यम से ब हुत तीव्र गति सेविश्वभर में सूचनाओं का आदान प्रदान होने लगा, इस संचार क्रांति (बदलाव) ने

अब सूचनाओं व विचारों के द्वारा न केवल ज्ञान विज्ञान बल्कि राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक (धन से जुड़ा), धार्मिक व रोजाना के जीवन तथा सोच विचारों में बहुत परिवर्तन व विकास हुआ। आज कल हमारे सोचने के तरीकों को संचार माध्यम बहुत गहराई तक प्रभावित करते हैं।

आप बाजार से क्या खरीदे, कैसे कपड़े पहनें, क्या खाएँ, क्या रोजगार करें, किसको अपना मत (वोट) दें,के उत्तर संचार माध्यमों से पूरी तरह प्रभावित होते हैं। आज के समय में सूचना ही शक्ति है, संचार के क्षेत्र के विकास से विश्व में सूचना क्रांति आई है। सूचना प्रदान करने के अलावा शिक्षा तथा मनोरंजन के लिए भी संचार के विभिन्न साधनों का उपयोग होता है।

संचार के साधन भी दो प्रकार के होते हैं। जिन साधनों का उपयोग किसी व्यक्ति विशेष को सूचना देने के लिए होता है उन्हें व्यक्तिगत संचार के साधन कहा जाता है तथा जिन साधनो के माध्यम से अधिक लोगों तक संदेश पहुँचाया जाता है अथवा जनसंपर्क किया जाता है, उन्हे जन संचार के माध्यम कहते हैं। वर्तमान समय मे उपयोग में लाये जाने वाले व्यक्तिगत संचार और जन संचार के साधनों की सूची बनाइये।

विज्ञान व तकनीकी विकास द्वारा सेटेलाइट (कृत्रिम उपग्रह) से संचार में तीव्रता आई है। इनसे केवल सूचनाएँ ही नहीं बल्कि तेल की खोज, वनों का सर्वेक्षण (सभी तथ्यों का निरीक्षण व मापन), भूमिगत (भूमि की सतह के नीचे) जल, खनिज संपदा, मौसम पूर्वानुमान (पहले से अनुमान लगाना) एवं आपदा की पूर्व चेतावनी में भी मदद मिलती है।

अब हम इंटरनेट (विश्व भर में फैला कंप्यूटरों का जाल) के माध्यम से ईमेल (कंप्यूटर से भेजी चिट्ठी) भेज सकते

हैं। आजकल बिना तार वाला दूर संचार यंत्र (मोबाइल फोन) द्वारा संचार अत्यधिक लोकप्रिय हो चुका है। इंटरनेट द्वारा सूचना एवं परस्पर समीपता ही नहीं मिलती, अपितु इससे हमारा जीवन भी अधिक सुखमय भी बन गया है। इसके द्वारा हम घर बैठे ही खरीददारी, मनोरंजन, निरीक्षण, प्रशासन,रेल, हवाईजहाज एवं सिनेमा के टिकट भी आरक्षित करवा सकते हैं।

अभ्यास

प्रश्न 1. इंटरनेट की सहायता से और कौन-कौन से कार्य किए जा सकते हैं उनकी सूची बनाइये।

_____

_____

_____

प्रश्न 2. आज यदि किसी कारण वश मोबाइल फोन व इंटरनेट की सुविधा बंद हो जाए तो उस स्थिति में हमारे सामने क्या-क्या परेशानियाँ आ सकती हैं? आप इन परेशानियों के लिए क्या-क्या उपाय सुझाएँगे? अपने परिवार में चर्चा करके लिखिये।

_____

_____

_____

कार्यपत्रक -17

विद्यार्थी का नाम _____

मानवीय पर्यावरण: अन्योन्यक्रिया, उष्णकटिबंधीय एवं उपोषण प्रदेश

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे विश्व के विभिन्न जलवायु प्रदेशों में रहने वाले लोगों के जीवन तथा भारत के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों के जीवन में अंतर्संबंध स्थापित करते हैं।

प्यारे बच्चों, कक्षा 6 में हमने विभिन्न अक्षांशों व ताप कटिबंधों (तापमान की पेटी/बेल्ट) के बारे में जाना था। उष्णकटिबंधीय प्रदेश कर्क वृत और मकर वृत के मध्य स्थित हैं।

क्रियाकलाप : विश्व के राजनीतिक मानचित्र पर उष्णकटिबंधीय प्रदेश दर्शाइये।

प्यारे बच्चों, आज मैं, अमेजन वर्षा वन के बारे में आपसे बात कर रहा हूँ। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि विश्व के विभिन्न भागों में लोगों की जीवन की मूल आवश्यकताएँ एक समान ही हैं, वो हैं भोजन, वस्त्र (कपड़ा) एवं मकान। परन्तु पूरे विश्व में लोग भिन्न भिन्न तरह से अपना जीवन व्यतीत करते हैं। किसी स्थान विशेष के लोगों का भोजन, कपड़े, आवास (मकान), रोजगार, रीति रिवाज,परंपरा व विश्वास आदि भी बहुत कुछ उस स्थान विशेष की जलवायु पर निर्भर करता है। चलिये, मैं आपको अपने यहाँ की जलवायु, जीव-जन्तु व लोगों के रहन-सहन आदि के बारे में बताता हूँ।

मेरा नाम दो शब्दों से मिलकर बना है।

अमेजन, दक्षिण अमेरिका से होकर बहने वाली विश्व की सबसे विशाल प्रवाह (बहाव /बेसिन) क्षेत्र वाली नदी है। मुख्य नदी अपनी सहायक नदियों के साथ जिस क्षेत्र के पानी को बहाकर ले जाती है वह उसका प्रवाह क्षेत्र अथवा जलसंग्रहण क्षेत्र कहा जाता है। यह नदी ब्राजील, पेरू, बोलीविया, इक्वाडोर, कोलंबिया तथा वेनेजुएला के भूभागों से होकर बहती है। यह पेरु के एंडीज़ पर्वतमाला से निकलकर पूर्व की ओर बहती है, और अटलांटिक (अंध महासागर) महासागर में मिलती है। दूसरा शब्द है वर्षा वन। दिये गये

मानचित्र में ध्यान दीजिये, मेरा स्थान भूमध्य वृत (विषुवत वृत) के आसपास है जहाँ वर्ष भर खूब वर्षा होती है और वातावरण में अत्यधिक नमी रहती है। मेरी भूमि पर सघन वन उग जाते हैं। वन इतने सघन (घने/ पास-पास) होते हैं कि पत्तियों तथा शाखाओं से 'छत' सी बन जाती है जिसके कारण सूर्य का प्रकाश भी धरातल तक नहीं पहुँच पाता है और अंधेरा एवं नम बनी रहती है। मेरे वनों में केवल वही वनस्पति पनप सकती है जिसमें छाया में बढ़ने की क्षमता हो। बहुत से स्थानों पर वृक्षों पर वृक्ष, लताओं, घास, काई आदि के रूप में मेरे तीन या चार मंजिल के वन भी पनपते हैं। सबसे निचले भाग में दलदल और लताएँ ही होती हैं। परजीवी पौधों के रूप में यहाँ आर्किड एवं ब्रोमिलायड पैदा होते हैं।

चित्र 1: दक्षिण अमेरिका में अमेज़न बेसिन

अब चार मंजिल तक के वन हैं तो जीव-जंतु भी भिन्न-भिन्न प्रकार के पाऐ जाते हैं। टूकन, गुंजन पक्षी, रंगीन पक्षति वाले पक्षी एवं भोजन के लिए बड़ी चोंच वाले विभिन्न प्रकार के पक्षियों को मैं आश्रय प्रदान करता हूँ। प्राणियों में बंदर, स्लॉथ एवं चीटीं खाने वाले टैपीर भी मेरे यहाँ पाए जाते हैं। साँप एवं सरीसृप (रेंगने वाले जीव) की विभिन्न प्रजातियाँ भी मेरे वनों में पाई जाती हैं। मगरमच्छ, साँप, अजगर तथा एनाकोंडा एवं बोआ कुछ ऐसी ही प्रजातियाँ हैं। जी हाँ एनाकोंडा नामक फ़िल्म मेरे यहाँ ही फ़िल्माई गई है। इसके अतिरिक्त लाखों कीड़े-मकोडों की प्रजाति भी मेरे आँगन में निवास करते हैं। माँस खाने वाली पिरान्या समेत मछलियों की विभिन्न प्रजातियाँ भी अमेज़न नदी में पाई जाती हैं।

भूमध्य रेखा के आस-पास फैले होने के कारण यहाँ पूरे वर्ष यहाँ गर्म एवं नम जलवायु रहती, लोगों को शरीर में चिपचिपाहट महसूस होती है। मेरे यहाँ लगभग प्रतिदिन वर्षा होती है और वह भी बिना किसी पूर्व चेतावनी के।दिन का तापमान उच्च एवं आर्द्रता अति उच्च होती है। रात के समय तापमान कम हो जाता है लेकिन आर्द्रता वैसी ही बनी रहती है।

वर्षावन के निवासी

अब आप यह जानना चाहेंगे कि मेरे यहाँ लोग किस प्रकार से रहते हैं? चलिये बताता हूँ....

कृषि: लोग छोटे-से क्षेत्र में वन के कुछ वृक्षों को काटकर अपने भोजन के लिए फसल उगाते हैं। वे "कर्तन एवं दहन (काटो और जलाओ) कृषि पद्धति का प्रयोग करते हैं। इस पद्धति में लोग वन की वनस्पति को जलाकर प्राप्त भूमि पर खेती करते हैं। तीन – चार वर्ष बाद किसी दूसरे वन के टुकड़ पर यह प्रक्रिया कर खेती की जाती है। यहाँ लोग मुख्य रूप से टेपियोका, अनन्नास एवं शकरकंद जैसी खाद्य फसलें उगाते हैं। कॉफी, मक्का एवं कोको जैसी नगदी फसल भी यहाँ उगाई जाती हैं।

यहाँ के लोग शिकार और मछली पकड़ने का काम भी करते हैं। आजकल बहुत तेजी से मेरे वनों की कटाई के काम में भी बहुत से लोग लगे हैं।

भोजन: यहाँ पर लोगों का मुख्य आहार मेनियोक है, जिसे कसावा भी कहते हैं तथा यह आलू की तरह जमीन के अंदर पैदा होता है। लोग चींटियों, अंडों, मछली, फल, कंद-मूल को भी खाते हैं।

चित्र 2: वनो का क्रमिक विनाश

घरों के प्रकार : यहाँ लोग लकड़ी के घरों, छत्ते के आकार वाले छप्पर के घरों में रहते हैं। जबकि कुछ लोग 'मलोका' की कहे जाने वाले बड़े अपार्टमेंट जैसे घरों में रहते हैं जिनकी छत तीव्र ढलान वाली होती हैं। बताओ तो छत ढालू क्यों बनाते हैं?

मानव विकास : विकास की गतिविधियों के कारण अब यहाँ के लोगों का जीवन धीरे-धीरे बदल रहा है। पुराने समय में मेरे घने वनों के अंदर पहुँचने के लिए नदी मार्ग ही एकमात्र उपाय था। 1970 में ट्रांस अमेज़न महामार्ग बनने से मेरे सभी भागों तक पहुँचना संभव हो गया। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप यहाँ की मूल आबादी को उस क्षेत्र से बाहर निकलकर नए क्षेत्रों में बसना पड़ा।

मेरे विशाल सदाबहार घने वनों के कारण कभी मुझे पृथ्वी के फेफड़े कहा जाता था, परंतु अब मैं धीरे-धीरे नष्ट हो रहा हूँ। प्रतिवर्ष मेरा बड़ा भाग लुप्त होता जा रहा है। आप से अनुरोध है कि विकास की गति तथा प्रकृति के बीच में संतुलन स्थापित कीजिए नहीं तो इसके गंभीर दुष्प्रभाव देखने को मिलेंगे! यह थी मेरी कहानी, मेरी जुबानी।

अभ्यास

प्रश्न 1. मिलान करिये।

1. मेनियोक	क) परजीवी पौधा
2. टूकन।	ख) पशु
3. टैपीर	ग) पक्षी
4. ब्रोमिलायड	घ) आवास
5. मोलका	ड़) आहार

प्रश्न 2. कर्तन एवं दहन कृषि पद्धति के क्या फायदे तथा नुकसान हो सकते हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 3. अगर आप अमेजन वर्षा वन में रहने वाले समुदाय से होते तो आप अपना घर किस प्रकार का बनाते? चित्र बनाइये।

_____

_____

_____

प्रश्न 4. वनों के नष्ट होने के क्या-क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं? अपने परिवार में चर्चा करके लिखिये।

_____

_____

_____

प्रश्न 5. अमेजन वर्षा वन के क्षेत्र को पृथ्वी का फेफड़ा क्यों माना जाता था? अब यह स्थिति क्यों बदल रही है?

_____

_____

_____

कार्यपत्रक -18

विद्यार्थी का नाम _____

मानवीय पर्यावरण: अन्योन्यक्रिया, उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्ण प्रदेश

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे विश्व के विभिन्न जलवायु प्रदेशों में रहने वाले लोगों के जीवन तथा भारत के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों के जीवन में अंतर्संबंध स्थापित करते हैं।

प्यारे बच्चों, आज हम गंगा-ब्रह्मपुत्र नदी द्रोणी (नदी का जल संग्रहण क्षेत्र /बेसिन) के उदाहरण से उपोष्ण प्रदेश में जीवन के बारे में जानेंगे।

गंगा भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण नदी है। यह उत्तराखंड में हिमालय (गंगोत्री हिमनद) से लेकर बंगाल की खाड़ी के सुन्दरवन तक भारत और बांग्लादेश में कुल मिलाकर 2525 किलोमीटर की दूरी तय करती हुई विशाल भू-भाग को सींचती है। गंगा अपनी सहायक नदियों घाघरा, सोन, चंबल, गंडक, कोसी आदि के साथ दस लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के अति विशाल उपजाऊ मैदान की रचना करती है। वहीं ब्रह्मपुत्र का उद्गम हिमालय के उत्तर में तिब्बत की मानसरोवर झील से होता है, जहाँ इसे सांग्पो कहा जाता है। यह नदी भारत के अरूणाचल प्रदेश राज्य में दिहान्ग नाम के साथ प्रवेश करती है और असम में ब्रह्मपुत्र नाम से जाती है। बांग्लादेश में ब्रह्मपुत्र नदी और गंगा नदी मिल कर मेघना नाम के साथ बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है और विश्व के सबसे बड़े डेल्टा, सुन्दरवन डेल्टा का निर्माण करती हैं।

चित्र 1: गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन

गंगा-ब्रह्मपुत्र द्रोणी क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की स्थलाकृति हैं जैसे- पर्वत, मैदान, चापझील, डेल्टा आदि। विभिन्न भू-आकृतियों व जलवायु के अनुसार वनस्पति, जीव-जन्तु, जनसंख्या घनत्व (एक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में रहने वाले लोगों की संख्या) आदि में भी विभिन्नता पायी जाती है।

जलवायु : यहाँ की जलवायु मुख्यतः मानसूनी हैं। मानसून में मध्य जून से मध्य सितंबर के बीच वर्षा

होती है। ग्रीष्म ऋतु में गर्मी एवं शीत ऋतु में ठंड होती है।

वनस्पति : गंगा-ब्रह्मपुत्र के मैदानों में सागवान, साखू एवं पीपल के साथ उष्णकटिबंधीय पर्णपाती (विशेष मौसम में पत्ते गिराने वाले) पेड़ भी पाए जाते हैं। ब्रह्मपुत्र के मैदानी क्षेत्रों में घने बाँस के घने झुरमुट भी पाए जाते हैं। डेल्टा क्षेत्र मैंग्रोव (विशेष खारे पानी के ऊँची जड़ों वाले सुंदरी वृक्ष जैसे छोटे पेड़ों) वन से घिरा है। उत्तराखंड, सिक्किम एवं अरुणाचल प्रदेश की ठंडी जलवायु एवं तीव्र ढाल वाले भागों में चीड़, देवदार एवं फर जैसे शंकुधारी पेड़ पाए जाते हैं।

वन्य जीव : गंगा-ब्रह्मपुत्र द्रोणी में विविध प्रकार के वन्यजीव पाए जाते हैं। इनमें हाथी, बाघ, भैंसा, सियार, मगरमच्छ, हिरण एवं बंदर आदि सामान्य रूप से पाए जाने वाले जीव हैं। एक सींग वाला गैंडा ब्रह्मपुत्र के मैदानों में पाया जाता है। डेल्टा क्षेत्र में बंगाल टाइगर, मगर एवं घड़ियाल पाए जाते हैं। नदी के साफ़ जल, झील एवं बंगाल की खाड़ी में प्रचुर मात्रा में जलीय जीव पाए जाते हैं। रोहू, कतला एवं हिलसा मछलियों की सबसे लोकप्रिय प्रजातियाँ हैं।

जनसंख्या घनत्व : जनसंख्या के वितरण में पर्यावरण की प्रमुख भूमिका होती है। गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन के विभिन्न भागों में अलग-अलग प्रकार का पर्यावरण है, जैसे, तीव्र ढाल वाले पर्वतीय क्षेत्र बसने के लिए प्रतिकूल (मुश्किल) हैं अतः गंगा-ब्रह्मपुत्र द्रोणी क्षेत्र के पर्वतीय क्षेत्र में कम लोग रहते हैं। उपजाऊ मिट्टी, अनुकूल जलवायु, समतल भूमि होने के कारण इसके मैदानी क्षेत्र मानव प्रवास (रहने के लिए) के लिए सबसे उपयुक्त है, अतः यहाँ जनसंख्या घनत्व अधिक है।

कृषि फसलें : जिन स्थानों पर फसल उगाने के लिए समतल भूमि उपलब्ध है और मिट्टी उपजाऊ है। वहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। धान (चावल) यहाँ की मुख्य फसल है। चूँकि धान की खेती के लिए पर्याप्त जल की आवश्यकता होती है, यह उसी क्षेत्र में उगाया जाता है जहाँ अधिक वर्षा होती है। यहाँ उगायी जाने वाली अन्य फसलें गेहूँ, मक्का, ज्वार, चना एवं बाजरा हैं। गन्ना एवं जूट जैसी नगदी फसलें भी उगायी जाती हैं। मैदान के कुछ क्षेत्रों में केले के बागान भी देखे जाते हैं। पश्चिम बंगाल एवं असम में चाय के बागान मिलते हैं बिहार एवं असम के कुछ भागों में रेशम कीट पालन किया जाता है। मंद ढलान वाले पर्वतों एवं पहाड़ियों पर वेदिकाओं (खड़ी ढलानों पर कृषि करने के लिए समतल सतह बनाना) में अनेक फसलें उगायी जाती हैं।

प्रमुख शहर : गंगा-ब्रह्मपुत्र के मैदानों में कई बड़े शहर एवं कस्बे स्थित हैं। इलाहाबाद, कानपुर, वाराणसी, लखनऊ, पटना, एवं कोलकाता जैसे 10 लाख से अधिक आबादी वाले शहर गंगा नदी के तट पर ही स्थित हैं। पर्यटन इस द्रोणी क्षेत्र की एक महत्त्वपूर्ण क्रिया है। आगरा में यमुना के किनारे स्थित ताजमहल, इलाहाबाद में गंगा एवं यमुना नदी का संगम, उत्तर प्रदेश एवं बिहार में बौद्ध स्तूप, लखनऊ का इमामबाड़ा, असम का काजीरंगा एवं मानस वन्य प्राणी अभयवन तथा अरुणाचल प्रदेश की विशिष्ट जनजातीय संस्कृति वाले क्षेत्र जैसे कई दर्शनीय स्थल हैं।

यातायात : इस क्षेत्र में कम ढाल होने के कारण रेल यातायात व सड़कों का सुविकसित तंत्र उपस्थित है। गंगा-ब्रह्मपुत्र नदी द्रोणी में जल यातायात के चार मार्ग भी सुविकसित हैं। नदी के तटीय क्षेत्रों में जलमार्ग यातायात का प्रभावशाली माध्यम है। कोलकाता हुगली नदी पर स्थित एक महत्त्वपूर्ण पत्तन है। मैदानी

क्षेत्र में कई बड़े हवाई पत्तन भी स्थित हैं।

गंगा नदी और प्रदूषण : गंगा नदी के तट पर स्थित शहरों से घरों तथा उद्योगों का गंदा व प्रदूषित जल बहकर नदी में ही जाता है जिससे नदी प्रदूषित होती है। इससे नदी में रहने वाले जीवों को भी नुकसान पहुंचता है। गंगा नदी के संरक्षण के लिए 'नमामी गंगे' कार्यक्रम को शुरू किया गया है।

अभ्यास

प्रश्न 1. गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन के मैदानी भागों में घनी जनसंख्या वाले अनेक नगर होने के क्या क्या कारण हो सकते हैं?

_____

_____

_____

प्रश्न 2. अगर आपको गंगा-ब्रह्मपुत्र बेसिन के किसी पर्यटन स्थल पर घूमने जाना हो तो आप कहाँ जाएँगे और यातायात के किस साधन द्वारा?

_____

_____

_____

प्रश्न 3. आपके शहर से होकर बहने वाली नदी का नाम बताइये। किसी नगर के लिए एक नदी का क्या महत्त्व हो सकता है?

_____

_____

_____

प्रश्न 4. गंगा नदी में प्रदूषण कम करने के लिए कुछ उपाय सुझाइए।

_____

_____

_____

प्रश्न 5. मिलान करें।

1.	वेदिका फार्म	क)	कोलकाता
2.	मैंग्रोव	ख)	मछली
3.	हिलसा	ग)	पर्वत
4.	काजीरंगा	घ)	डेल्टा क्षेत्र
5.	हुगली नदी	ङ)	वन्य प्राणी अभयवन

कार्यपत्रक -19

विद्यार्थी का नाम _____

रेगिस्तान में जीवन

अधिगम संप्राप्ति

विश्व के विभिन्न जलवायु प्रदेशों में रहने वाले लोगों के जीवन तथा भारत के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों के जीवन में अंतर्संबंध स्थापित करते हैं।

शिक्षक : प्यारे बच्चों, जैसा कि हम जानते हैं कि पेड़-पौधे, पशुओं एवं मनुष्यों के लिए जल ही जीवन है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि ऐसे स्थान जहाँ पीने के लिए और खेती के लिये जल न हो, मवेशियों को चरने के लिए घास न हो। ऐसे स्थान पर किसी भी जीव के लिए जीवन कितना कठिन होगा? आज हम एक गर्म रेगिस्तान सहारा के उदाहरण से ऐसे भौगोलिक (पृथ्वी की सतह का भाग) क्षेत्रों के जन-जीवन के बारे में जानेंगे। जहाँ लोग अत्यधिक कष्टकारी तापमान में भी जीना सीख चुके हैं।

चित्र 1: अफ्रीका महाद्वीप में सहारा

विद्यार्थी 1 : गुरुजी, ये रेगिस्तान किसे कहते हैं?

शिक्षक : मरुस्थल या रेगिस्तान ऐसे भौगोलिक क्षेत्रों को कहा जाता है, जहाँ जल की उपलब्धता अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा काफी कम होती है। यह एक शुष्क प्रदेश होता है जहाँ कम वर्षा, विरल वनस्पति एवं चरम तापमान (अत्यधिक उच्च अथवा निम्न तापमान) होते हैं।

विद्यार्थी 2 : गुरुजी, ये सहारा रेगिस्तान कहाँ है?

शिक्षक : यह अफ़्रीका महाद्वीप के उत्तरी भाग के बड़े भू-भाग पर फैला है।

रेगिस्तान है। यह लगभग 8.54 लाख वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। सहारा रेगिस्तान का विस्तार ग्यारह देशों में है। दिये हुए मानचित्र को देखकर इन देशों के नाम बताइये।

विद्यार्थी 1 : जी गुरुजी ये देश हैं-अल्जीरिया, चाड, मिस्र, लीबिया, माली, मौरितानिया, मोरक्को, नाइजर, सूडान, ट्यूनिशिया एवं पश्चिमी सहारा।

शिक्षक : रेगिस्तान के बारे में सोचते समय आपके मस्तिष्क में तुरंत ही रेत का दृश्य उभरता है। परंतु सहारा मरुस्थल बालू की विशाल परतों से ढँका हुआ ही नहीं वरन् वहाँ बजरी के मैदान और नग्न चट्टानी सतह वाले उत्थित (उठे हुए) पठार भी पाए जाते हैं। ये चट्टानी सतहें कुछ स्थानों पर 2500 मीटर से भी अधिक ऊँची हैं।

विद्यार्थी 2 : गुरुजी, आप ने एक बार बताया था कि हमारी पृथ्वी की करोड़ों वर्ष की आयु में कई परिवर्तन आऐ हैं। क्या सहारा हमेशा से ऐसा ही था?

शिक्षक : शायद नहीं, कुछ शोधों (अनुसंधान व खोज) से पता चला है कि आज का सहारा रेगिस्तान एक समय में खूब हरा-भरा मैदान था। सहारा की गुफ़ाओं से प्राप्त चित्रों से ज्ञात होता है कि यहाँ नदियाँ तथा उपजाऊ घास मैदान पाए जाते थे, जिनमें हाथी, शेर, जिराफ़, शतुरमुर्ग, भेड़ तथा बकरियाँ सामान्य जानवर थे। परंतु यहाँ के जलवायु परिवर्तन ने इसे बहुत गर्म व शुष्क प्रदेश में बदल दिया है।

विद्यार्थी 1 : गुरुजी, सहारा रेगिस्तान की जलवायु के बारे में कुछ बताइये।

शिक्षक : सहारा रेगिस्तान की जलवायु अत्यधिक गर्म एवं शुष्क (सूखी) है। यहाँ की वर्षा ऋतु अल्पकाल (कम समय) के लिए होती है। यहाँ आकाश बादल रहित एवं निर्मल होता है। यहाँ नमी संचय (संग्रह या इकठ्ठा) होने की अपेक्षा तेजी से वाष्पित हो जाती है। दिन अविश्वसनीय रूप से गर्म होते हैं। दिन के समय तापमान 50□ सेल्सियस से ऊपर पहुँच जाता है, जिससे रेत एवं नग्न चट्टानें अत्यधिक गर्म हो जाती हैं। इनके ताप का विकिरण (चारों ओर फैलने) होने से आसपास सब कुछ गर्म हो जाता है। रातें अत्यधिक ठंडी होती हैं तथा तापमान गिरकर हिमांक बिंदु (जल के जमने का तापमान) , लगभग 0° सेल्सियस तक पहुँच जाता है।

विद्यार्थी 2 : गुरुजी, जैसे कि यहाँ पर पानी की कमी है तो क्या यहाँ कुछ वनस्पति (पेड़-पौधे) पाई जाती है? अथवा नहीं?

शिक्षक : बच्चों इस चित्र को देखिये। यह एक मरूद्यान का चित्र है। सहारा रेगिस्तान में कुछ स्थानों पर थोड़ा जल किसी तालाब, सोते (झरने) के रूप में उपलब्ध होता है। रेगिस्तानी इलाको में काँटेदार झाड़ियाँ, बेर, नागफनी, खजूर के पेड़, बबूल एवं अकेसिया जैसे पेड़ पौधे पाए जाते हैं।

चित्र 2: सहारा रेगिस्तान में मरुधान

विद्यार्थी 2 : रेगिस्तान में ये मरूद्यान कैसे बनते हैं?

शिक्षक : रेगिस्तान में जब रेत को पवन उड़ा ले जाती है, तो वहाँ गर्त (खड्डा) बन जाती है। जहाँ गर्त में भूमिगत जल तालाब या सोते के रूप में सतह पर आ जाता है, वहाँ मरूद्यान बनते हैं। ये क्षेत्र उपजाऊ होते हैं, ऐसे स्थानों पर जल की उपलब्धता के कारण कृषि भी की जाती है और आसपास निवास भी करते हैं।

विद्यार्थी 1 : गुरुजी, सहारा रेगिस्तान में किस प्रकार के जीव-जंतु पाऐ जाते हैं?

शिक्षक : ऊँट, लकड़बग्घा, सियार, लोमड़ी, बिच्छू, साँपों की विभिन्न जातियाँ एवं छिपकलियाँ यहाँ के प्रमुख जीव-जंतु हैं।

विद्यार्थी 2 : गुरुजी, जिस प्रकार हम मौसम के हिसाब से कपड़े पहनते हैं। वहाँ के लोग किस प्रकार के कपड़े पहनते हैं?

शिक्षक : धूल भरी आँधियों एवं गर्म वायु से बचने के लिए वहाँ पर लोग पूरे शरीर को ढकते हुए भारी वस्त्र पहनते हैं।

विद्यार्थी 1 : वहाँ पर कौन लोग रहते हैं और वे किस प्रकार अपना जीवन यापन करते हैं?

शिक्षक : सहारा रेगिस्तान की कष्टकारी जलवायु में भी विभिन्न समुदायों जैसे बेदुईन एवं तुआरेग के लोग निवास करते हैं। चलवासी जनजाति वाले ये लोग बकरी, भेड़, ऊँट एवं घोड़े जैसे पशुधन को पालते हैं। इन पशुओं से इन लोगों को दूध, ऊन, चमड़ा मिलता है। पशुओं के बालों व ऊन का उपयोग चटाई, कालीन, कपड़े एवं कंबल बनाने के लिए होता है। सहारा में मरूद्यान एवं मिस्र में नील घाटी लोगों को निवास में मदद करती है। मिस्र को नील नदी घाटी का वरदान भी कहा जाता है। यहाँ की कपास व चावल पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।

विद्यार्थी 2 : गुरुजी, क्या अभी भी लोग पुराने तरीक़े से ही रहते हैं? या फिर जिस प्रकार विश्व के विभिन्न हिस्सों में लोगों के रहन सहन में बदलाव आ रहा है, क्या वहाँ भी कुछ बदलाव आया है?

शिक्षक : यहाँ खनिज (पेट्रोलियम) तेल मिलने से अल्जीरिया, लीबिया एवं मिस्र में तेज़ी से परिवर्तन हुआ है। तेल की माँग पूरे विश्व में है। इस क्षेत्र में प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण खनिजों में लोहा, फॉस्फोरस, मैंगनीज़ एवं यूरेनियम सम्मिलित हैं।

सहारा की सांस्कृतिक जीवनशैली में भी परिवर्तन आ रहा है। आज यहाँ ऊँचे भवन तथा ऊँटों के प्राचीन मार्ग के स्थान पर सुपर महामार्ग बन गए हैं। नमक के व्यापार में ऊँटों का स्थान ट्रक ले रहे हैं। तुआरेग लोग विदेशी पर्यटकों के लिए मार्गदर्शक का काम कर रहे हैं। आज यहाँ की चलवासी जनजाति के लोग स्थायी शहरी जीवन की ओर जा रहे हैं, जहाँ वे तेल एवं गैस के कार्यों में नौकरी ढूँढते हैं।

ऊपर दिये गए संवाद के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

अभ्यास

प्रश्न 1. रेगिस्तान में प्राय आबादी बहुत विरल पाई जाती है, इसके क्या कारण हो सकते हैं? लिखिये।

प्रश्न 2. सहारा रेगिस्तान की जलवायु का वर्णन कीजिये।

प्रश्न 3. कल्पना कीजिये और लिखिये कि अगर आप सहारा जैसे स्थान में रहते तो आपका जीवन कैसा होता।

प्रश्न 4 मरूद्यान मरुस्थल में किस प्रकार महत्वपूर्ण हैं?

प्रश्न 5 मिलान करिये।

1. मिस्र	क) जल के साथ गर्त
2. तुआरेग	ख) तेल
3. मरूद्यान	ग) गर्म रेगिस्तान
4. सहारा	घ) कपास
5. लीबिया	ङ) लवासी जनजाति

कार्यपत्रक -20

विद्यार्थी का नाम _____

रेगिस्तान में जीवन

अधिगम संप्राप्ति

बच्चे विश्व के विभिन्न जलवायु प्रदेशों में रहने वाले लोगों के जीवन तथा भारत के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों के जीवन में अंतर्संबंध स्थापित करते हैं।

प्यारे बच्चों, रेगिस्तान शब्द सुनते ही शायद आपके मन में केवल गर्म स्थान का ही चित्र उभरता होगा। रेगिस्तान केवल गर्म ही नहीं होते, ठंडे भी होते हैं। अब हम भारत में स्थित ऐसे ही एक ठंडे रेगिस्तान, लद्दाख के बारे में जानेंगे।

सोनू तथा मोनू अपने माता-पिता के साथ गर्मियों की छुट्टियों में हवाई जहाज द्वारा दिल्ली से लद्दाख घूमने गए। भ्रमण के दौरान स्थानीय मार्गदर्शक (गाईड) इकबाल तथा उनकी बातचीत के कुछ अंश...

इकबाल : आप सभी का केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख में स्वागत है।

सोनू : अंकल, हम तो लेह आये थे, इस जगह का नाम लद्दाख कैसे पड़ा?

इकबाल : लेह लद्दाख की ही राजधानी है। लद्दाख शब्द दो शब्दों से बना है- "ला" का अर्थ है-'पर्वतीय दर्रा' तथा "दाख" का अर्थ है-'देश'।

सोनू : इसका मतलब लद्दाख का अर्थ है - दर्रों का देश।

इकबाल : बिल्कुल सही कहा, बहुत सारे दर्रे होने के कारण इस जगह का नाम लद्दाख पड़ा। लद्दाख को खा-पा-चान भी कहते हैं जिसका अर्थ होता है हिमभूमि।

चित्र 1: लद्दाख

मोनू : अंकल, ये दर्रा क्या होता है?

इकबाल : पहाड़ों के बीच की जगह को दर्रा (दरार या संकरा रास्ता) कहा जाता है। इन प्राकृतिक मार्गों से होकर पहाड़ों को पार किया जाता है।

सोनू : अंकल, इसका मतलब है कि वायु मार्ग के अलावा स्थल (जमीन) मार्ग से भी यहाँ आया जा सकता है?

इकबाल : हाँ बेटा! बिल्कुल लद्दाख की राजधानी लेह, सड़क एवं वायुमार्ग द्वारा देश के बाकी हिस्सों से भलीभाँति जुड़ी हुई है। राष्ट्रीय राजमार्ग-1ए लेह को जोजीला दर्रा होते हुए कश्मीर घाटी से जोड़ता है। मनाली-लेह राजमार्ग चार दर्रों से गुजरता है - रोहतांग ला, बारालाचा ला, लुंगालाचा ला एवं टंगलंग ला। यह राजमार्ग केवल जुलाई से सितंबर के बीच खुलता है जब बर्फ़ को मार्ग से हटा दिया जाता है।

पापा : इकबाल भाई हमें आप कहाँ कहाँ घुमाने ले जाओगे? यहाँ के प्रमुख पर्यटक आकर्षण क्या हैं?

इकबाल : देश-विदेश से हजारों पर्यटक यहाँ आते हैं। गोंपा-दर्शन, घास के मैदानों व हिमनदों की सैर एवं उत्सवों तथा अनुष्ठानों को देखना यहाँ के प्रमुख पर्यटक आकर्षण हैं। लद्दाख क्षेत्र में अनेक बौद्ध मठ अपने परंपरागत 'गोंपा' के साथ स्थित हैं। कुछ प्रसिद्ध मठ हैं - हेमिस, थिकसे, शे एवं लामायुरू। आज हम सभी सिंधु महोत्सव देखने जाएँगे।

पापा : लद्दाख के आसपास क्या है?

इकबाल : इसके पश्चिम में केंद्रशासित प्रदेश जम्मू एवं कश्मीर है। इसके उत्तर में काराकोरम पर्वत श्रेणियाँ एवं दक्षिण में जास्कर पर्वत स्थित है। हमारे (भारत के) पड़ोसी देशों पाकिस्तान, चीन तथा तिब्बत से इसकी सीमाएँ लगती हैं। कुछ हिस्से पर तो पाकिस्तान और चीन का अनाधिकृत (अवैध या गैर कानूनी) कब्जा भी है, जहाँ झगड़े भी होते रहे हैं।

पापा : पड़ोसी देशों से तनाव के समय तो पर्यटन प्रभावित रहता होगा।

इकबाल : जी हाँ, युद्ध के समय और बर्फ गिरने के कारण सर्दियों में पर्यटन न के बराबर रहता है।

मम्मी : यहाँ जल का क्या स्रोत है?

इकबाल : यह हिमालय के वृष्टि-छाया (वर्षा में छाया वाला) क्षेत्र में स्थित है, इसलिए यहाँ वर्षा बहुत ही कम होती है, मुश्किल से 10 सेंटीमीटर प्रति वर्ष। लेकिन लद्दाख से होकर अनेक नदियाँ बहती हैं, जिनमें सिंधु नदी प्रमुख है। ये नदियाँ गहरी घाटियों एवं महाखड्ड (गॉर्ज) का निर्माण करती हैं। लद्दाख में अनेक हिमानियाँ हैं जैसे– गैंग्री हिमानी (बर्फ की नदी)।

मम्मी : क्या यहाँ हमेशा इतनी अधिक ठंड रहती है? अभी दिन में फिर भी ठीक है मगर जब हम रात में विमान से उतरे थे तो ठंड बहुत अधिक थी।

इकबाल : अधिक ऊँचाई के कारण यहाँ की जलवायु अत्यधिक शीतल एवं शुष्क (सूखी) होती है।

अनेक स्थानों पर ग्रीष्म ऋतु में दिन का तापमान 0□ सेल्सियस से कुछ ही अधिक होता है एवं रात में तापमान शून्य से–30□ सेल्सियस से नीचे चला जाता है। शीत ऋतु में यह बर्फ़ीला ठंडा हो जाता है, तापमान लगभग हर समय–40□ सेल्सियस से नीचे ही रहता है।

मोनू : अंकल, यहाँ पर कौन-कौन से पशु-पक्षी पाऐ जाते हैं?

इकबाल : लद्दाख में पक्षियों की विभिन्न प्रजातियाँ नजर आती हैं। इनमें रॉबिन, रेडस्टार्ट, तिब्बती स्नोकॉक, रैवेन एवं हूप यहाँ पाए जाने वाले सामान्य पक्षी हैं। इनमें से कुछ प्रवासी पक्षी हैं। लद्दाख के पशुओं में जंगली बकरी, जंगली भेड़, याक एवं विशेष प्रकार के कुत्ते आदि पाए जाते हैं। इन पशुओं को दूध, माँस, बाल, ऊन एवं खाल प्राप्त करने के लिए पाला जाता है। याक के दूध का उपयोग पनीर एवं मक्खन बनाने के लिए होता है। भेड़ एवं बकरी के बालों का उपयोग ऊनी वस्त्र बनाने के लिए किया जाता है।

सोनू : अंकल, यहाँ की वनस्पति (पेड़-पौधों) के बारे में भी कुछ बताऐं।

इकबाल : यहाँ उच्च शुष्कता के कारण वनस्पति विरल (कम) है। यहाँ जानवरों के चरने के लिए कहीं-कहीं पर ही घास एवं छोटी झाड़ियाँ मिलती हैं। घाटी में शरपत (विलो) एवं पॉप्लर के उपवन देखे जा सकते हैं। ग्रीष्म ऋतु में सेब, खुबानी एवं अखरोट जैसे पेड़ खूब फलते हैं। क्रिकेट का सबसे अच्छा बल्ला शरपत (विलो) पेड़ की लकड़ी से ही बनाया जाता है।

पापा : यहाँ के लोगों के धर्म, कामकाज आदि के बारे में कुछ बताइये।

इकबाल : यहाँ के अधिकांश लोग या तो मुसलमान हैं या बौद्ध। ग्रीष्म ऋतु में यहाँ के निवासी जौ, आलू, मटर, सेम एवं शलजम की खेती करते हैं। शीत ऋतु में जलवायु इतनी कठोर व विषम होती है कि लोग धार्मिक अनुष्ठानों एवं उत्सवों में अपने आपको व्यस्त रखते हैं। यहाँ की महिलाएँ अत्यधिक परिश्रमी होती हैं। वे केवल घर एवं खेतों में ही काम नहीं करती बल्कि छोटे व्यवसाय एवं दुकानें भी संभालती हैं। वैसे आजकल यहाँ का मुख्य क्रियाकलाप पर्यटन है। आधुनिकीकरण के फलस्वरूप यहाँ के जनजीवन में भारी परिवर्तन आ रहा है। लेकिन लद्दाख के लोगों ने शताब्दियों से प्रकृति के साथ समन्वय (मेलजोल) एवं संतुलन करना सीखा है। जल एवं ईंधन जैसे संसाधनों की कमी के कारण ये आवश्यकतानुसार एवं मितव्ययिता से ही इनका उपयोग करते हैं और कुछ भी व्यर्थ नहीं करते।

अभ्यास

प्रश्न 1. लद्दाख में पहुँचने के कौन कौन से साधन और मार्ग हैं?

प्रश्न 2. लद्दाख में कम वर्षा होने के क्या कारण हैं?

प्रश्न 3. कल्पना करिये और लिखिये कि अगर आप लद्दाख में रहते तो आपका अपने लिए कौन सा रोजगार चुनते और क्यों?

प्रश्न 4. लद्दाख के लोगों के जीवन को वहाँ की जलवायु ने किस प्रकार प्रभावित किया है?

प्रश्न 5. सही उत्तर पर निशान लगाइये।

1. लद्दाख के रेगिस्तान में कौन सा जानवर नहीं पाया जाता है।
   क) याक ☐ ख) ऊँट ☐ ग) जंगली भेड़ ☐ घ) जंगली बकरी ☐
2. लद्दाख से होकर कौन सी नदी बहती है?
   क) सिंधु ☐ ख) गंगा ☐ ग) यमुना ☐ घ) ब्रह्मपुत्र ☐
3. लद्दाख के प्रसिद्ध बौद्ध मठ हैं...
   क) हेमिस ☐ ख) थिकसे ☐ ग) लामायुरू ☐ घ) ये सभी ☐

आई.एस.बी.एन. : 978-93-93667-09-0

समग्र शिक्षा

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

वरुण मार्ग, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024